भरि मन काज

भरि मन काज

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

BHRI MAN KAJ
Collection of Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-93135-30-8
दाम: 250/- (भा.रू.)

दोसर संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2022)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण चित्र: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

कथाक सत्तैर

परिवारक भार

कािल्ह धरि अपने ई भ्रम लगले छल जे परिवार हमरेपर टिकल अछि, माने निर्भर अछि तँए जँ कहीं मोटरे साइकिल वा कोनो आने दुर्घटना हएत तँ अपना संग परिवारेक मृत्यु भऽ जाएत। जइसँ अपन जीवनक आकांक्षाक संग परिवारक आकांक्षा सेहो मटियामेट भऽ जाएत। आकांक्षा तँ सभकेँ अछिए। बेकतीगत रूपमे जहिना नीक मनुक्खक आकांक्षा रहैए तहिना नीक परिवार, नीक समाज आ नीक देशक आकांक्षा सेहो रहिते अछि।

मासक दू पक्ष जकाँ माने अन्हरिया-इजोरिया एक पक्ष जरूर भेल, मुदा ई धियानमे रहबे ने कएल जे बेकतीगत रूपमे सेहो आ पारिवारिक सामाजिक रूपमे सेहो, दोसरो पक्ष अछिए जे नीक वृत्तिक जगह जखन अधला वृत्ति दखल करैए तखन मानवीयताक मृत्यु सेहो होइते अछि, भलेँ जइ शरीर रूपकेँ अप्पन बुझै छी, तइ रूपमे नइ भेल हुअए। ओना, बेकतीगत रूपमे एक रूप आ पारिवारिक-सामाजिक रूपमे दोसर रूप किए ने हुअए।

बेकतीगत तौरपर जे शारीरिक-मानसिक रूप अछि तइसँ भिन्न पारिवारिक-सामाजिक तौरपर अछि। जहिना परिवारमे विधि-विधानक सृजन आ विघटन होइए तहिना सामाजिक रूपमे सेहो अछिए। मोटा-मोटी यएह ने मानब जे परिवारमे एक बेकतीक मृत्युसँ परिवार नहि उजरैए तहिना एक बेकती वा एक परिवारकेँ उजरलासँ समाज सेहो नहियेँ

उजरैए। देशक तँ विशाल रूप अछि तँए एहेन घटना दिन-राति चलैत रहैए।

अखन धरि मनमे ईहो भ्रम छले माने रहबे करए, जे परिवारक सोल्होअना भार अपने ऊपरमे अछि, तँए कहियोकाल जँ परिवारजनसँ कोनो कारणेँ मुहाँ-ठुट्ठी होइ छल तँ तरैङ्ग कऽ कहिते छेलिऐ जे एहेन परिवारसँ चलिये जाइ सएह नीक। भने सिपाहीएमे भर्ती भऽ देशक सीमापर शहीद होइत जीवनक सार्थकताकेँ प्राप्त कऽ लेब। अनेरे कोन माया-जालमे पड़ल छी जे दिन-राति कौल्हुक बरद जकाँ खटैत रहू आ गति-मुक्तिक कोनो आशे नहि। ई बुझिये ने पेब रहल छेलौं जे जहिना अपन जीवन सघन वन जकाँ अछि तहिना परिवारो आ समाजोक जीवन अछि। अपन जीवनमे लोक मनवासी भेला आ परिवारसँ समाज धरिक जीवनमे वनवासी भेला। बुझिये ने पेब रहल छेलौं जे सीमाक रक्षके टा देशभक्त नहि भेला, खेत-खरिहान, कल-कारखानाक श्रमिक सेहो देशभक्त छथिए। ई दीगर जे अखनो ओहन समाज-सेवक वा देश-भक्त छथिए जे पैघ-सँ-पैघ चोट सहैत समाजक सेवा कऽ रहला अछि। जँ से नहि छैथ तँ अस्सी बर्खक ओहन साहित्यसेवी दर्शन, विज्ञान (विविध ज्ञान) तत्त्वसेवी, उच्च कोटिक सर्जक अपन शारीरिक जीवनकेँ कीड़ी-मकौड़ीक खाएल कोनो लत्तीनुमा गाछक पातकेँ जहिना जाल जकाँ छेदने रहैए, तेहेन जीवन धारण केनिहार महारथी महापुरुष जखन सेवाक फल पुरस्कारक रूपमे देखै छैथ तखन की ई नहि देखै छैथ जे पनरह-बीस बर्खक बाल-किशोर खेलाड़ी[1] अस्सी बर्खक साधककेँ फुटवॉल जकाँ धरतीपर नहि ओंघरबै छैन, सेहो बात नहियेँ अछि। यएह तँ खेल छी, सत्ता, सिपाही आ समाजसेवीक। जाति-सम्प्रदायसँ जुड़ल समाजमे जखन देखै छी जे करखनो एक सम्प्रदाय टुटि दोसरमे सटैए आ दोसर

[1] **खेलसँ जुड़ल**

एहनो तँ अछिए जे एक्केमे सँ टुटि दू टुकड़ी, तीन टुकड़ी सेहो भइये जाइए। पानिमे खेलेनिहार खेलाड़ी जहिना उग्गा-डुम्मा खेल पकड़ेला पछातियो हरदा बजैले तैयारे नहि होइए जे हारि जाएब, तहिना जाति-जातिक बीच सेहो अछिए। ओना, एक्को जातिक बीच अनेको श्रेणीक जाति सटल अछि आ अपन-अपन बान्ह-सीमा तेना सभकेँ लागल छै जे कोसी कमलाक बाढ़ि आ बंगालक खाड़ीक समुद्री जुआइर जकाँ सिरचढ़ अछि। लोक अपन भागे-कर्मे जीबह वा मरह।

आजुक वैज्ञानिक युगमे, जैठाम उद्योग-धंधा अकास छुबि रहल अछि तैठाम भारत सनक देश, जैठाम राष्ट्रपतिसँ साधारण सेवक धरि किसान परिवारसँ जुड़ल परिवार मानि अपनाकेँ गौरवान्वित होइ छैथ, तैठाम किसानक की स्थिति अछि? अस्सी प्रतिशत किसानक देश भारत, कारखानाक खादक अभावमे, किसानी जीवने मरि जाए, ई केते उचित अछि?

प्रश्न अछि, स्वावलम्बनसँ सभक जीवन गतिशील रहए। अखन तक बेकतीगत रूपमे केते स्वावलम्बी भेलौं अछि आ पारिवारिक-सामाजिक रूपमे केते स्वावलम्बी भेलौं अछि ओ तँ हमहीं अहाँ ने विचारिकऽ देखब। अपन परिवारक भार अपने ऊपर अछि, तँए कखनो काल जखन खुशीक जुआइर मनमे उठैए तखन ईहो तँ उठिते अछि जे दिल्ली सरकारसँ, माने केन्द्र सरकारसँ बेसीए भार अपना ऊपरमे अछि। सात गोरेक परिवारमे सातो गोरेक भोजन, वस्त्र, रहैक घर, पढ़ैक बेवस्था आ बर-बेमारीमे चिकित्साक भार सेहो अपने ऊपर ने अछि। जैठाम, माने जइ देशमे सबा अरब लोक अछि, जे दुनियाँक आवादीक पनरह-बीस प्रतिशत हेबे करत, ओ देश दुनियाँक धरतीसँ अकास धरि पनरह-बीस प्रतिशतक हिस्सेदार भेबे कएल किने।

भेल तँ एतबे ने जे करवनो बामी माछ पकैड़ तँ करवनो दहिनी माछ पकैड़ खेल-कूद चलबैक अछि। ओना, देखै छी जे कहियोकाल माने

खेल-कूदमे छोटको देश बड़का देशकेँ हेरा दइए, जइसँ देश भरिक लोक जीतक डगर पीटते अछि, तइसँ कि ओ देश ओइसँ ऊपर उठि गेल? नहि! ऊपर उठैक पाछू उठल जिनगीक धारणाक संकल्प मनमे ठानए पड़त। जँ से नहि ठानब तँ कखनो साम्प्रदायिक हवा पसैर पसाही लगौत तँ कखनो जातीय उन्माद। तहिना, कखनो धर्मक परिभाषा बदलत तँ कखनो जाइतिक। कारण अनेको अछि मुदा समाधानो तँ अपने करए पड़त। देखिते छी जे काल्हि धरि बेटा-बिआहमे दान-दहेज पापक श्रेणीमे मानल जाइ छल जइसँ कर्ताक मुँह समाजमे लज्जित भऽ खसै छल, मुदा आजुक ओहन परिवेश बनि गेल अछि जे जइ परिवारमे जेतेक बेसी दान-दहेज औत, ओ परिवार तेतेक इज्जतदार मानल जाइत अछि। ऐठाम एकटा प्रश्न आरो अछि। प्रश्न अछि जे बेटाक प्रति लेल नगदक सम्बन्धमे जखन बेटा-पुतोहु एकठाम बैस अपन माता-पिताक परिवारक चर्च करैथ तँ की पुतोहु ऐ सँ नासकार जेती जे आजुक किसान परिवारमे बेटीक जन्म लेबे पैछला जन्मक कर्मक चूक छी। माने ई जे आजुक किसानक जे स्थिति भऽ गेलैन अछि, जे ने अपन परिवारक बच्चाकेँ नीक विद्यालयमे शिक्षा दिया सकै छैथ आ ने बिमारीमे नीक इलाज करा सकै छैथ। जखन किसानक देश अपन, किसानी जीवन अपन आ अपन-अपन अपनैती सभकेँ अप्पन, तखन अपन अपनैती अपने ने अपनाबए पड़त।

विषम परिस्थितिमे समाज बन्हाएले अछि। माने ई जे एक्के गाम-समाजमे एक गोरेकेँ ढेर सम्पैत छैन आ दोसर गोरे लल्ल-बेलल्ल छैथ। समाजमे जहिना कहबी छै जे अपन मनक मौजी, बौहकेँ कहलौं भौजी। तहिना जँ सभक मन जखन अपने-अपने मोटाएल रहत तखन नीक-अधलाक विचार के करत? देखिते छी जे घूसखोरीक बाजारक टेम्प्रेचर केतेक हाइ अछि, मुदा जखन 'घूस' शब्दक जगह 'उपहार' शब्द लऽ लइए तखन घूस शब्दक स्वरूपेटा बदलैए आकि गाम-समाजमे पसरल गुण-अवगुणक संग नीक-अधला वृत्तो। ओना, अधला वृत्ति पसरैक अनेको

रंगक कारण, दैवीयसँ मानवीय धरि पसरले अछि। जखन कोनो तीर्थ स्थान जाइ छी, दर्शनक बेरमे जे जेते बेसी दैछना-दान केलक ओ ओते असानीसँ दर्शन पेब गेल आ जे 'दुरयोधन घर मेवा तियागे साग विदुर घर खाये' भजन करैए, ओकरा बिनु दर्शन केनहि सातो दिन आएब-जाएब लगले रहै छइ।

कािल्हसँ पहिने धरि ई बात बुझबे ने करै छेलौं जे पाँच गोरेक परिवार हुअ आकि सात गोरेक, अखन हम कोनो ऋषि-मुनिक चर्च नहि करै छी, जे परिवारक डरसँ असगरेक परिवार बना जंगलवास करै छला, जखन परिवारजनक गणना करब तँ परिवारमे वएह सभ ने भेटता जे बाबा-दादी, माता-पिता आ बाल-बच्चाक संग दुनू परानी अपने छैथ। ओना, परिवारक गढ़ैनमे अनेको दिशा समयानुकूल बनिते अछि, तँए ओइ दिशामे अखन नहि जाएब। अखन अपना सभ अपन जीवन-गाथा सुनैले एकठाम भेल छी, तखन अनेरे रजनी-सजनीक खिस्सामे की लागब। मुदा जे कृष्ण महाभारत रचलैन तइ कृष्णक गुरु दुर्वासा बाबा जखन जीबै छैथ, तखन हुनको छोड़ब नीक नहियेँ हएत। तँए हुनको संग कऽ लिअ।

परिवारक अनेको रंगक ढाँचा गाम-समाजमे अछिए। कोनो परिवारमे बाबा-दादी, माता-पिता आ अपने दुनू परानी मिलाकऽ छअ गोरे भेलौं, तैबीच जँ एकटा बच्चा रहल, तइ परिवारक भरण-पोषण आ जइ परिवारमे बाबा-दादीमे सँ एक आ माता-पिताक संग दू आकि तीन बच्चा रहल, तइ परिवारक जीवन-यात्रा कठिन हेबे करत किने? एकरा एना बुझियौ, साइठ-सत्तैर, अस्सी बर्खक बाबा आ दादी भेली, चालीस-पचास वा पचपन बर्खक माता-पिता भेला, अपने दुनू परानी पचीस-तीस बर्खक भेलौं, पाँच-दस बर्खक बच्चा भेल। वृद्ध आ बच्चा, प्रकृतिक संग सही ढंगसँ मुकाबला करैक शक्ति नइ रखै छैथ, रोग ग्रस्त बेसी होइते

छैथ। आजुक परिवेशक चर्च नहि करब जे ब्लड-प्रेशर, डायवीटीज आ डिप्रेशन सरदी-खोंखी जकाँ बेमारी भऽ गेल अछि जे पानि गरम करि कऽ पीब लिअ छुटि जाएत। ओना, जुड़ए तँ मरीच आ नून-पानि दऽ देबै नहि तँ सेहो नइ जुड़ए तँ तेकरो छोड़ि, छुच्छे पानि पीब लेने रोग डरे परा जाइए। भलेँ ओकरा अंगरेजीक पैघ नाम, माने दवाइक नाम, नहि दिअए मुदा 'नून-पनिया' नहि कहबै से उचित हएत? आजुक ओहन परिवेश बनि गेल अछि जइमे सभ परिवारमे बेमारीक दवाइक खर्च, परिवारक अनिवार्य खर्चक श्रेणीमे आबि गेल अछि।

बाबासँ पोता-पोती धरिक जीवन जइ परिवारमे अछि, ओइ परिवारक खर्च केते विशाल भेल। हँ, एहनो परिवार सभ अछिए जइमे वृद्धक नामपर माता-पिता आ बच्चाक नामपर अपने रहलौं। तहिना एहनो परिवार सेहो अछिए जइमे तीन पीढ़ी छी। समाजमे अनेको रंगक परिवारक गठन अछि। खाएर जे अछि, अपना तइ सभसँ कोन मतलब।

पिताक मृत्यु भेने परिवारक मुँहपुरुख गारजन बनैमे किछु करए नहि पड़ल। एकर माने ई नहि बुझब जे अपने पुरुखाह छी। ओना, सबहक मनमे लिलसा रहिते अछि जे घरक गारजनी हाथमे कहिया औत। भाय, मनुक्खक जीवनमे शासन करैक संस्कार, आइये नहि, एकरा जन्मजाते कहियौ, सभ दिनसँ मनुक्खमे रहल अछि। दोसर शब्दमे एकरा मनुक्खक स्वभावगत गुण सेहो कहि सकै छिऐ। अपनो मनमे नइ रहए सेहो बात नहियेँ अछि। अपन परिवारक गठन एना अछि। अपने दुनू परानी छी, माता-पिता आ बाबा छैथ, तैसंग दूटा छोट-छोट बच्चो अछि। जे अखन स्कूल जाइ-जोकर नइ भेल हेन। बाबाक विचार अखनो पिताजी मानि चलै छैथ आ अपने दुनूक विचार, माने माइयो पिता आ बाबोक विचारसँ चलै छी, तँए ब्लौकक हाकिम बी.डी.ओ. साहैब जकाँ अपने हकिमानियो करै छी आ अपनो हकिमानीक अन्तर्गत छीहे। सभकेँ

एहेन अधिकार छैन्हे जे अपनो अनकासँ सीखू आ अपनो आनकेँ सिखाउ। ई तँ सम्बन्ध-सूत्र छी, सभ दिनसँ होइत आबि रहल अछि आ आगूओ चलैत रहत। तखन कहब जे गड़बड़ की भऽ जाइए? गड़बड़ होइक अनेको कारण अछि मुदा ऐठाम दूटा कारणक चर्च जरूर करब। पहिल, जेठाम मात्र शब्दक खेल माने शाब्दिक बेवहार रहत तैठाम आ जैठाम क्रियागत बेवहार रहत तैठामक बोधमे अन्तर आबिये जाइए। कहब से केना? चाह बना कऽ पीबाक अछि। चाह-चीनी, पानि-दूधक चाह बनैए। गप-सप्पमे कहिते छिऐ जे चाह-चीनी आ पानिक संग दूधक संयोगसँ चाह बनैए। मुदा बीचमे जे चाह बनबैक प्रक्रिया अछि तेकर बोध थोड़े होइए। लोके छी, तहूमे बिनु लूरिक, चाह बनबै काल जँ पहिने चाहे-पत्ती दऽ देबइ, एकर माने ई नहि बुझब जे चारि वस्तुक बनल चाहमे चाहेटाक मुँहपुरुखी किए अछि, आन-आन वस्तुक किए ने छै, तखन ओ जरि कऽ अपन अस्तित्वे समाप्त कऽ लेत आकि अहाँक मनक भूख मेटौत?

चाह बनबैक प्रक्रिया अछि, ओइ प्रक्रियाक पछाइत चाह, चाह बनैए। मने प्रकृतिसँ उपजल गाछक पात चाह पेय विन्यास तखन बनैए जखन ओ जीवनक प्रक्रियासँ गुजैर जीवन पबैए। एकर माने ई नहि बुझब जे डॉक्टर साहैब ओहिना डॉक्टर बनि गेला आकि अपन डॉक्टरी प्राप्त करैक प्रक्रियाकेँ पूर्ति केलाक पछाइत बनला। बुझले अछि जे दुनियाँमे सात अरब मनुक्ख अछि, सातो अरब डॉक्टरे किए ने छैथ। जीवनक जे प्रक्रिया अछि, ओइ प्रक्रियाकेँ जीवनधारण करैक अनेको विधा अछिए, तँए जीवन यात्रा अपन-अपन विधियानुकूल सृजन करैक प्रक्रिया अछि। ओइ प्रक्रियाकेँ पकैड़ चलला पछातिये जीवनक प्राप्ति होइए। एकर माने ई नहि जे, ओना शाब्दिक रूपमे अखनो अछि मुदा बेवहारिक रूपमे देशक आजादी लेबामे जेते लोकक माने देशक अधिकार

प्राप्त करैक जिज्ञासा छल, जइसँ कोनो-ने-कोनो रूपमे सेवाक भावना छेलैन्हे, तँए देश-सेवाक जे बेवहारिक रूप छल, ओ आइ बदैल छेहा वेपारी रूप पकैड़ लेलक अछि। जेकरामे दिनू-दिनूक भावना प्रवल अछि वएह ने श्रेष्ठ सेवक भेला। लिनू-दिनू वा लिनू-लिनूक भावना घुनाह भऽ गेल अछि। माने घून जहिना लकड़ीकेँ खा जाइए। खाएर तइसँ अपना कोन मतलब अछि। मतलब अछि, अपने जे सात गोरे भेलौं मात्र तइसँ, माने बाबा, माता-पिता आ अपने दुनू परानीक संग दूटा बच्चासँ।

अपने अपन जीवनक रास्ता निहारिये रहल छेलौं कि रामबेकल काका उत्तरसँ दच्छिन मुहेँ अबैत सोझामे पड़ला। सोझामे पड़िते चेहराक एहेन रंग देखलयैन जेना जीवन-ले बेकल भऽ गेल होइथ। एकर माने ई नहि बुझब जे रामबेकल काका बेटा-भातीजक संग पोता-सभकेँ नहि कहै छथिन जे राम नाम सत्य छी, मुदा रामकर्म (राम वनवास) अहूसँ बेसी सत्य छी, जँ से नहि छी तँ रामवन भेल की? मुदा अखन से नहि। अखन एतबे जे रामबेकल काकाकेँ आगूमे देखि बजलौं-

“काका, गोड़ लगै छी।”

बेकल मन रामबेकल कक्काक रहबे करैन, खिसिया कऽ असीरवाद दैत बजला- “हमरा अनेरे गोड़-तोड़ नहि लागह। हमर आत्मा जरि रहल अछि।”

‘आत्मा जरि रहल अछि’ सुनि मनमे जिज्ञासा भेल। कहलयैन-

“काका, अनेरे अहाँ मनकेँ बेकल किए केने छी?”

रामबेकल काका बजला-

“बौआ सुधांशु, तोरा छोड़ि केकरो ने कहबै। हमर आत्माक हनन भऽ रहल छह, देखिते छहक जे एक्के मुहेँ की सभ निकलैए।”

अपने तेना भऽ कऽ नइ अकानने छेलौं, तँए नीक जकाँ बुझि नहि पेब रहल छेलौं। अकानबक माने भेल, नीक जकाँ कोनो घटना वा

शब्दक तत्त्वकेँ बुझब। से अपने कहियो अकानबे नहि केलौं, तँए सोल्होअना तँ नहि मुदा दसअना अनाड़ी छीहे। अपना मनमे ईहो हुअए जे एक तँ ओहिना रामबेकल काका ओहन बेकल भइये गेल छैथ जे रामायणकेँ तीरपेखैन कइये नेने छैथ, मुदा राम आ सीता मनुक्ख छैथ आकि व्रह्ममय आत्मा, तइ बुझैमे जहिना भोतिया जाइ छैथ तहिना रामबेकल काका अपन परिवारक बीच भोतिया गेला अछि। बुझिये ने पेब रहला अछि जे रामक बिआहक बरियातीक एकछोर जनकपुरक धरतीपर पहुँच गेल छला आ दोसर छोड़ अयोध्यासँ निकैल-निकैल तैयारे होइत रहैथ। तइ पाछू केतेक बाँकी छला से बेहिसाब छल। जैठाम माने जइ समाजमे बरियातीक एहेन भाव चित्र बनि भावलोककेँ घेरने अछि, तैठाम बरियातीक नियंत्रण खेल नइ ने छी। परिवेशक खेल चलिये रहल अछि, जैठाम पिता-पुत्रक बीच गप-सप्प भेना महीनो भऽ जाइए तैठाम बिआहक बरियातीमे गाड़ीक[2] संख्या ओते भऽ जाइए जे गाममे राखब कठिन भऽ जाइए। यएह तँ भेल उचित-उनुचितक बेवहार चित्र.! खाएर जे अछि तइसँ अपना कोन मतलब आकि रामबेकले काकाकेँ कोन मतलब छैन। मतलब छैन अपन परिवार ओहन केना बनत जइमे शान्तिसँ रहि सकी। जहिना तमसाएल (क्रोधी) लोकक विचारकेँ शान्त लोक अपन कानकेँ बहीर बना, सुनैले, तमसाएलक तामस सुनैले, मन मारि तैयार भऽ जाइ छैथ तहिना मन मारि बजलौं-

"काका, अपने किछु भेलिऐ, तइयो एक सीढ़ी ऊपर भेलिऐ, तँए अपनेक विचारकेँ मानियेँ कऽ चलब ने नीक हएत।"

अपना मुहसँ आरो विचार निकैलिये रहल छल कि रामबेकल कक्काक मनमे एकाएक जेना जेठुआ बिहड़िया बरखा जकाँ चैनक फुहार खसलैन। बजला-

---

[2] **इंजीन चालित**

"बौआ सुधांशु, ठीके तुलसी बाबा कहने छैथ, गृह कारज नाना जंजाला।"

अपन मनक वेगमे आकि रामबेकल कक्काक मुहसँ निकलल तुलसी बाबाक पाँति सुनि मन वौड़ा गेल आ वौड़ाइत मने अपने बजाइयो गेल-

"काका, तुलसी बाबाक मुँहक बातकेँ एना बुझए पड़त जे समाजकेँ ओ चाइलेंज स्वरूप कहै छेलखिन जे परिवारबलाकेँ माने परिवाररूपी मायाबलाकेँ ने डर हेतै, हमरा किए डर हएत। जखन बेटा-बेटी अछिए नहि तखन समाजसँ डर किए करब।"

तुलसी बाबाक विचार सुनि रामबेकल काका बजला- "सुधांशु, जखन परिवारे नहि तखन परिवारक नीक-बेजाए बुझियो केना सकै छी।"

टोकारा दैत बजलौं-

"से तँ नहियेँ बुझि सकै छी। बस-ट्रकक चक्का जकाँ जँ पहाड़पर चढ़ैबला किरानक चक्का रहत तखन ओ चढ़ि केना सकैए। पहाड़पर चढ़ैले लोहाक चेनदार चक्का ने चाही। तइले ते मनुक्खकेँ अपने ने ओहन चेनदार बनए पड़त।"

जेना कोनो बिसरलाहा विचार रामबेकल कक्काक मनमे जगलैन तहिना बजला-

"सुधांशु, जहिना खेत-पथारक खतियान होइए, जे ओकर अधिकारक पत्र छी।"

'अधिकार पत्र' सुनि अपने मने-मन विचारिते रही कि रामबेकल काका पुन: बजला- "सुधांशु, एक-एक बेकतीकेँ जाबे खतियाएल नहि जाएत, ताबे बिनु खत्तीक जीवन-निर्धारित केना हएत।"

ओना, धरमागती पूछी तँ रामबेकल कक्काक विचार नहि बुझि

पेलौं, मुदा जे रूप रामबेकल कक्काक चेहराक बनि गेल छैन, तइ देखि मन विचार देलक जे किए ने रामबेकल काकाकें परिवारक प्रति जे मनमे भरोस छैन से निकालि लैथ। तँए, कहलयैन-

"से तँ नहियेँ हएत।"



शब्द संख्या : 2402, तिथि : 28 मार्च 2022

हीन-हीनाइत विवेक

बालबोधेसँ विवेक भाइक मन मानि गेल छेलैन जे जहिना जन्मौटी बच्चाक शरीर धरतीपर धीरे-धीरे ऊँचाइ दिस चढ़ए लगैए तहिना वृद्धावस्थाक आगमन जेना-जेना होइत जाइए तेना-तेना शरीर हीन-हीनाइत हीनतर हुअ लगैए। जइसँ शरीरक अंग-प्रत्यंग निष्क्रिय हुअ लगैए तँए जीवन-यापनक लेल दोसरक खगता होइते अछि। जँ से नहि हएत तँ शरीरक संग मनोक दुरगति हेबे करत। जँ मनक दुरगति भेल तँ जीवनमे रहिये कि गेल आ कोन लोभे जीविये रहल छी। भेल तँ यएह ने जे बिनु विचारक जीवनकेँ देह लगा मारि रहल छी। तँए, जहिना बिनु सहाराक बच्चाकेँ उठिकऽ ठाढ़ हएब असम्भव तँ नहि मुदा कठिन तँ अछिए, तहिना वृद्धक विचारकेँ माने विवेककेँ, जीवित रहब असम्भव तँ नहि मुदा कठिन नहि अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। विवेक आ विचार तँ प्रवाहित होइत धार स्वरूप गतिमान अछि तँए समयक गतिये ओ चलिते रहत, मुदा मनक गति बाधित भेने विचारगत रूपमे मनुक्खक मृत्यु तँ होइते अछि। माने ई जे कोनो नीक वा अधला विचारक जीवन तखने तक जीवित रहैए जखन तक मनुक्ख सीढ़ीनुमा बनि प्रवाहित होइत रहैए।

बच्चा आ वृद्धक विचारकेँ विवेक भाय जीवनक अमूल्य तत्त्व बुझि अंगीकार केलैन जे जँ मनुक्खक जीवन पेलौं तँ निमरजनो करबे करब। पाँच तत्त्वक बनल जखन ई काया अछि तखन मायामे फँसि जीवनकेँ

अकारथ बना ली, ओ कोनो दृष्टिये नीक नहियेँ कहौत। बजैक क्रममे सभ बजिते छैथ जे साए लाखमे, माने एक करोड़मे, एक कम देवी-देवता छैथ जे उनीकुट्टी[3]मे समुद्र कातक इलाकाक पहाड़मे बास करै छैथ, तखन बीत भरिक पेट आ क्षणभंगुर जीवन-ले लोक किए पगला जाइए, कहू जे ई केहेन भेल? तैसंग ई की फुसि छी जे जखन दू तत्त्वसँ लऽ कऽ पाँच तत्त्वक बीच बनल देहधारी जीवकेँ अपन-अपन जीबैक लूरि अछिए, तखन अनेरे देहक चिन्ता करब व्यर्थे भेल किने। भाय, मनुक्खक कोन बात जे चिड़ैयो-चुनमुनी जखन मिथिलामे वेद-पाठ करैए, कागभुसुण्डि सन कौआ, भगवान रामक संग क्रीड़ा करैए तखन मनुक्ख तँ सहजे मनुक्ख भेला। जिनकर सन्तान, माने दशरथक, राम स्वयं छैथ तिनकर सखाक कोन चर्च। ऐठाम ई नहि बुझब जे श्रृंगी ऋषिक पायसक[4] सृजन राम छैथ, ऐठाम एतबे बुझब जे दशरथ आ कौशल्याक सन्तान राम छला। हम ई नहि कहए चाहै छी जे समूहक संग चलबो आ सेवो केना राम बनैए। ऐठाम एतबे कहए चाहै छी जे समाजमे जे भ्रम (अन्धविश्वास) पसारल जाइए जे धरतीपर जेतेक जीब छी, सभ समान छी। भ्रम पसारनिहारकेँ जीवक-जीवनक तात्त्विक विश्लेषण करए पड़तैन।

एक तत्त्वसँ बनल, दू तत्त्वसँ बनल माने सृजित, तीन तत्त्वसँ बनल, चारि तत्त्वसँ बनल आ पाँच तत्त्वसँ बनल मनुक्खमे दूरी अछिए। तँए सभकेँ एक जीव मानब केतेक उचित हएत? तत्त्वसँ बनल जे प्रकृतिक पहिल सृजन छी, ओहो नकारल नहियेँ जाएत, मुदा मनुक्ख जकाँ ओकरा चेतन शक्ति थोड़े छै जे ओ आनन्दित हएत। आनन्दित तँ मनुक्खेटा भऽ सकै छैथ। ओना, मनुक्खक बीच सेहो चौदह भुवन अछिए। जइमे सात

---

[3] **त्रिपुराक एक स्थान**

[4] **खीरक**

ओहन अछि जे मनुक्खक जीवनक ऊपरका सीढ़ी छी आ सात सीढ़ी निच्चोँ अछिए। मुदा ओ अखन नहि, अखन एतबे जे विवेक भाय जखन बच्चे रहैथ तखने हुनका मनमे बैस गेलैन जे अपना जीबैत बाबा-दादीकेँ एहेन कष्ट नहि हुअ देबैन जे मानवोचित अछि। माने जेते दोसरक जीवन भार उठबैक साध्य मनुक्खकेँ अछि। ओना, असाध्य जीवन, माने दैवी प्रकोप सेहो अछिए। मुदा ओ संख्यामे न्यून अछि। ओना, विवेक भाय जानि रहला अछि जे जहिना देवीय प्रकोप अछि तहिना मानवीय प्रकोप सेहो अछिए। मुदा दुनूक अपन-अपन क्रियोगत आ भावोगत गुण सेहो छइहे।

बाल मनक संकल्प, माने बाबा-दादीक सेवा जेतेक सम्भव अछि तेते सेवा करबक विचार, विवेक भाइक मनमे आब डोलि रहल छैन। विवेक भाय आब पैंतीस बर्खक भऽ गेल छैथ, माता-पिताक संग अस्सी-पचासी बर्खक बाबा-दादी सेहो जीवित छैन आ पाँचसँ पनरह बर्खक बीच चारिटा सन्तान सेहो छैन। साधारण परिवार, माने साधारण मध्यवर्गीय किसान परिवारमे विवेक भाइक जन्म भेल छैन। ओना, इलाका-इलाकाक किसान परिवारक बीच, नाप-जोखसँ एकरंग खेत रहितो, उपजसँ विषमता अछिए।

तेतबे किए, राज्यवार वा क्षेत्रवारक अतिरिक्त एक परिवारोक बीच एहेन विषमता तँ अछिए। माने भेल जे तीन-तीन बीघा खेतक दूटा किसान परिवार अछि, आर्थिक दृष्टिए दुनूक समान पूजी भेलैन, मुदा एक परिवारक जमीन माने खेत, जेते उस्सर, बालु वा गहींर रहने माने पनिगर रहत, ओते उत्पादनमे माने उपजमे कमी हेबे करत। तेकर विपरीत जँ दोसराक खेतक माटियो नीक आ समतल भूमियो रहत तँ ओइमे उपजा सेहो नीक हेबे करत। ओना, एकर अतिरिक्त आरो कारण अछिए, ओ अछि श्रमशीलता। कोनो भूमि वा शरीरमे जेतेक श्रमशीलता अबैए ओते

बेसी ओ उर्वर उपजाउ होइते अछि। खाएर जे होइए, जेतए होइए ओ तेतुका बात से भेल। विवेक भायकेँ से नहि छैन। अपन जे तीनियो बीघा खेत छैन ओ समरस छैन। माने चौरस छैन।

विवेक भायकेँ तीन बीघा खेतमे एक बीघा घर-घराड़ीक संग बाड़ी-चौमास छैन, एक बीघा मध्यम खेत छैन, जेकरा गामक भाषामे 'तीन फसिला' कहल जाइए आ एक बीघा नीचरस-चौरी छैन। जइ साल जेहेन समय बनल, समय बनबैए मौसम, तइ साल तेहेन उपज होइए। ओना, तीनू मौसम–जाड़, गरमी आ बरसात–क अपन-अपन गुण-धर्म अछि आ तैसंग तीनूक तीन अवस्था सेहो अछिए। माने ई जे जइ साल आवश्यकतासँ अधिक बरखा भेल तइ साल बाढ़िक प्रकोप भेने पानिक उपद्रव बढ़ैए। जे पानि जीवन दान दइबला छी, सएह पानि जीवन लइबला नइ छी सेहो बात नहियेँ अछि। जहिना भूख लगलापर भोजन भेटने मनमे तुष्टि अबैए मुदा अधिक भेने ओहो जनमारा भइये जाइए, तहिना बरसातक मौसममे अधिक बरखा भेने होइए।

एहेन गुण-अवगुण मात्र बरसातीए मौसमक नहि अछि। गरमी आ जाड़मे सेहो अछिए। ओना, मोटा-मोटी तीनू मौसमक चर्च कऽ रहल छी मुदा ओइ तीनूक भीतर सेहो कनी कम आ कनी बेसी, अनेको गुण धर्म अछिए। जहिना बरसाती मौसममे अधिक बरखा भेने बाढ़िक उपद्रव बढ़ैए, तहिना तेकर विपरीत बरखा नइ भेने रौदीक उपद्रव सेहो होइते अछि। तहिना माने बरसाते जकाँ गरमी मौसममे सेहो अछि। ओहो अपन गुण-धर्मक अनुसार तीन रंगक रूप धारण करिते अछि। बेसी ताप, कम ताप आ समगम माने ने बेसी ताप आ ने बेसी अताप, बीचक अवस्था, जे जीवनानुकूल अछि। तहिना जाड़क मौसमक सेहो अछि। कोनो साल एहेन होइए जे जाड़क मौसम शुरू होइते शीत-पालाक भरपूर आगमन भऽ जाइए जे अन्त तक धेनहि रहि जाइए आ कोनो साल विपरीतो तँ होइते अछि। तँए एहेन प्रकोपकेँ दैवी प्रकोप मानि स्वीकार

करब अछिए।

ओना, जखन दैवी प्रकोपक भीतर पएर रखै छी तखन चलैक रास्ता सेहो भेटते अछि। जीवनमे चलबोक अपन महत अछिए। कहलो गेल अछि- 'चरैवेति-चरैवेति..।' खाएर जे अछि, मुदा एते तँ बुझिये रहल छी जे अपना ऐठाम कहियोकालक माने बर्खक-बरख भेल। जहिना 1934 इस्वीमे भुमकम भेल तेकर पछाइत ओहन भुमकम 1988 इस्वीमे भेल। पचास बर्खसँ ऊपरक दुनूक बीच अन्तर अछि। ओना, छोट-छीन भुमकम बिच्चोमे केता बेर भेले अछि। मुदा जापानमे औसतन दू दिनपर एकटा भुमकम होइए। छोटो होइए आ पैघो होइए। ओना, छोट-पैघक जे नाप अछि, माने रेक्टर पैमानासँ जे नापल जाइए ओ तीस हजार गुणा बेसीक नाप छी मुदा से तँ अछिए।

कहब जे जापानकेँ बीचमे आनैक कोन खगता भेल? खगता ई अछि जे एक्केरंग विपैत रहितो जापानमे जान-मालक कम नोकसान होइए, अपना ऐठाम बेसी होइए। जँ हमहूँ सभ भुमकमसँ मुकाबला करैक शक्ति सिरैज ली तँ हमरो सभकेँ कम क्षति भेने पुरतियो तँ कम्मे करए पड़त किने।

अपना ऐठाम तीनू मौसम, जाड़, बरसात आ गरमीक बीच तीनटा आरो छोट-छोट मौसम बनियेँ जाइए। गरमी-सँ-बरसातक बीच, बरसात-सँ-जाड़क बीच आ जाड़-सँ-गरमीक बीच। जैठाम तीनू मौसम अपन चारि मासक जीवन धारण केने अछि तैठाम दू मौसमक बीचबला समयक सेहो अपन अवधि अछि, ओ अछि एक-मौसमक पैछलाक उतार आ दोसर मौसमक ऐगलाक चढ़ाइ वा आगमनबला।

विवेक भाइक जे अपन सम्पैत छैन, माने तीन बीघा खेत, ओकरा परिवारजनक श्रम-शक्तिक अनुकूल एक सूत्रमे बान्हि चलैक कोशिश करैत रहला अछि, मुदा तइमे गम, सुगम दुनू होइ छैन। मौसममे

अनुकूलता अनैले प्रतिकूलता दिस सेहो देखए पड़ै छैन।

दुनियाँक बीच अपन देश ओहन अछि जइमे अनेको रंगक एकरूपताक संग अनेक रूपता सेहो अछिए। देवी प्रकोपमे जहिना भुमकम अछि तहिना शीत-पालाक संग ताप-सन्तापक यातना सेहो अछिए। दुनियाँक अधिकांश देश ऐ मानेमे अपना सभसँ पाछू अछि। केतौ तापक प्रकोप अधिक अछि, जेना अफ्रीकामे, जेतए मनुक्खक संग-संग जीव-जन्तुक आकृतिमे सेहो अन्तर आबिये गेल अछि। तहिना जे देश शीत-पालाक छी, जेना- ध्रुवीय देश, जैठाम तापक क्रम सहजे कम अछि, तैठामक मौसम गर्म-मौसमबला देशक विपरीत अछिए। ऐ मानेमे जहिना अपन देश ऋषि-मुनिक साधनाक श्रेष्ठ भूमि रहल अछि, तहिना किसानक लेल माने खेतसँ उत्पादन करैबलाक लेल 'स्वर्ग भूमि' सेहो रहले अछि। स्पष्ट अछि जे जैठाम एकरंग मौसम रहत तैठाम जीव-जन्तुसँ लऽ कऽ चर-अचर सभ कथुक उत्पत्ति आ विकास एक-मौसमी हएत। मुदा जैठाम सालक आधा समय दिन आ आधा समय रातिक होइए, माने छअ मास दिन आ छअ मास राति, तैठामक उत्पत्ति दोसर रंगक हेबे करत। खाएर अखन हम सभ साहित्यमे छी, नहि कि भूगोलमे।

अपना ऐठाम जहिना बारहो मास, माने चारि मासक एक-मौसममे, अनेको विरहिनीक उपज होइए तहिना तेकर विपरीत साइवेरियामे, जैठामक भूमि सालक छअ माससँ लऽ कऽ नअ मास धरि वर्फक तरमे रहैए, तहूठामक किसान ओतबे दिनक बीच, माने तीन-सँ-छअ मासक बीच, अपन खेत-पथार उपजा साल भरिक जीवन-यापन कइये लइ छैथ।

अपना ऐठाम परम्परासँ, माने पैछला पीढ़ीसँ जहिना अन्नक तहिना तीमन-तरकारी आ फल-फलहरीक संग माल-मवेशीक जे उपयोग-उत्पादन अछि ओ दू रंगक अछि। एक- मौसमी उपज सेहो अछि आ दोसर- सभ-मौसमी माने बारहो मासक सेहो अछिए। एकरा एना

देखियौ, धानक खेती अछि। चर-चाँचर जमीन अछि। पैछला सालक पानिक हिसाबसँ जखन खेत जोत-कोर करै-जोकर पूस-माघमे होइए तखने किसान खेतमे धानक बीआ बाउग कऽ दइ छैथ। माने भेल पूस-माघ मासमे जे धान बाउग भऽ कऽ खेतमे गेल ओ गरमी-बरसात मौसम बितबैत जाड़मे माने अगहनमे घर अबैए। आँगुरपर जोड़ि कऽ देखियौ जे सालो भरिक चक्रमे धानक खेती अछि की नहि.?

तँए कहब जे अपन पूर्वज मौसमी धानक खेती नहि जनै छला, सेहो बात नहियेँ अछि। बखूबी जनै छला, जँ नहि जनै छला तँ तीनपखिया गम्हरी[5] केना उपजबै छला? तीनपखियाक माने भेल पैंतालीस दिनक चक्र। पनरह दिनक परव होइए। ई तँ धानक मात्र कहलौं। तीमन-तरकारीमे सेहो अहिना अछि, कोनो एक-मौसमी अछि तँ कोनो बहु-मौसमी। जेना, अल्लू एक-मौसमी अछि आ कोबी दू-मौसमी, माने कोबी सालक आधा समयक तरकारी भेल। तहिना फलोमे अछि, कोनो एक-मौसमी फल अछि, कोनो दू-मौसमी आ कोनो तीन-मौसमी सेहो अछिए। तेतबे नहि, एक्को फल दुनू रंगक अछि, जेना- आम एक-मौसमी फल सेहो छी आ बरहमसिया सेहो छीहे।

कहैक माने भेल अपन देश प्रकृतिगत बहुआयामी अछि। तँए अपना ऐठाम रंग-रंगक सभकथु अछिए। तैसंग सुखद संयोगक दृष्टि सेहो अछिए जे तेना एक-दोसरमे समा गेल अछि जे चिन्ह-पहचिन्ह कठिन भऽ जाइए, माने एक-दोसरकेँ बेराएब असान नहि रहि जाइए। जँ से नहि अछि तँ केना सूरदासक संध्या गीत 'साँझ भयो नहीं आयो मुरारी.', विद्यापतिक भनिता बनि गेल अछि आ विद्यापतिक गीत केना तुलसीदासक भनितामे चलि रहल अछि.? कबीर बाबाक तँ जीबने झंझटिया रहलैन तँए हुनका छोड़िये देब नीक हएत। अनेरे झंझट किए

[5] **धानक एक किस्म**

लाधब जे कबीर बाबा मैथिलीक शब्देटा नहि शैलीक रूपमे सेहो अपन रचना केने छैथ, तँए ओ मैथिल नहि भेला सेहो केना नहि कहल जाएत। मृत्युक समय तँ सहजे हिन्दू-मूसलमान अधा-अधी शरीरकेँ काटि बँटैपर सहमत भेला। काशीसँ लऽ कऽ गंगाक ओइपार धरि, कबीर बाबाक चास-बासक संग रणभूमि सेहो छेलैन्हे। तँए अवधी, भोजपुरी, मैथिली, मगही इत्यादि भाषाक बोध हुनका छेलैन्हे। खाएर जे छेलैन ओ कबीर बाबाक छेलैन। आब ने आचार्य रामचन्द्र शुक्ल छैथ जे त्रिवेणीसँ आगू बढ़ता आ ने हजारी बाबू सन पाकल परोड़, जे कबीर बाबाकेँ भाषाक डिक्टेटर मानि स्पष्ट कहता जे भाषाक प्रति कबीरमे ओ शक्ति छेलैन जे वैदिक भाषाकेँ जनभाषामे तेना पीआ देलैन जे दुनूक भेदे मेटा देलैन। जेकर नीक फलाफल समाजकेँ भेटल।

वैचारिक दिशा भेटने अखनो कबीर बाबा समाजकेँ ओहिना धेने-पकड़ने छैथ, जेना धरै-पकड़ैक बाट बनौलैन। सइयो बर्खक अन्तरालक बीच, समाजमे अनेको धार्मिक आ जातीय उन्माद उठैत रहल मुदा कबीरक विचारधारामे प्रवाहित होइत पंथी अखनो ओहिना ठाढ़ छैथ जेना कबीर बाबा ठाढ़ केलैन। समाजमे अपन प्रकाश-पुंजसँ जेहेन समाजकेँ स्थापित कबीर बाबा केलैन, कम्मो-बेस समाज अखनो ओहिना ठाढ़ अछिए। खाएर जे अछि तइ-सभसँ विवेक भायकेँ कोन मतलब छैन, मतलब एतबे मनकेँ घेरने छैन जे जैठाम माता-पिताकेँ देवतुल्ये नहि, देव-देवी सेहो मानल जाइए, तैठाम की देखि रहल छी? ओना, सुग्गा रटंत तँ समाजमे अछिए जे 'शिकारी आएगा जाल बिछाएगा, लोभ से उसमें फँसना नहि।' मुदा फँसि सभ रहबे कएल अछि.! तँए कहब जे समाजमे उचित वक्ताक रौदी आबि गेल, सेहो बात नहियेँ अछि।

मिथिलाक भूमि ओ भूमि छी जे मथि-मथिकऽ तैयार भेल अछि, तँए हरसठे मेटा केना सकैए। अखनो जनकक भूमि मिथिला छीहे, जेतए अयाची मिश्रक विचारधारा गतिशील अछि। जेकरा देखैक-परखैक

जरूरत अछि। अखनो आ तहियो एहेन वक्ताकेँ समाज पैदा केनहि अछि जे कहलैन- 'छौड़ी परिकल ढौआमे.!' केते रहस्यपूर्ण भाव ऐ कहबीमे छिपल अछि। ओना, 'छौड़ी' बेटी जातिसँ सम्बद्ध शब्द छी, तँए एहेन शब्दक प्रयोग समाजमे बरजित अछिए। सोलहन्नी बरजित हुअए वा नइ हुअए अखन तइ दिस नहि जा, एतबे कहब जे अपन पूर्वज लोकैन 'छौड़ी'केँ बुइधिक प्रतीक मानि अर्थक दृष्टिसँ देखौलैन अछि।

घनगर परिवार[6]क बीच विवेक भाय अपनाकेँ स्थापित केने छैथ। ओना, संयुक्त परिवार कहियौ आकि घनगर परिवार, बिना संयुक्त परिवार भेने परिवार घनगर बनि केना सकैए। आजुक परिवेशमे जेना दू-तीन-चारिक परिवार बनि रहल अछि, तैठाम दुनियाँक ओ रूप जे पारिवारिक रूपमे अछि, ओ बनि केना सकैए।

आर्थिक दृष्टिये विवेक भाय अखन तक अपनाकेँ कहियो नहि पछुआए देलैन अछि। अनेको तरहक, मानवीयसँ लऽ कऽ दैवीय प्रकोपक बीच रहने विवेक भाइक मनोभाव आइ थरथरा रहल छैन। थरथराइक कारण छैन जे बाबा-दादीक ओ उमर भऽ गेल छैन जे शारीरिक रूपसँ आर्थिक उपार्जन नहि कऽ सकै छैथ, माता-पिता सेहो अस्ताचलगामी सुर्जे जकाँ भऽ गेल छैन। बीचमे विवेक भाय अपने छैथ, जिनका परिवारकेँ ठाढ़ करब छैन। पैछला विचारक भारक संग आजुक जे जीवनक विचार बनि रहल अछि, ओइ जीवनक पूर्ति करैक शक्ति विवेक भाय अपनामे नहि देखि पेब रहला अछि। तँए जीवनकेँ हीन-हीनाइत, माने अभाव रहने निच्चाँ दिस ससरैत देखि रहला अछि।

संयोग बनल, असगरे जखन दलानपर बैसल विवेक भाय अपन जिनगी ढूढ़ि रहल छला कि तहीकाल अपने पहुँचलौं। हमरापर नजैर पड़िते विवेक भाय बजला- "राजहंश, आब अपना सभक बास वृन्दावन

---

[6] **संयुक्त परिवार**

सन गाममे नहि हेतह तँए दुनू भाँइ चलह। समुद्रक कातमे जे द्वारका अछि तेतइ चलि कऽ, नुका रहब। देखिते छहक जे जरासन्ध सन केतेको जरासन्धक जन्म भऽ गेल अछि।”

ओना, अपनो बुझल अछिए जे विवेक भाइक विचार फूलक ओहन माला जकाँ बनल छैन, जइमे रंग-रंगक, अनेको रंगक फूल गाँथल छैन। तँए एक-एक फूलकेँ चिन्हब ओते असान थोड़े अछि। अपन भारतीय परम्परानुसार जइ फूलक जेहेन सुगन्ध अछि तइ फूलकेँ तेहेन कोटिमे राखि फूलक श्रेणी बनौल गेल अछि। तैठाम सुगन्धकेँ धकेल आँखिसँ चिन्हबकेँ नीक सेहो मानले जा रहल अछि।

विवेक भाइक विचारकेँ जँ विवेकपूर्ण समर्थन नहि भेटैन तखन ओ फड़त-फुलाएत केना? बजलौं- “भाय साहैब, बाँसक बीटमे जहिना दस-सलियासँ एक-सलिया धरिक बाँस अपन-अपन जगहपर ठाढ़ रहि जीवन धेने अछि, तहिना अहाँक परिवार धरियाएल अछि, जेकरा आगूओ निमाहैक अछि।”

हमर विचार जेना विवेक भाइक हीन-हीनाइत मनकेँ फुल-फुलाइक शक्ति देलकैन, तहिना मुहसँ खसलैन- “राजहंस, दुनियाँमे ने कखनो भयभीत होइ आ ने अपनाकेँ कखनो अभय मानी.!”

पुछलयैन- “भाय, तखन?”

बजला- “सभय भऽ जीवन-यापन करैत चली।”



शब्द संख्या : 2347, तिथि : 02 अप्रैल 2022

चेहराक निखार

पचास बर्खक उम्र बीतला पछाइत ललितकेँ भान भेलैन जे अखन तकक जे जीवन रहल अछि ओ कामचोर-निठल्लाक नहि रहल अछि, कठिन श्रमिकक रहल अछि मुदा से चेहराक निखारमे नहि आएल.!

चेहरा जीवनक सेहो होइत अछि, तँए ललितक बातकेँ ओहुना बुझि सकै छी जे हुनका जीवनमे निखार नहि एलैन। जहिना सिलेट वा कागजपर, पैंसिल वा कलमसँ लिखल जाइए तँ किछु निखरबो करैए आ किछु नहियोँ निखरैए। माने, जखन समुचित ढंगसँ लिखै छी तखन निखरैए आ जखन अल्लै-मल्लै करि कऽ लिखै छी तखन नहियोँ निखरैए.! अहीठाम आबिकऽ ललितक विचार ठमैक गेलैन।

विचार भलेँ ललितक जेहेन रहल होनि मुदा कर्मसँ ओ गायक कलाकार छैथ। ओना, कलाकारीक सेहो अपन महत्वो अछि आ स्तरो तँ अछिए। जहिना जनतंत्रमे जनमानसक विचार अपन प्रगाढ़ रूपमे निखरैए तहिना वएह विचार आन तंत्रमे ओहन वक्ताक मुहसँ हास्यक रूपमे संचरित होइते अछि। ओहुना देखिते छी जे हँसिकऽ बाजबकेँ लोक मजाक बुझिते अछि। खाएर जे अछि तइसँ ललितकेँ कोन मतलब छैन, मतलब छैन अप्पन जीवन आ जीवनक निखारसँ।

ओना, अपन जीवनक गाछ तक ललित सन्तुष्ट छथिए जे दुनियाँमे कि कोनो हमहींटा गायक कलाकार भेलौं अछि आकि हमरा सन-सन बहुतो भेला अछि। ओना, भीतरे-भीतर मन ईहो गवाही दइते रहै छैन जे

एना तँ बेकतीगत रूपमे ने अछि, मुदा सामुहिक रूपमे तँ कहले जाइए जे 'दस मिलि करी काज, हारने-जीतने कोनो ने लाज.!' दस गोरेक संग जखन कोनो काज करब तखन नीको हएत आ कोनाह-कनाह सेहो हेबे करत। तइले लोक चिन्ता थोड़े करैए।

विचारक क्रममे ललितक मन जहिना आगू बढ़ि दूर तक पहुँच जाइ छैन तहिना अपने मन ईहो धिक्कारए लगै छैन जे समाजक लोकसभ अखनो 'गबैये भाय' कहैए.! जखन कि अपने चारीमपन माने वृद्धपनमे पहुँच रहल छी। पैछला पीढ़ीक तँ साइठ बर्खक पछाइत सभ अपन-अपन स्वर्गक टिकट कटा चलि गेला। रहलौं बीचक हम सभ, तइमे अपनो पचास बरख टपिये गेलौं, चारिमपन कहियौ आकि पैंतालीस बर्खसँ ऊपर श्रेणीक वृद्धपन, ऐठाम साइठ बर्खक नोकरीक आधारपर जीवन निर्धारित अछि, पाबिये गेलौं, तखन आबो जँ अपन जिनगीकेँ ठेकानि कऽ पकैड़ अपने नहि चलब तँ बाबा-परबाबा आबि कऽ बुझौता जे ललित ढंग पकैड़ चलह।

ललितक मन अपने-आप उमड़ए-धुमड़ए लगलैन। बर्खा-पानिक बुलबुला जकाँ अनेको रंगक विचार मनमे अपने उठौ (उठउ) लगलैन आ अपने फुटौ (फुटउ) लगलैन। मुदा सभ विचार फुटिये जाइ छैन सेहो बात नहियेँ अछि। ललितक मनमे किछु एहेन विचार अखनो ओहिना तजगर छैन जेहेन तजगर मानि लोक अपनाकेँ गढ़न करैए।

ललितक मनमे कचोट उठि रहल छैन जे अखन धरि अपन जीवन-वृत्तिकेँ नीक मानि अंगीकार केलौं आ अखनो ओही पथपर चलि रहल छी, तखन नीक कर्मक फल नीक होइत किने, से कहाँ भऽ रहल अछि? मजकिया बनि मजाकक पात्र बनि गेल छी.! अपनासँ पूर्वक जे काका, बाबा इत्यादि छला, समय पेब ओ सभ दुनियासँ चलि गेला। अखुनका जे समाज अछि तइमे अपने ने काका, बाबाक अधिकारी बनि रहल छी, से लोक कहाँ मानि रहला अछि? परोछक कोन बात जे सोझोमे सभ 'ललिते

भाय' वा 'गबैये भाय' कहैए। ने कियो 'काका' आ ने कियो 'बाबा' कहैए। अपना उमेरक जे छैथ, ओ जँ 'भाय' कहै छैथ वा 'गबैया' कहै छैथ वा 'ललिते' कहै छैथ तँ ओ क्षम्य भेल, किए तँ शुरूहेसँ देखतो एला अछि आ कहितो तँ आबिये रहला अछि। मुदा आजुक जे नवका पीढ़ी अछि माने अपन बेटा-पोताक दत्तारी, सेहो सभ जखन 'ललिते भाय' आकि 'गबैये भाय' कहैए, तइसँ जँ मनमे कचोट नहि उठए तँ कचोट उठत केतए?

मुदा लगले अपने मन ललितकेँ ईहो कहैन जे नाचक मंचपर, अपन हास्यपूर्ण हाव-भाव आकि हास्य गीतक अभिनय जे देखै-सुनैए ओ मंचक परोछमे माने मंचसँ बाहर, वएह बात दोहरबैत कहैए तखन ओकर गलतीए की भेल? ई तँ उचिते भेल। मुदा लगले अपने मनमे ईहो उठि जानि जे, जे धिया-पुता पोता दाखिल अछि ओ जखन सासुरक सारि-सरहोजिक चर्च करैत मुँहेंलागल हँसैए, ई केते उचित भेल?

अपन विचारकेँ नहि सोझराइत देखि ललितक मनमे खौंझ उठए लगलैन जे एहेन कि अही गामक धिया-पुता अछि जे उमेरोक विचार नहि करैए.! मुदा लगले फेर अपने मन रोकैत कहैन जे कौलेजक शिक्षककेँ प्रोफेसरी, स्कूलक शिक्षककेँ मास्टरी इत्यादि अनेको वृति अछि जे छोड़ला पछातियो माने सेवा-निवृत्ति भेला पछातियो लोक 'प्रोफेसर साहैब', 'मास्टर साहैब' कहै छैन तँ हुनका सभकेँ खुशीए होइ छैन। कहाँ मनमे ई होइ छैन जे समाजक लोक हमरा ताना मारि रहल अछि। मुदा अपनौं जे लूरि-बुधि भेल तइ अनुकूल अपन वृत्ति बना जीवन धारण केलौं, जे वृत्ति समाप्त भेलो पछाइत लोक आदरक संग वएह वृत्तिकार कहै छैथ, जेहेन जीवनकेँ गढ़लौं। मुदा से किए..?

ललितक मनमे अनेको रंगक प्रश्न उठियो रहल छेलैन आ बिलाइयो रहल छेलैन। किछु प्रश्नक उत्तर मनमे नीको उठैन आ किछु प्रश्नक उत्तर अधलो तँ उठबे करैन। मुदा उनैट-पुनैट अपन मन अपनेपर केन्द्रित भऽ जाइन जे जइ समाजमे छी, केते लोक हमरा सन बुझनिहार-सुझनिहार

अछि, मुदा नहि रहितो अपन की गति अछि आ आनक की गति छैन? देखिते छी जे किछु लोक प्रतिष्ठित सेहो मानल जाइ छैथ आ किछु हमरे सन हेराएल-भोथियाएल सेहो छथिए।

'हेराएब-भोथियाएब' मनमे उठिते ललितक नजैर एकाएक चौंकलैन, चौंकते मनमे उठलैन जे दुनियाँक लोक दुनियाँक बात जानह। जहिना दुनियाँ बड़ीटा अछि तहिना बहुतो लोको तँ जननिहार अछिए। मुदा अपन तँ अप्पन छी किने। जहिना अपने दुनियाँकेँ नहि देखब तहिना दुनियोँ किए अपन देखत.!

हारल नटुआ जकाँ कहियौ आकि हारल राही जकाँ, ललितक मन ओइ सीमापर पहुँच गेलैन जैठाम हारि-जीतक बीच संघर्ष होइत निर्णायक मोड़ बनैए।

अखन तकक जे अभ्यस्त जीवन ललितक बनि गेल छैन ओ विचारकेँ आगू बढ़ैये ने दैन जे निरविचारी वा निर्गुणी बनि अपन जीवनकेँ देखि पबितैथ। ओहुना अपन वृत्ति सन वृत्ति केनिहार हजारो सहयोगीकेँ देखिये रहल छला जे सभ सन्तुष्ट छैथ।

ललित अपन वृत्तिकेँ नीक जकाँ निहारि दू भागमे विभाजित केलाह। एक भागमे गायककेँ आ दोसर भागमे मंच संचालककेँ रखलैन। माने गायन-मंचक संचालक। ओना, मंच मंचक अप्पन-अप्पन आँट-पेट अछिए मुदा से अखन नहि, अखन एतबे जे गायक रूपमे ललित भगैतो गबै छला, मंचो संचालित करै छला आ भगताक किरदारी करैत सोल्होअना भगते जकाँ आह्वान करैत अबाजो दइ छला- 'हौ बाबू सभ, हम मनुक्खदेवा छिअ। जेकरा जे मनकामना हुअ से मांगह।'

तैसंग जखन मंचपर रसिक कलाकार बनै छला तइसँ पहिने ललित 'राम'केँ दोहरा कऽ बिनु जनकपुर एनहि होली गबैत जोगीरा सेहो छीट दइ छला। जइसँ दर्शक दीर्घामे धियो-पुतो आ रसिकोजन सभ 'स-र-र-र..' करए लगैन। अपन दायित्वकेँ ललित अंगरेजी-बाजाक रिंग मास्टर

जकाँ, हाथमे रोल राखि अपन संगीतक भाव प्रदर्शित करए लगैथ, जइसँ ललितक उम्रक सीमा मेटा हास्य कलाकार बनि गेलैन। कलाकारेक तँ ई दुनियाँ छी। जेहेन कलाइमे कल रहत तेहेन कलाकार बनब। एकर माने ई नहि बुझब जे कलाकार हासियापर छैथ। दुनियाँ छी, अनगिनित कलासँ सजल अछि, जहिना कोनो कारखाना वा खेत अनेको कलाकारीसँ सजल रहैए तहिना। निर्भर करैए ओहन किसान वा ओहन श्रमणक ऊपर जे केतेक समुचित ढंगसँ अपन कलाकेँ केते दुर्गम रास्ता, ऐठाम दुर्गम रास्ताक माने अछि समयक अनुकूलता,पर अपनाकेँ ढालैत चली। एक-सँ-एक कलाकार एक-सँ-एक क्षेत्रमे अपन कलाकारीक बलपर अखनो ओहिना ठाढ़ छैथ जहिना अपन जीवित अवस्थामे ठाढ़ भेला। एकर माने कालिदास नहि बुझब, जे एक दिस बुद्धदेव आ महावीर जैनक जनभाषाक आन्दोलन बीचमे छेलैन तँ दोसर दिस परिनिष्ठित संस्कृत भाषामे व्याकरणक बारीकी पसरल छेलैन, तैबीच ओ उल्टे डारि काटए लगला तँ कोन अनुचित भेल।

ओ तँ कालिदास छला, महादेव जकाँ अमृत-विष सभ पीनिहार। मुदा ललित तँ से नहि छैथ, समाजमे रहनिहार सामाजिक जीव छैथ, तहूमे मनुक्ख, तँए विवेकशील तँ बनए पड़तैन। जँ से नहि बनता तँ समाजक कोन बात जे परिवारोमे सुख-चैनसँ नहियेँ रहि सकता। एकाएक ललितक मन अपनापर आबि अँटैक गेलैन जे जेना समाजो आ परिवारोक धिया-पुता अपन विचारकेँ हँसि-हँसि उड़ा रहल अछि, तेना कि मरला पछाइत गम्भीरतासँ लेत? की अहीले मनुक्ख बनि जन्म लेलौं जे हिटलर जकाँ थूकेसँ लहास भँसिया जाए? एते दिन बितला पछातियो हिटलरक प्रति घृणा लोकक मनमे कहाँ मेटाइए।

भीतरे-भीतर ललित अपन मनक मथन जेते करैथ तेते मट्ठा तँ भेटैन मुदा अपन भविस अन्हराएले रहि जाइन। करवनो-करवनो मन धिक्कारैत पुछि दैन, एक-सँ-एक मंचक संचालन करै छी मुदा अपने किए

हँसियेपर रहि गेलौं, गम्भीरता किए नहि आएल?

आकुल-व्याकुल होइत ललितक मन हरदा बाजि विचारलकैन जे किए ने पढ़ुआ भायसँ पुछि ली जे भाय, अपन जे जीवन रहल से तँ अहाँक सोझहेमे रहल, बुझले अछि जे संस्कृत सन गम्भीर विषयसँ एम.ए. केने छी, मंचपरक लोक छी, मुदा अपने मन अपना मनकेँ धिक्कारि रहल अछि जे सभ दिन हँसीएपर रहि गेलौं।

एक तँ ओहुना पढ़ुआ भाय खाली शब्देक ज्ञाता नहि छैथ, बेवहार-पक्षी सेहो छथिए, तँए विचार बेवहारिक रूपमे केना संचरित होइए से बुझा देता, तैपर ललितक मन पुरान पोखैर जकाँ, जइमे पानिसँ बेसी गादिये रहैए, आगू-पाछू भऽ रहल छेलैन। उद्विग्न मने ललित पढ़ुआ भाय ऐठाम विदा भेला। रस्तामे जखन कनी आगू बढ़ला कि अपने मन विचारसँ पाछू हटए लगलैन। पाछू हटैक कारण ई भेलैन जे ऊपर-झापड़क सभ बात कहबैन आ भीतरका बात, माने गम्भीर बात नहि कहबैन। अपने तँ पढ़ुआ भाइक बजैक क्रममे सभ बात सुनि लेब। भीतरका बात छेलैन जे आब जखन अपने एक उमेरपर पहुँच गेलौं तखन जँ धिया-पुता सभ विचारो आ टहलो-टिकोराकेँ हँसी बनाकऽ उड़ा दइए, तखन बुढ़ाड़ीमे, माने जखन बिछान धड़ब, तखन एक लोटा पानि आनि कऽ कियो देत आकि मुँह दूसत।

सघन बोनमे जखन लोक प्रवेश करैए तखन जहिना चारू दिस बोने-बोन देखैए, तहिना चारू भर रस्तो देखिते अछि मुदा से ललितकेँ हेबे ने करैन। माने, एकभग्गू जीवन रहने एकमुहाँ दमकल जकाँ एक भाग तँ पानिक पोखैर बनबैत मुदा दोसर भाग ठोपो भरि पानिक दरस नहि रहैत, ललितकेँ तहिना होइत रहैन। मुदा तैबीच पढ़ुआ भाइक दरबज्जापर पहुँच गेला। संयोगसँ पढ़ुआ भाय दरबज्जेपर रहैथ। सौन मासक केचुआएल साँप जकाँ ललित पढ़ुआ भाइक लगमे पहुँच बजला-

“भाय साहैब, अहाँसँ भेँट करैले मन तेते उताहुल भऽ गेल जे काजे

बेरमे आबि गेलौं अछि।"

अपनाकेँ सम्हारैत पढ़ुआ भाय बजला-

"समयपर काजसँ ऊपर विचारो होइए आ समयपर विचारसँ ऊपर काजो तँ होइते अछि।"

पढ़ुआ भाइक सोझ शब्दमे सोझ विचार छेलैन, मुदा से ललित नहि बुझि सकला। बुझबो केना करितैथ, शब्दक तुकबन्दीसँ सिद्धान्त आ बेवहार थोड़े एक भऽ जाइए। बेवहारक जन्म क्रियाक बाद होइए, जखन कि सिद्धान्त विचारक उपज छी। ललितक मनमे ईहो होनि जे मंच परक मनसा अपने छी, पढ़ुआ भाय तइसँ दूर रहै छैथ तैठाम सुपुट मुहेँ केना कहिऐन जे भाय अहाँक विचार नीक जकाँ नहि बुझलौं। लगले ललितक मनमे ईहो उठि गेलैन जे जखन दुनू भाँइ एकठाम बैस गप-सप्प करै छी तखन ओ बाजैथ आ अपने मुँह बन्न केने रही, सेहो तँ नीक नहियेँ हएत। यएह तँ ओ जगह छी जैठाम मनक संग विचारो धुआइए। ललित बजला-

"हँ से तँ होइते अछि।"

विचारमे एकबटता देखि पढ़ुआ भाय बजला-

"ललित, बहुत दिनक पछाइत भेँट भेलह अछि, दुनियाँदारीक की हाल-चाल छह?"

ओना, सोझे डारिये पढ़ुआ भाय बाजल छला, मुदा जहिना एक्के विचार वा एक्के वस्तु, खुशी मन रहने जे फल दइए से विचलित वा दुखी मन थोड़े दइए। ललित 'दुनियाँदारीक' भौकमे पड़ि गेला। भौक ई भेलैन जे दुनियाँबलाक ने दुनियोँ आ दुनियादारियो छी मुदा अपने तँ जीवनमे हारि रहल छी। हारि ऐ मानेमे रहल छी जे जेना-जेना जीवन बीतैए तेना-तेना कर्मो आ विचारोमे गम्भीरता अबैए से अपनामे नहि देखि पेब रहल छी। जखन कि शुरूमे जहिना अपन काजक रूप-रेखा बना चलब शुरू केलौं तहिना अखनो अछि, मुदा जे गम्भीरताक रूप बनि सकैत से नहि

बनि पएल।

अनमनस्क जकाँ ललित बजला-

“भाय, दुनियाँदारीक की हाल कहब, मुदा बिनु कहनौं तँ अहाँ नहियेँ बुझबै, तँए.. ।”

पढ़ुआ भाय मने-मन अनुमान कऽ लेलैन जे भरिसक ललित कोनो धर्म-संकटमे पड़ल अछि तँए मुहसँ बकार नहि निकैल रहल छै। बजला-

“ललित, दुनियाँमे की किछु अछि, ई तँ एकटा रंगमंच छी जे खाली-खाली पड़ल अछि। अप्पन सीमित जीवनमे अपन अद अदा करैत छोड़ि दइके अछि।”

अपना विचारे पढ़ुआ भाय अपन विचार रखलैन मुदा ललितकेँ जेना हृदयमे काँट जकाँ चुभि गेलैन, जइसँ मन छिलमिला उठलैन। छिलमिलाइत मने बजला-

“भाय, अपनेसँ भेँट करैक यएह मनसा अछि जे अपने किछु.. ।”

‘अपने किछु’ कहि ललित मुँह बन्न कऽ लेला। जहिना दानी अपन दुनू हाथमे दानक वस्तु राखि दाताकेँ दिअ लगै छैथ आ दाता अपन हाथ छीप लइए तहिना पढ़ुआ भायकेँ भेलैन। हेबो केना ने करितैन। जखन किछु काजे वा विचारेक मकसदसँ ललित एला अछि मुदा मुहसँ निकालैमे संकोच होइ छैन तखन जरूर एहेन किछु गम्भीर बात अछिए जे निकलैले कण्ठ तक अबै छैन मुदा ठोरसँ निच्चाँ खसैक साहसे नहि जुटि रहल छैन। पढ़ुआ भाय बजला-

“ललित, जइ कारणेँ भेँट करए एलह अछि से जखन बजबह तखन ने अपने किछु कहि सकबह।”

पढ़ुआ भाइक विचार सुनि ललितक मनमे ओहिना भेलैन जहिना असाध रोगसँ ग्रसित रोगी अप्पन गुप्त-सँ-गुप्त अंग डॉक्टरक सोझमे अनैले तैयार भऽ जाइए। बजला-

"भाय साहैब, अपना दुनू भाँइक बीच भैयारीक सम्बन्ध अछि तँए अपनेसँ... ।"

ललितक मुहसँ विचार नहि खसैत देखि पढ़ुआ भाय ठोंठियबैत बजला-

"ललित, केहेन काज-बात छह जे पेटमे औनाइ छह मुदा मुहसँ निकैल नइ रहल छह?"

ओना, बजैक क्रममे पढ़ुआ भाय बाजि गेला मुदा अपने मन सुझबए लगलैन जे कोनो तरहक गलती केलाक पछाइत जहिना गलती केनिहारक मुहसँ निकलैमे संकटपन्नक स्थिति बनैए, भरिसक तहिना ललितोकेँ भऽ रहल छै। तँए, नीक हएत जे पाछूसँ तेते जोरसँ ठेली, माने धक्का दिऐ जे दुरघटित विचारसँ मन आगू बढ़ि जाइ। तैबीच मिरमिराइत-मेमियाइत ललिते बजला-

"भाय साहैब, अपना जनैत भविसक नीके जीवन पबैक आशासँ क्रिया-कर्म अराधलौं, मुदा आब जखन पचास बर्खसँ ऊपर टपि गेलौं हेन तखन बुझि पेब रहल छी जे जहिना हँसोर रूपमे अपन कलाकारी शुरू केलौं तहिना अखनो हँसीएक पात्र बनल छी। आयुक हिसाबसँ जे गम्भीर भावना समाजक लोकमे जगैत से नहि जगि रहल अछि।"

ललितक गम्भीर विचार सुनि पढ़ुआ भाइक मनमे जगलैन जे जीवनक एहेन खञ्चामे ललित पड़ि गेल अछि जइसँ निकलब असाध तँ नहि, मुदा कठिन जरूर अछि। असाध ऐ दुआरे नहि अछि जे मनुक्ख ओहन ब्रह्मक सृजन स्वरूप छी, जे क्षणोमे क्षणैक-क्षणैक क्षीणकेँ दूर हटा-भगाकऽ क्षीणत्व बिसरजन कऽ सकैए, मुदा तइले सभसँ पहिने दृढ़ संकल्पित क्रियाक खगता तँ होइते अछि। पढ़ुआ भाय बजला-

"ललित, हम ई नहि बुझि पेब रहल छीअ जे एहेन विचार मनमे जगलह किए?"

अपन जिनगीक वृतान्तकेँ प्रकट करैत ललित बाजए लगला-

"भाय साहैब, आब बुझि रहल छी जे जखन मनुक्ख छी तखन सामाजिक जीवन प्राप्त करब पहिल शर्त्त भेल। वृत्ति वा कला दोसर खाढ़ीक शर्त्त छी जे निर्भर करैए, देश, काल आ परिस्थितिपर। पहिने मनुक्ख तखन ने कला आ कलाकारी.. ।"

ललितक विचारमे सह दैत पढ़ुआ भाय बजला-

"हँ, से तँ ठीके बुझलह।"

ललित बजला-

"अहीठाम धोखाए गेलौं भाय साहैब, जे अपने दोसर शर्त्तकेँ पहिल मानि जीवन धारण केलौं।"

लगले हाथ पढ़ुआ भाय ललितकेँ पुछलखिन-

"एहेन धोखा होइक कारण की भेलह?"

पढ़ुआ भाइक प्रश्न सुनि ललितक मनमे अपन अतीतक जीवन नाचि उठलैन। साधारण परिवारमे जन्म भेल। साधारण परिवारक माने जइ परिवारमे जहिना अर्थक अभाव तहिना विद्याक अभाव होइए। तँए, अपन जीवन अपने निरमाएब छल। एक तँ पढ़ैमे मन नइ लगैत रहए जे भरिमन पढ़ितौं, दोसर दिस अपनो झुकाव आ संगियो साथी ओहने भेटल जे नाच-गानसँ सम्बन्धित छल। ललित बजला-

"भाय साहैब, नाच-गानकेँ नीक जकाँ नहि बुझि वृत्ति रूपमे अपनाए लेलौं।"

ललितक बात बुझि पढ़ुआ भाइक मनमे ओहन-ओहन विचार अंकुरित हुअ लगलैन जेहेन फल-वृक्षक रूप होइए। मन मानि कहलकैन जे ललितकेँ भरिसक ओही फलक वृक्षक रूप चिन्हैमे धोखा भेलइ। आब ओहन जीवनक धारमे प्रवाहित भऽ चुकल अछि जे गंगा-सागरक घाटसँ पाछूक घाट दिस बढ़ि गेल अछि.! पढ़ुआ भाय सोचिते-विचारिते छला

कि तइ बिच्चेमे थाकल-ठेहियाएल बटोही जकाँ ललित पुछलकैन-

"भाय साहैब, आब कोनो उपाइ अछि कि नहि?"

पढ़ुआ भाय कहलखिन-

"जखन जीवन शेष छह तखन तइले उपाए नहि रहितो उपाय तँ करए पड़तह।"

'उपाय करए पड़तह' सुनि ललितक मनमे खुशीक रेख रेखांकित भेलैन। बजला- "की उपाय?"

मने-मन पढ़ुआ भाय विचारलैन जे ललितकेँ ओहन उत्तर देब नीक हएत जइसँ मनपर भार नहि पड़ि कर्मपर भार पड़इ। पढ़ुआ भाइक मनमे रहबे करैन जे कोनो जीवनक पूर्व अवस्था पश्चात् जीवन निर्धारित करैए, भलेँ ललितक मन जे मानइ। बजला-

"ऐ जन्मक फल ओइ जन्ममे भेटैए, तँए..?"

ललित बजला- "सएह।"

पढ़ुआ भाय बजला- "हँ, से सएह।"



शब्द संख्या : 2496, तिथि : 06 अप्रैल 2022

भरि मन काज

शासनतंत्रक सूत्र-नीतिसँ जहिना जीवन उठै-खसैए ठीक तहिना गियानचनकेँ अपन जिनगी देखि मन खसए-उठए लगलैन.! मन कहलकैन दुनियाँकेँ तखने ने जानि पाएब जखन अकास-सँ-पताल आ पताल-सँ-अकास देखैक अक्ष आँखिमे औत। मुदा से कोनो पैथक आई ड्रॉपसँ थोड़े औत। ओ औत जखन जिनगीकेँ खन्तीसँ, ऐठाम कबीर बाबाक खन्ती नहि बुझब जे जगरनाथमे समुद्रक सीमापर जा कऽ खँतियौलैन, खुनि कऽ खत्ती बना खतियाएब, तखने ने खेत-पथारक खतियौन जकाँ जीवनोक खतिआन बनत। ओना, सभकेँ बुझल अछिए जे चौबीस घन्टाक भीतर दिन-राति होइए, मुदा दिनमे दिन केहेन भेल आ रातिमे राति केहेन भेल, यएह देखि पएब ने भेल दुनियाँमे अपनाकेँ देखि पएब.!

दिनमे दिन आ रातिमे राति की भेल? रातिक बीच एकटा राति ओहन अछि जे पूर्णिमाक चानसँ जगमगाइए आ दोसर राति की एहेन नहि अछि जइमे इजोरिया-इजोतक दरसो ने रहैए आ अमावाश्याक अन्हारक अन्हार छाड़ने रहैए? सेहो तँ अछिए.! मुदा दुनूमे जहिना अन्हार अछि तहिना इजोतो नहि अछि, से केना नहि कहल जाएत। हँ, एते देखमे जरूर अबैए जे पूर्णिमाक एकटा चान अन्हारकेँ डँसने रहैए आ दोसर अमावश्याक अन्हारकेँ लाखो-करोड़ो तरेगन डँसैले परियासरत रहैए। खाएर जे रहैए ओ प्रकृतिक खेल छी, मुदा जीवनक बीजक तँ से

नहि छी, ओकर तँ अपन प्रकृति होइए जे अपन प्रकृतिगत रूपमे चलैत आबि रहल अछि।

एकाएक गियानचनक मन ओइ सीमापर पहुँच गेलैन जैठाम बनमानुख अपन दिन-रातिकेँ जोखै-तौलैए। एक सीमा परक दृश्य देखिते ज्ञानचनो भूत-भविसकेँ तराजूक दुनू पलड़ापर राखि वर्तमानक डण्डी पकैड़ जोखए लगला कि धक-दे एकटा बिसरल बात मोन पड़लैन। मोन पड़लैन, जहिना रामायण-महाभारत वा कबीरक बीजकक एक-एक पाँतिक एक-एक शब्दकेँ भिन्न-भिन्न रूपमे विभाजित करैत कियो अपन जीवनक पाँतीकेँ पँतियबैए, तहिना अपनो किए ने पँतियाबी।

ओना, गियानचनक अखनुक जीवन रोगाह भइये गेलैन अछि, जइसँ मनमे खिन्नता सेहो अपन जगह बना रहल छैन, मुदा उपाइये की? उपाय तँ ओइठाम अछि जैठाम जीवन अछि। जैठाम जीवने नहि रहत तैठाम तँ केहनो अट्टालिका किए ने बनौने रही, मुदा ओ भूताहि भइये जाइए।

मानि लिअ, अहाँ दिल्लीमे वा मुम्बइमे नोकरी वा बेपार करै छी जइसँ नीक कमान कमाइ छी, मुदा अखन धरिक जे अपना सभक ग्रामीण परिवारक इतिहास रहल, माने आइसँ बीस-तीस बरख पूर्वक, ओना तइसँ पहिनौंसँ गामक लोक सभ दिल्ली-मुम्बइक अट्टालिका देखि नेने छला आ पाइ कमेला पछाइत ओहो ओही अट्टालिकाक प्रवाहमे अपनो रहैक घर शहरोमे बनौलैन आ गामक जे अपन पूर्व-जीवन छेलैन, माने शहर अबैसँ पूर्वक, ओ तँ यएह ने कहलकैन जे गाममे पाँचो प्रतिशत परिवारसँ कम परिवारक घराड़ीपर पजेबाक नाओं लेल गेल अछि। गामक अतीतक दृश्य यएह ने छल जे आजुक परिवेशसँ बहुत दूर छल। गामक जे पूर्व सिनेह छेलैन तइ अनुकूल परदेशी भाय गामोमे रहैक घर बना लेलैन। देखिये रहल छी जे एक दिस मेट्रो ट्रेनक जरूरत अछि तँ दोसर दिस ढेरक-ढेर लोक बैसल-बैसल समय काटि रहल अछि। एक

दिस स्कूल-कौलेजमे शिक्षक नहि अछि मुदा तेकरे दोसर दिस परीक्षाक रिजल्ट नीक भऽ रहल अछि।

अपन बहैत मनकेँ गियानचन ई कहि बोइस कऽ रोकलैन जे कबीर बाबा बिनु डन्डी-पलड़ाक तराजूपर दुनियाँकेँ जोखि लेलैन आ अपना बुते अपनो जीवनकेँ तौलल नहि हएत.! ..पहाड़ी झड़नाक पानि जकाँ गियानचनक मन पहाड़पर सँ उतरलैन। उतैरते जहिना झड़नाक झहरबकेँ पाथरक कोनो टुकड़ा पहाड़पर सँ खसि रोकिकऽ मुँह घुमा दइए तहिना गियानचनक मुँह घुमि गेलैन। मुदा जीवन तँ जीवन छी.! थर्मामीटरक पारा जकाँ जीवनकेँ हाथसँ पकड़ब कठिन अछिए। लीलाक संग जहिना रासलीला अछि तहिना ने कदमलीला सेहो अछिए.!

विचित्र स्थितिक बीच गियानचन अपना मनकेँ थीर करैक कोशिश करए लगला मुदा..। मुदा ई जे अखन तक गियानचन एतबे बुझै छला जे समाजमे बेटा वा पतिक मृत्युक पछाइत जहिना माए वा घरनीकेँ, समाजक दाइ-माइ यएह ने असीरवाद दैत कहै छैथ जे राजा-दैव अहिना होइए, तँए मनकेँ थीर करू। भलेँ असीरवादक माने–अर्थ–अपने बुझैथ वा नहि। मनकेँ थीर करब बाल-बोधक खेल नइ ने छी, ऐठाम महाभारतक प्रह्लादक बात नहि बुझब जे बालपनेमे मनकेँ थीर कऽ लेलैन। ऐठाम गियानचनक बात चलि रहल अछि।

जहिना जीवनक खेल असान अछि तहिना कठिन सेहो अछिए। तहूमे मनक खेलकेँ पकड़ब तँ आरो कठिन अछि। सभ जनिते छी जे ऐ संसारमे दुखसँ जीवन शुरू होइए आ अड़ना साँढ जकाँ मनक थीरता होइत जाइए। दुनियाँ तँ दू भागमे बँटाएल अछिए। एक भाग भेल दुखक दुनियाँ आ दोसर भाग भेल सुखक दुनियाँ। कबीर बाबा भनेँ ने कहने छैथ जे दो पाटन के बीच मे, बाँकी बचे ने कोइ। खाएर कबीर बाबाक अपन दिन छेलैन आ अपन दुनियाँ छेलैन मुदा गियानचनक तँ से नहि छैन। जे छैन सएह ने देखता। यहए ने देखता जे जहिना दुखोक डरे मन

थरथरेने अथीर भइये जाइए, तहिना सुखोक जे मन होइए ओहूमे घब-घबी धैये लइए। ओल आकि अरिकंचन जकाँ पातो आ फलोमे कब-कबी आबिये जाइए जइसँ मन थिर होइत-होइत असथिर भइये जाइए। यएह तँ छी मन, जे अपन तीन तरहक खाना बनेने अछि, सुखक मन, दुखक मन आ दुनूक बीचक सु-दुखक मन।

एकाएक गियानचनक मनक किछु कुहेस छँटलैन। छँटिते दुनियेँ जकाँ अपन जीवनकेँ ध्रुवीकरण केलैन। जहिना भूगोलक भाषामे उत्तरी ध्रुव आ दच्छिनी ध्रुव अछि, जैठाम छअ मासक दिन आ छअ मासक राति होइए, तहिना ने जीवनोमे अन्हार-इजोत दुनू अछि। जैठाम छअ मासक राति हएत तैठाम कि अखुनका जकाँ लोक बिजलीक इजोतमे रातिकेँ दिन बना जीवन लीला करत आकि कुम्भकर्ण जकाँ सुतबे करत।

दुनियाँक ध्रुवीकरण नहि, अपने जीवनक ध्रुवीकरण करैत ने विद्यापति कलैप-कलैप कहलैन, 'आध जनम हम नीन गमाओल.!' ..एक तँ आधा जीवन ओहिना चलि जाइए। बाँकी जे बँचल आधा अछि तइमे अपन शरीर क्रियाक संग जीवन-धर्मोक क्रिया तँ करबे अछि, तइले समाइये केते बँचैए.!

जिनगीक खेलसँ, माने परेशानीसँ गियानचनक मन भीतरे-भीतर अकछए लगलैन। ऐठाम ई नहि बुझब जे, जे दुनियाँ प्रिय धार बहबैक शक्ति अपना पेटमे रखने अछि, तइ दुनियासँ लोक थोड़े विरक्त हुअ चाहैए। ओ तँ महाजन जखन सूदक-सूद आ मूड़-मूड़क हिसाबक बेवहार जीवनमे आबि व्यक्त करैए तखन ने ऐ दुनियासँ लोककेँ अकच्छ लगैए। जइसँ मूसेक दबाइ खा वा गरदैनमे फँसरी लगा दुनियाँसँ अपनाकेँ मेटैबते अछि। कहब जे मूसक दबाइ तँ पुरान भऽ गेल, तहिना फँसरी लगाएब सेहो पुरान भऽ गेल, आब तँ एहेन बिजली आबि गेल अछि जे तुलसी बाबाक रामायणिक पाँती, मरैकाल बहुत भारी दुख होइए, माने प्राणान्त होइकालक दुख, सेहो बदलैले कहबे करै छैन। भाय! जीवन छी ने।

वनमे जखन सीताक हरण भऽ गेलैन तखन राम जहिना गाछ-बिरीछकेँ पुछि-पुछि सीताक भाँज लगबए चाहलैन तहिना ने जीवनो छी। मृत्यु अमृतकेँ पुछि-पुछि पुछियाबए पड़ैए। सघन जीवनक वनमे जहिना जीवनकेँ तकैले निच्चाँमे उतरए पड़ैए, माने मूल लग जाए पड़ैए, नइ तँ पतालक पानि जकाँ ऊपरका-नीचला लेयरक पानिक गुण बुझबे ने करब, तहिना ने जीवनोक ताक ताकए पड़ैए। अयोध्यासँ निकलला पछातिये, माने जखन राम पँचवटी पहुँचला तखन, रामकेँ ढेरो लोकसँ भेँट भेलैन, मुदा ओइ ढेरीमे किछु गनले-गूथल ने मित्र बनलैन, बाँकी तँ ओहिना ने वनमे घुमैत रहि गेला। तहिना ने जीवनो अछि।

हाट-बाजार वा मेला-ठेलामे लाखो लोकक भीड़ रहैए मुदा तइमे सर-सम्बन्धी वा हित-मीतक संख्या कम रहिते अछि, ओही कमक सम्बन्ध ने जीवनक धार टपबैए। ऐठाम हम ई नहि कहै छी जे आजुक एहेन परिवेश बनि गेल अछि जइमे ने उपार्जनेक ठेकान अछि आ ने उपभोगेक। दुनू बेठेकान जकाँ भऽ गेल अछि। जीवनक जे आधार अछि ओकरा जाबे नहि ठेकनाएब ताबे जीवनकेँ ठाढ़ केना करब। जखन मनुक्खक रूपमे दुनियाँमे छी तखन जँ दुनियोँ आ अपनो ठेकान पेब लेब तखने ने दुनियाँक संग पएर-मे-पएर, माने गति-मे-गति मिला दुनियाँक धारक धारामे प्रवाहित होइत समुद्र पहुँचब। खाएर जे अछि, तइ सभसँ गियानचनकेँ कोन मतलब छैन। मतलब एतबे छैन जे समग्र रूपक जिनगी केना बनाकऽ सामाजिक रूपमे जीवन धारण केने रहता।

बजैक क्रममे सभ बजिते छी जे फल्लाँसँ उपकार भेल आ फल्लाँकेँ उपकार केलिऐ, एहेन विचार एकांकी जीवनक छी, मुदा जखन समग्र रूपमे अपनाकेँ ढालि चलब तखन यएह विचार उपकारक जगह अपन दायित्व भऽ जाइए। अपना समाजमे सभ बुझिये रहला अछि जे कोइ करे आप ले माए ले ने बाप ले। ..तखन जँ ई बुझबै जे हम माता-पिताक सेवा

केलौं, तँ अपन दायित्व[7] की भेल?

जहिना पोखैर वा तालावमे देखल कोनो माछकेँ पकड़ैले बेर-बेर मछवाह जाल फेकैए तहिना ने जीवनोक मूल तत्त्व पकड़ैले कर्मक जालकेँ बेर-बेर फेकए पड़ैए। तहूमे ओइठाम जैठाम मटियार माटिक रस्ता अछि, जेकर दुनू पीठ पीछराह होइते अछि। पीछराहो की एक्के रंग होइए। पानिमे भीजल माटिक पीच्छर सेहो होइए आ बिनु पानिक माने रौदमे सुखल पीछराह सेहो होइते अछि। तैठाम तँ जीवन जीवाइन हेबे करत किने। अन्हार-इजोतक बीच खेलेनिहार मनुक्ख तँ छथिए। मानि लिअ जे हम कोनो काज निर्धारित केलौं, समय, परिवेश इत्यादि अनेको सोझामे अछिए, तइसँ जँ कम केलौं, तइयो गलत भेल आ जँ बेसियो केलौं तँ ओ की भेल, ओहो ने गलत्ते भेल। एक-एक क्षण विष अमृतक संग चलैत रहैए। तइले अपन विष-अमृतकेँ चिन्ह चलबे ने जीवन पएब भेल।

बजैक क्रममे सभ बजिते छी जे मनुक्खकेँ जीवनक स्वतंत्रता हेबा चाही, मुदा अधिकार आ कर्तव्यकेँ कातमे राखि कऽ नइ ने हएत? जहिना स्वतंत्र जीवन निर्गुण[8] अछि तहिना ने ओकर अपन सीमा सेहो अधिकार-कर्तव्यक बीच अछि। ऐठाम ईहो विचार बीचमे अछिए जे एक उपकार भेल अगुरवार, माने जिनकर कोनो उपकार ऊपरमे नहि अछि, तिनकर उपकार, दोसर अछि जीवनमे उधार उपकारक कर्ज। माने भेल जे जहिना जीवनक एक पलड़ा भेल जन्म आ दोसर भेल मृत्यु, तइ दुनूक बीच ने सभ छी, जे माए-बाप जन्मक पछाइत बच्चाकेँ धरतीपर ठाढ़ करै छैथ, ओते कएल काजक, ऐठाम सेवा नहि, दायित्वक दायित्व बेटा-बेटीक कपारपर चढ़िये जाइ छैन, जेकरा दायित्वपूर्ण उधार उपकार कहि-बुझि

---

[7] **कर्तव्य**

[8] **निरविचार**

सकै छी। तहूमे एहेन दायित्व जे ने बिसरल जा सकैए आ ने छोड़ल जा सकैए। तैठाम जँ बेटा-बेटी माए-बापकेँ कहैथ जे अहाँ की केलौं, दुखद भेबे कएल। ऐठाम एकटा बात आरो अछि। ओ अछि जे दुखक सेहो सीमा नहियेँ अछि। तन-मन-धन-जन, केते कहब, असीम दुखक सीमान अछि। तैठाम दोसर बात सेहो अछिए। भलेँ ओ विपरीते किए ने हुअए मुदा अछि तँ जरूरे। की ओहन माए-बापकेँ ई नहि पुछल जानि जे जखन बेटाकेँ बेचि[9] नेने छी, तखन अहाँकेँ ओइ बेटा-पुतोहुपर कोन अधिकार बँचल अछि? जे मुँह उठा बेटा-पुतोहु दिस देखब। खाएर जे अछि, बुझले बात अछि जे जहिना समुद्र अछि तहिना समाजो अछिए। नीक-बेजा होइते रहैए। नीक-बेजाइक माने भेल, एकटा नीक एकटा बेजाए , मुदा एहनो नीक अछिए जे जगह आ समय पेब अधला बनि जाइए आ एहनो बेजा अछिए जे समय पेब नीक बनि जाइए। ऐठाम तँ वेदक मंत्र देखए पड़त किने, 'गुणरहितं कामनारहितं प्रतिक्षण वर्धमानमविच्छिन्नं सूक्ष्मतरमनुभवरूपम्।'

जुड़शीतल पावनिक पोखरिक पानि जकाँ जीवन थहाएलो आ बलुआएलो तँ अछिए। जहिना एकटा धुरियाएल अछि तहिना दोसर सुढ़ियाएल सेहो अछिए। एहने फेड़मे पड़ि ने गियानचन ओझरा गेल छैथ। बेवश-बेकाबू भेल मन जेठक रौदियाएल हाथी जकाँ चितकार मनमे मारिये रहल छेलैन। एकाएक दरबज्जापर सँ उठि गियानचन अपन बाल मित्र- सुमतिलाल ऐठाम विदा भेला। मन तेते चितैर गेल छेलैन जे रस्ता, माने अपना ऐठामसँ सुमतिलालक घरक बीचक बाट, केना कटलैन से अपने बुझबे ने केलाह। मन असथिर रहितैन तखन ने बुझितैथ जे रस्ता अपना कटैए आकि अपने रस्ताकेँ काटै छी। उद्विग्न देखि सुमतिलाल फरिक्केसँ बुझि गेला जे गियानचन समयक कोनो फेड़मे पड़ल अछि।

[9] **विवाहक दहेज रूपमे**

अखनुक दरबज्जाक चर्च नहि करै छी, पूर्वक मिथिलाक चर्च करै छी, समाजमे किछुए परिवार एहेन छला जिनका अपन परिवारसँ बेसी सुतै-बैसैक जगह दरबज्जाक रूपमे छेलैन। जेना-जेना पाछू उनैट देखब तेना-तेना पछुआएल स्थिति नजैरिक सोझमे औत। आइये नहि सभ दिनसँ अपना ऐठाम दरबज्जाक महत्व रहल अछि। परिचित-अ-परिचित सबहक लेल सार्वजनिक स्थल बना पूर्वज अपन मर्यादा बनौने छलाहे। मुँह देखि मुँगबा बँटैक कला छेलैन्हे। भुखल-दुखल वा रूखल-सुखल सभकेँ मुँगबा खुआ मुँह मिठा दरबज्जापर समय बितैबते छला। अखुनका चर्च नहि करै छी, जे गज-फीतासँ घराड़ियो नापल जाइए आ धरती-सँ-अकास धरिक बिकरी सेहो हुअ लगल अछि। मुदा तहू बीच की ओहन लोक नहि छैथ जिनका अप्पन घराड़ी नइ रहने इन्दिरो आवास नहि भेटै छैन? गरीबक सेवा तँ भइये रहल अछि, मुदा भीखमंगाक संख्या सेहो बढ़ि रहल अछि, ईहो ने देखब। जैठाम भीखमंगाक पेट नहि भरल अछि तैठाम सम्पन्नता की भेल।

सुमतिलालमे एते होश छेलैन्हे जे जहिना चेहरा देखि केकरो जीवन आँकि लइ छैथ तहिना मुँह देखि जीवन-चरित्रक बोध सेहो भइये जाइ छैन। उदिग्न चेहरा देखि सुमतिलाल गियानचनकेँ कहलैन-

“आबह-आबह गियान। केतए हेराएल रहै छह।”

सुमतिलालक विचार सुनि गियानचनक मनमे उठलैन जे जँ पहिने अपन मनोदशा कहबैन तँ ओ धड़फड़ा कऽ बाजब हएत। तँए पहिने किए ने अपन मनक विचार नहि कहि विचारक चौहद्दीए बान्हि ली। गियानचन बजला-

“भाय साहैब, लोक तँ ओतए हेराइए जेतए अगम-अथाह समुद्र जकाँ जीवन देखैए मुदा जैठाम दुनियेँ हेरा गेल अछि तैठाम लोकक हेराएब केना भेल।”

गियानचनक विचार सुनि सुमतिलाल बुझि गेला जे, जे गियानचन दुनियाँकेँ हेराएबक चर्च कऽ रहल अछि ओ अपने नहि हेराएल अछि, मन केतौ लसकामे लसैक गेल छइ। अपन विचार उठबैत सुमतिलाल बजला-

"गियानचन, तेहेन समय आबि गेल अछि जे मन सदिकाल रेजानिस-रेजानिस रहैए। करवनो एक घन्टा बैस दोसरो-तेसरक जीवन-यापनक विचार करब से पलखैतिये ने होइए।"

अपना जनैत सुमतिलाल सभ बात बाजि गेला मुदा गियानचनक उदिग्न मन रहने नीक जकाँ बुझबे ने केलकैन। गियानचन बजला-

"सुमति भाय, भरि दिन औनैनी-बिलौनी धेने रहैए। केतबो मनकेँ जाँति कऽ राखए चाहै छी, से रहबे ने करैए।"

गियानचनक भाव भूमि सुमतिलाल आँकि लेलैन, मुदा ठोह फाड़ि कहैसँ परहेज करैत बजला-

"गियानचन, मन कि जाँतिकऽ रहैबला छी, उ तँ एहेन भूत छी जेकरा काजमे[10] जखन बान्हिकऽ राखल जाएत तखने जाँतिकऽ रहि सकैए, नहि तँ औनेबो-वौएबो करत।"

सुमतिलालक विचारक शब्द सुनि गियानचन भावुक भऽ गेला मुदा शब्दक भीतर जे मर्म अछि से बुझबे ने केलैन। विह्वल होइत पुछलखिन-

"से केना भाय साहैब?"

गियानचनक विह्वलता देखि सुमतिलालक मन विचार देलकैन माने सुमतिलालकेँ कहलकैन, खिस्सा-पिहानीसँ लोक बेसी बुझैए आ सोझे शब्दवाणसँ कम बुझैए। कथा-पिहानीमे ई शक्ति केना अबैए, से अखन नहि, अखन बस एतबे जे शब्द-शक्ति जेते मृत्युवान अछि तइसँ कम कथाशक्ति अछि। सुमतिलाल बजला- "एकटा खिस्सा सुनबै छिअ, गियानचन। एकटा ऋषि रहैथ, अपन सम्बन्ध दुनियासँ हटा अपनाकेँ

[10] **कर्ममे**

अपनेमे समेट नेने छला तँए असगरे रहैथ।”

बिच्चेमे गियानचन बजला-

“पत्नियोँ ने रहैन?”

सुमतिलाल बजला-

“कियो ने रहैन। संयोगसँ एकटा भूत आबि उपद्रव करए लगलैन। कहियो कॉपीक पन्ना उलटा कऽ राखि दैन तँ कहियो किताबक जगहे बदैल कऽ राखि दैन। तंग होइत ओ ऋषि भूतकेँ कहलखिन, तूँ एना किए करै छह? तैपर ओ भूत कहलकैन, हमरा संच-मंच बैसल नीक नइ लगैए। तँए उपद्रव करै छी। ऋषि कहलखिन, बस तहीले। हाथक इशारासँ आगूमे ठाढ़ भेल आमक गाछकेँ देखबैत ऋषि कहलखिन, ऐ गाछपर सदिकाल चढ़ैत-उतरैत रहह। भूत सएह करए लगल। तइसँ ऋषि चैन भऽ गेला।”

सुमतिलालक सभ बात गियानचन नहि बुझि सकला मुदा एते तँ बुझबे केलाह जे भरि मन काज जखन केकरो भेट जाइए तखन अनायासे ने जीवन पाबि जाइए।

गियानचन बजला-

“भाय साहैब, अखन जाइ छी। फेर कहियो.. ।”



शब्द संख्या : 2281, तिथि : 12 अप्रैल 2022

विचारे मरि गेल

सत्तैर बर्खक अवस्थामे चिन्तू भायकेँ पंचायत-चुनावक पछाइत भान भेलैन जे विचारे मरि गेल। ओना, गाम-समाजमे सभ दिनसँ सुनियो आ देखियो रहले छला आ छथियो जे अनेको मुँह भरि दिन सत्यक दोहाइ दऽ दऽ दैत मथदुक्खीकेँ माथपर हाथ दऽ दऽ दुख भगैबते अछि, मुदा तइसँ विपरीत विचार चिन्तू भाइक मनमे जगलैन। जगलैन ई जे असत्य केना सत्य बनैए आ सत्य केना असत्य बनि जाइए।

असगर दरबज्जापर बैसल चिन्तू भाय अपन विचारकेँ निचोड़ि आगूसँ पाछू धरि, जहिना अंकक गिनती सुनटो होइए जेना एक, दू, तीन, चारि आ तहिना सैंया निनानबे, अनठानबे, सन्तानबे., माने उनटो तँ होइते अछि, तही अनुकूल, सत्तैर बर्खक सीमापर ठाढ़ भऽ निछोहे पाछू मुहेँ दौड़ला कि पैछला, जेकरा पूर्वक माने ऐगला सीमापर देखलैन जे जखन अपन बाप-पुरुखा जंगली रूपमे छला, खेती-पथारी नइ करै छला, माने खेती करैक लूरि नहि छेलैन, खेतक जोत-कोर नहि भेने गाछी-बिरछीसँ भूमि भरल छल, तहू समयमे लोककेँ लोक पकैड़-पकैड़, पकड़ैक पाछू मारब-पीटबसँ लऽ कऽ अनेको क्रिया-कलाप धरिक उद्देश्य छल, अपन सुविधाभोगी जीवन बनबैत गेल। जइसँ शासक आ गुलामक शुरूआत भेल। लगले चिन्तू भाइक नजैर पुरुख-नारीक भेदपर सेहो पड़लैन, ई तँ प्रकृत-प्रदत्त अछि। खाएर जे अछि अखन तेमहर नहि जा अपन गाम आ गामक पंचायतकेँ अँखियबए लगला- स्वतंत्रताक पछाइत,

माने 1947 इस्वीक पछाइत जखन पंचायतक गठन भेल आ पहिल बेर पंचायत चुनाव भेल, तँ ओइमे तीनू तरहक लोक चुनल गेला, पहिल जे गामक जमीन्दार मालिक छला से, दोसर जे आजादीक आन्दोलनसँ जुड़ि नेतृत्व प्राप्त केने छला ओ आ तेसर गामक जे सामाजिक लोक रहैथ से। सामाजिक लोकक माने भेल समाजक काज–बिआह, श्राद्ध आदिमे–सहयोग करैबला, प्राय: यएह तीन तरहक लोक मुखिया-सरपंच भेला।

सामाजिक बेवस्थाक जे गति पंचायतक छल ओ पहिलुके माने अंगरेजीए शासनक समयक रहल। कोनो-कोनो गाममे शिक्षण संस्थान छल, अधिकतर गाममे नहियेँ छल। गोटि-पङ्गरा खुजए लगल। अन्नक अभाव देशमे छेलैहे। ओना, सरकारी स्तरपर कोटो आ खैराँतो चलिये रहल छल मुदा ओ सीमित मात्रामे। स्वतंत्रतासँ पूर्वेसँ, जखन भारत-पाकिस्तानक बँटवाराक विचार उठल, तहियेसँ छिटफुट रूप दुनूक बीच विद्वेषक जन्म सेहो भेल। जइसँ छिट-फुटमे अनेको जगह झगड़ा-लड़ाइ सेहो बजड़ए लगल। तैसंग विचारक भिन्नता सेहो भीतरे-भीतर जोर पकैड़िये रहल छल।

एक तँ नव-नव देश स्वतंत्र भेले छल तैपर अंगरेज बहादुर सेहो जाइत-जाइत अनेको समस्या देशमे ठाढ़ कऽ देलक आ अपन जे देशक पिछड़ापनक समस्या छल, सेहो रहबे करए। पहिल चुनावक पछाइत, माने 1952 इस्वीमे पहिल आ 1956 इस्वीमे दोसर चुनाव भेल छल, रंग-रंगक धाँधली शुरू भेल। धाँधलीक माने भेल खास आदमीक द्वारा आमजनक भोँट खसाएब, दोसर दिस पंचायतक रूपमे सेहो मोड़ आएल। मोड़ ई आएल जे जातिक आधार तैयार हुअ लगल। तेकर हानि-लाभ सेहो किछु पंचायतमे भेबे कएल। चुनावक गड़बड़ीक कारणेँ केस-मोकदमाक शुरूआत सेहो भेल। होइत-हबाइत एहेन भऽ गेल जे समयपर चुनाव हएबे बन्न भऽ गेल।

गाम-गाममे जातिक ध्रुवीकरणक संग साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण सेहो

हुअ लगल। तैसंग गामक जे रूप-रेखा छल, माने किछुए गाम एहेन छल जे जनसंख्याक हिसाबसँ पंचायत बनै-जोकर छल बाँकी छोट-छोट गाम रहने, पंचायितक जनसंख्याक अनुपातमे, अनेको गाम मिला-मिला पंचायत बनल। जइसँ गाम-गामक बीच ध्रुवीकरण सेहो हुअ लगल। जेकर फलाफल भेल जे किछु गोरेकेँ सरकारी सुविधा भेटैत रहल बाँकी लोक ओइ सुविधासँ वंचित रहल।

1967 इस्वीक लोक सभासँ विधान सभा धरिक चुनावक पछाइत शासन तंत्रमे मोड़ आएल। अखन तक माने 1967 इस्वीसँ पूर्व तक जे काँग्रेस पार्टीक एकक्षत्र शासन छल ओ केरल राज्यमे टुटल मुदा बाँकी सभ राज्यमे रहबे करइ। 1967 इस्वीक चुनावमे शासनसँ परेशान जन-गण काँग्रेसी शासनक विरोधमे अबाज उठौलैन जइसँ कएगो राज्यमे शासन बदलबो कएल। ओना, शासन टिकाउ नहियेँ भेल मुदा किछु एहेन राजनीतिक दल सभक प्रवेश सत्तामे भेबे कएल जइसँ अखन धरिक अबैत शासन तंत्रमे धक्का लगल। 1977 इस्वीक चुनावमे राज्यक संग देशोक चुनावमे माने लोको सभामे काँग्रेसकेँ नमहर हारि भेल। एक दिस पार्टीक नमहर हारि भेल, माने आन-आन पार्टीक जीत भेल मुदा आन-आन पार्टी बनैमे काँग्रेसे पार्टीक लोक सभ नव-नव पार्टियो बना आ दोसर-दोसर पार्टियोमे मिलि-मिलि पुन: लोको सभा आ विधानो सभामे पहुँचबे केलाह, जइसँ सत्तामे जेते सुधारक खगता छल से तँ नहि भेल मुदा किछुओ सुधार नहि भेल सेहो बात नहि, किछु-किछु भेबे कएल।

अखन तक समाजमे सेहो आ सत्ता-शासितक बीच सेहो खाइ बनले छल। ओना, 1946 इस्वीक पछातिये जमीन्दारी उन्मूलन कानून बनि गेल छल, जइसँ जमीन्दारक अधिकार क्षेत्रमे कमी एबे कएल मुदा जमीन्दारी बेवस्था एतेक जटिल आ सघन छल जइसँ बहुत अधिक प्रभाव नहि पड़ल। हँ, एकटा ई जरूर भेल जे जे मालगुजारी माने जमीनक टैक्स, जमीन्दार आ मालिक-मलिकान, माने छोट-छोट

जमीन्दार मालिक, असुलै छला से बन्न भेल। ओना, खेतक सम्बन्धमे भूदानी आन्दोलन सेहो शुरू भेल जइमे जमीन्दार मालिक सभ स्वेच्छासँ अपन कुल-जमीनक छबम् भाग दान केलैन। मुदा ओहो आन्दोलन एहेन विकृत रूप पकैड़ लेलक जे गाम-गाममे जमीनक लड़ाइ शुरू भऽ गेल। जहिना एक दिस जमीन्दार मालिक जमीनक पक्षमे ठाढ़ भेला तहिना आम जनगण माने भूमिहीन लोक सभ, अपन-अपन घराड़ी आ बटाइदारीक प्रश्न लऽ कऽ ठाढ़ भेला। जइसँ गामो-गाम आ इलाको-इलाकामे भूमि आन्दोलन शुरू भऽ गेल। फलाफल दखल-दिहानीक अनेको मोरचा तँ बनबे कएल जे केस-मोकदमाक अड्डा सेहो बनि गेल। खाएर से अखन नहि। अखन एतबे जे लोक सभा आ विधान सभामे आनो-आन पार्टीक माने राजनीतिक दलक आगमन भेने सत्तामे जनपक्षधरता बढ़ल। ओना, देशक आर्थिक स्थिति सेहो ओतेक बढ़ियाँ नहियेँ छल जे देश अपन संसाधनपर समुचित विकास कऽ सकैत। जखन कि देशक भीतर संसाधन नहि छल सेहो बात नहि, से छल मुदा ओ मात्र किछु गनल-चूनल लोकक बीच छल। बहुसंख्य आवादी माने जनता ओइसँ अलग छला। जीवनक मूल आधार पेटक समस्या छी, जे भरपूर छल। भुखल-दुखलक जीवन आम लोकक छेलैहे।

तइ बीचमे दू बेर देश-देशक बीच लड़ाइ सेहो भेल। 1964 इस्वीमे चीनक संग आ 1971 इस्वीमे पाकिस्तानक संग लड़ाइ भेल। एकर अतिरिक्तो छोट-छोट आकारमे पाकिस्तानक संग आरो लड़ाइ भेबे कएल छल। खाएर जे भेल मुदा 1965 इस्वी अबैत-अबैत किसानी जीवनमे किछु सरकारी सुविधा भेटने एकाएक किसान एते जागि गेला जे देशक जनसंख्याक हिसाबसँ अन्नक उत्पादन कऽ लेलैन। अन्नक उत्पादन तँ भेल मुदा सभक पेट तक अन्न नहि पहुँचल। जमाखोरक बीच जमा भऽ गेल। जेना-जेना समय बितैत गेल तेना-तेना स्वतंत्रता संग्रामक सिपाही सभ सेहो मरैत गेला। रसे-रसे समाजमे सेवाक रूपेँ बदैल गेल।

मानवीय विचारमे सेवा बटवृक्ष सदृश्य अछिए। जहिना बड़क गाछक रूप सघन होइए तहिना जीवनमे सेवाक रूप सेहो सघन अछिए। सघनताक माने ई जे प्राय: सभ तरहक गाछ-बिरीछक जड़िमे सिर होइते अछि, तैसंग ईहो ने होइए जे कएटा गाछक डारियोक फेँड़सँ सिरक सृजन होइए। जइसँ आन-आन वृक्षक अपेक्षा ओकरा संग धरतीक सम्बन्ध सघन भऽ जाइए। अहिना जीवन रूपी वृक्षमे सेवाक रूप सेहो अछि। एक सेवा ओहन होइए जे संकल्पित रूप पकैड़ जीवन दान करैए आ दोसर ओहन की नइ होइए जे अनके जीवन लूटि-मारि कऽ अप्पन बना चलबो करैए आ उपकारी बनि ऋणदाता सेहो बनैए। खाएर जे बनैए जेतए बनैए तइसँ चिन्तू भायकेँ कोन मतलब छैन, मतलब छैन अपन जीवन आ अप्पन विचारसँ।

1967 इस्वीक पछातिक जे चुनाव भेल तइमे पैछला ध्रुवीकरण, माने भोँटक ध्रुवीकरण जे जातीय आ साम्प्रदायिक आधारक छल, तइमे मोड़ आएल। राजनीतिक दल बदलल, शासन सत्ताक संग बेकती-बेकतीक बीच पहचानोमे परिवर्तन भेल। जइसँ समाजक बीचक भोँटक जे ध्रुवीकरण छल, तेकरा पाइक हाथे तोड़ैक प्रक्रिया शुरू भेल। ओना, अखन तक समाजमे दाब-चापक प्रथा सेहो छेलैहे, मुदा तइमे केतौ-केतौ विशेष रूपमे आ केतौ-केतौ नगण्य रूपमे, मोड़ सेहो आएल। अझुका जकाँ परिवेश नहि बनल छल जे भोँट-भोँटक मूल्यमे माने पाइक लेन-देनमे डाक-डकौवलि भऽ रहल अछि। तइ दिनमे एक तँ शुरूआती रूप छल, दोसर डाक-डकौवलिक परिवेश अझुका जकाँ नहि बनल छल। एक तँ समान्य जनगण अभावक छल दोसर सामन्ती संस्कारसँ दाबल जीवन सेहो रहबे करइ, जइसँ पाइक बाजारकेँ माने भोँटक खरीद-बिकरी लेल परिस्थित अनुकूल भेल। ओना, कारोबार सीमित दायरामे छल मुदा अनुकूल बनबै दुआरे जड़ि तक माने साधारण जीवन तक पहुँचबे कएल।

गाम-समाजमे एकटा दोसरो स्थिति बनल। ओ बनल जे जाति-

जातिक बीच, गाम-गामक बीच आ सम्प्रदाय-सम्प्रदायक बीच, झगड़ा-झंझट बढ़ल। जइसँ शासन तंत्रक खगता सेहो बढ़ल। 1972-73 इस्वीमे बिहारक जिला-अनुमण्डल आ ब्लौकमे बढ़ोत्तरी भेल। संग-संग ईहो भेल जे जैठाम एकटा बी.डी.ओ. ब्लौक सम्हारै छला तैठाम तीन-तीन गोरेकेँ माने बी.डी.ओ; सी.ओ; पी.ओ.केँ भार भेटलैन। किसानकेँ खेती करैले उधारी खाद, कीटनाशक आ बीजक सुविधा भेटलैन। दोसर दिस 1971 इस्वीक बंगला देशक लड़ाइ, देशक वुधिजीवी लोकक बीच बढ़ने अप्पन शक्ति बढ़बैक विचार उठलैन, जइसँ खेतीमे सेहो नव चेतनाक आगमन भेल।

नव चेतनाक आगमनक पूर्व तक, माने भेल 1970 इस्वीसँ पूर्व तक, खेतमे रसायनिक खादक उपयोग किसान नहि करै छला, जेकर उपयोग भेने उपजमे काफी बढ़ोत्तरी भेल, तहिना कीटनाशकक उपयोगसँ फसिलक गुणवत्तामे सेहो वृद्धि भेल आ उपजमे सेहो बढोत्तरी भेल। तहिना नव-नव अनुसन्धान भेने, उन्नतिशील बीजक अनुसन्धान सेहो भेल। तैसंग सरकारी स्तरक संग किसानकेँ बैंकसँ लोनक सुविधा भेटने खेतीक यंत्र सभक आगमन किसानक बीच सेहो भेल।

1990 इस्वीक पछाइत पंचायक पुनर्गठनक संग-संग पंचायती बेवस्थामे नारीक प्रवेश भेल। पहिलुका अपेक्षा पंचायतक संख्या सेहो बढ़ल। ओना, महिलाक संग पिछड़ी जाति आ हरिजनक भगीदारी सेहो पंचायती बेवस्थामे बढ़बे कएल, मुदा समुचित रूपमे नहि बढ़ने अव्यवस्था सेहो रहबे कएल। पछाइत महिलाक आरक्षणमे थोड़ेक बढ़ोत्तरी सेहो भेल जइसँ अधा-आधीक सीमापर महिलाकेँ जरूर ठाढ़ कएल गेलैन मुदा महिलाक प्रति जे समाजमे बेवहार अछि तइमे संतोषजनक बदलाव नहियेँ आएल अछि।

मास दिन पंचायत चुनावकेँ भऽ गेल। चुनावक पूर्व जे अपन सम्बन्ध गाम-समाजमे छल तइमे बहुत कमी भेल। अखन तक माने

चुनावसँ पूर्व तक जिनका सभक विचारकेँ समाजक लोक अनुकरण करै छला, तइमे कमी आएल। ओना, समाजमे बहुसंख्य लोक ओहन छलाहे जे अपनाकेँ विचारवानक संग चरित्रवान सेहो बुझै छला, तिनका सभक विचारो आ चरित्रो खण्डित भेबे केलैन। माने ई जे जैठामक समाज अपन अधिकार-कर्तव्यक आधारपर, अपनाकेँ स्वतंत्र देशक स्वतंत्र नागरिक कहबैक शक्ति रखै छला, तिनकर अधिकार क्षेत्र कमलैन। कमैक कारण भेलैन जे समाजमे लोक बिकाउ माल बनि गेला।

समाज दिस टहलैले जखन मन उबिआएल तँ मने-मन विचार केलौं जे गामे जखन उजैड़ गेल तखन टहलब केतए। गामो तँ गाम छीहे जे समुद्रोसँ गहींर अछि।

मने-मन विचारिये रहल छेलौं कि अपने मनक शक्ति अनायास उमैड़ पड़ल। उमड़ल ई जे जखन अपन जीवन अपना मुट्ठीमे राखि जीब रहल छी तखन जँ समाजमे माने गाममे, अगराहीए लागि गेल तँ लागि जा, तइसँ अपना कोन अवघात अछि। तखन तँ रहल जे सामाजिक जीवन भेने मनुक्ख तँ मनुक्खे लग बैसकऽ मन बहलौता। एकाएक विचारमे मोड़ आएल, चिन्तू भाय ऐठाम विदा भेलौं।

दरबज्जापर चिन्तू भाय असगरे बैसल किछु सोचि रहल छला कि पहुँचते बजलौं-

“चिन्तू भाय, बहुत दिनसँ भेँट नहि भेल छलौं, तँए मन उबिया लगल जइसँ काजे बेरमे काज बरदबए एलौं हेन।”

जहिना देहपर बैसल माछी-मच्छड़केँ लोक हाथसँ उड़ेबो करै छैथ आ मारबो तँ करिते छैथ तहिना चिन्तू भाय बजला-

“नइ-नइ, काज बरदबए केना एलह, देखिते छहक जे दरबज्जापर बैसल-बैसल समय काटि रहल छी। की हाल-चाल छह?”

अखन तक चिन्तू भायकेँ प्रणाम नहि केने छेलिऐन। ओना, मनमे

तेहेन कुवाथो नहियेँ छल, किए तँ एहेन-एहेन लोककेँ प्रणाम करबे, प्रणामक अनादर हएत। मुदा लगले मन कहलक, जखन घरपर सँ चिन्तू भायसँ भेँट करए विदा भेलौं तखन चिन्तू भाय मानि कऽ ने। बजलौं-

"भाय, प्रणाम करब छुटि गेल छल, तँए पहिने प्रणाम करै छी, पछाइत हाल-चाल करब।"

जहिना अपने बजलौं तहिना कनी पाछू डेग बढ़बैत चिन्तू भाय बजला-

"एना किए बजलह महेश। हमरा तोरामे अन्तरे की अछि जे प्रणाम करब छुटि गेलह ते बड़ भारी जुलुम भऽ गेल। जखन भाए-भैयारीक सम्बन्ध अछि तखन जँ भाय कहलह तँ यहए ने भेल प्रणाम करब।"

चिन्तू भाइक विचार अपनो मन मानि लेलक। बजलौं- "हँ से तँ भेबे कएल। मुदा जे अपना समाजमे चलैन अछि तइ अनुकूल तँ किछु अन्तर भेबे कएल।"

जहिना अपने बजलौं तहिना चिन्तू भाय बजला- "हँ से तँ भेबे कएल।"

बजैक क्रममे तँ चिन्तू भाय बाजि गेला मुदा अपने मनक भीतर ठहकलैन जे ऐ बेरक चुनावमे ओहन काज तँ करबे केलौं जेहेन आइ धरि नहि केने छेलौं। ओना, मनमे ईहो उठिते रहैन जे तेसर तँ कियो आन नहि बुझलक जे पाइ लऽ कऽ भोँट बेचलौं अछि। जँ अपन इमाने भोँट दैतिऐ तँ रूपलालकेँ दैतिऐ, किए तँ वएह टा एहेन बेटा समाजमे अछि जे बिसवास करै-जोकर अछि। बाँकी जे अछि से तँ चोर-चोट्टा अछिए। मुदा लगले अपन मन ईहो तोष-भरोस दइते रहैन जे जहिना दुइये गोरेक बीच लेन-देनक कारोबार भेल, तेसर नहि बुझि पौलक, तहिना भोँटो तँ असगरेमे खसेलौं, तखन तेसर बुझबे के केलक जे दुसत। ई बात चिन्तू भाइक मनमे एबे ने केलैन जे अपने नइ केतौ बाजब, मुदा रंगलाल माने

जेकरासँ पाइ लऽ कऽ भोँट देने छला, उहो केतौ नइ बाजत तेकर कोन बिसवास अछि। समाजसँ देश-दुनियाँ तक एक-पर-एक खेलाड़ियो अपन करामात कइये रहला जे बिना बजनौं-कहनौं बुझिये लइ छैथ। ई तँ सोभाविक प्रक्रिया छीहे जे एक-स्तरक सोचमे एक्के स्तरक विचार मनमे अबैए। तैसंग ईहो बात तँ अछिए जे एक-एक भोँटक जखन लोक गर लगा हिसाब जोड़ै छैथ तखन बिनु बजलोहो-कहलोहोक हिसाब जालमे फँसिये जाइए।

अपना ई बात विश्वस्त रूपेँ जानकारी छल जे चिन्तू भाय सपरिवार रंगलालक हाथे बिका भोँट खसौलैन अछि। मुदा ईहो तँ संकट समाजमे अछिए जे जखन सौंसे समाजे राक्षसक लंका बनि जाएत तखन लोक रहता केतए आ गप-सप्प किनकासँ करता। धरमागती बात कहै छी विभीषण जकाँ जीबैक लूरि नहि भेल अछि। अखनो बुझि पड़ि रहल अछि जे जखन हाथमे बल अबैए तखन मुट्ठी बन्हाइए आ बान्हल मुट्ठीक बलेँ विभीषण जकाँ समाजमे विचरण करैत लोक अपन जीवन गुदस कइये सकै छैथ।

एकाएक मन, दुनियाँक दू धुरीक बीच कहियौ आकि तराजूक दू पलड़ाक बीच पहुँच गेल। भूगोलक भाषामे विषुवत रेखा कहियौ जे जीरो डिग्री अक्षांस छी आकि सामाजिक भाषामे तराजूक डंडी कहियौ, बीचमे अपनाकेँ बीचियबैत बजलौं-

“भाय, ऐ बेरक पंचायत चुनावमे तँ अनहोनी होनी भऽ गेल आ होनी अनहोनी।”

हमर बातक वैचारिक चोट चिन्तू भाइक मनमे जेना ठहकलैन तहिना अपनाकेँ बेहोशसँ होशमे आनैत बजला- “सएह देखहक.!”

चिन्तू भाइक हाव-भाव जरूर कहैत रहैन जे महेश भरिसक बुझल बात बजैए। मुदा बुझलो बातकेँ लोक बिनु बुझल कहिते अछि। कोन बात नइ बाजी वा केते बाजी वा केते नहि बाजी, ई दीगर भेल, मुदा

बुझल बातसँ नठब तँ अनुचित भेबे कएल। मनक उत्साह जेना उधुक्का मारि विचार देलक जे अपराधीक मुँहपर बाजबे ने वाणीकेँ शक्ति प्रदान करैए। परोछा-परोछी तँ सभकेँ-सभ तीत-मीठ कहिते अछि। बजलौं-

“चिन्तू भाय, अहूँ सभ कुछ देखिते छी, मुदा गामक गप छी तँए कहै छी।”

अपन बात नीक जकाँ विरामक सीमापर पहुँचलो ने छल कि बिच्चेमे चिन्तू भाय बजला- “की गामक गप?”

कहलयैन- “केते गोरेक मुहसँ निकैल रहल छैन जे चिन्तू भाय सेहो बिका गेला।”

बिकाइक नाओं सुनिते चिन्तू भाय बजला-

“महेश तोरा लग झूठ नहि बाजब। दवाबमे आबि..।”

चिन्तू भाइक बोलीमे जेते उदासीपन छेलैन तइसँ बेसी मुँहक रूपमे छेलैन। अपनाकेँ संयमित करैत बजलौं-

“दुनियाँमे मनुक्खेटा मे एहेन गुण अछि जे विषकेँ अमृत बनबैए आ अमृतकेँ विष। जे भेल से भेल, जँ किछु ले अधला भेल तँ किछु ले नीको भेबे कएल।”



शब्द संख्या : 2302, तिथि : 21 अप्रैल 2022

मृत्युक भय मेटा गेल

अड़सठ बर्खक अवस्थामे आइ भोरेसँ रमानन्दक मनमे खुशीक लहैरिक जुआइर जोर मारि रहल छैन। मनमे एहेन उत्सुकता जगि गेलैन जे क्षणे-क्षणे मनमे उठए लगलैन- केकरा कहिऐ आ केकरा नइ कहिऐ। ओना, अपने मन बेर-बेर ईहो चेतौनी दइते रहैन जे नीक विचार तँ सभलग बाजल जा सकैए। कोनो कि अधला विचार छी जे किनको मनमे कुवाथ हेतैन। मुदा अपने मन ईहो कहैन जे नीक रहअ कि अधला, विचारो वा काजो, समय पेब व्यक्त करब नीक हएत। गामो-समाज तँ गाम समाज छीहे, जैठाम बाबा आदमसँ लऽ कऽ माने आदि मानवसँ, आजुक मानव धरिक इतिहासक स्वरूप अछिए। एक दिस हवाइ भ्रमणक शक्ति सेहो रखनहि अछि। जहिना सभ दिनसँ होइत आबि रहल अछि जे अश्वमेघ यज्ञ हुअ कि लक्ष्यमेध, शुभेक्षुसँ माने रक्षकसँ लऽ कऽ विघटनकारी राक्षस सेहो अछिए। तैठाम तँ यएह ने नीक हएत जे राक्षसक रूपेँ बदैल दिऐ। माने भेल अवघात करैबलाकेँ घात करैबला रक्षक मानि ली। दुनियाँक रूप एहेन अछिए जे एक्के वस्तु घातको अछि आ अवघातको अछिए। देखिते छी जे जहिना 'घी' अमृत छी तहिना 'मधु', दुनू अमृत छीहे, मुदा दुनूक मात्रा जँ एकरंग भऽ जाएत तखन ने ओ विष बनत। आ जँ कम-बेसीक मात्रा रहत तँ अमृत बनबे करत किने। तहिना आनो-आन वस्तु जगतमे अछिए।

अपन मनक खुशीक जुआइर लहैर जकाँ आगू बढ़ैत देखि

रामानन्द दरबज्जापर सँ उठि कृष्णानन्दक ऐठाम विदा भेला।

रमानन्द आ कृष्णानन्द बच्चेसँ संगीक रूपमे आबि रहल छैथ। ओना, दुनू गोरे दू टोलेक नहि दू जातिक सेहो छैथ। जाति बेवस्थाक रूप समाजमे केहेन अछि से तँ सभ जनिते छी। खाएर जे अछि तइसँ रमानन्दे आकि कृष्णानन्देकेँ कोन मतलब छैन। मतलब एतबे छैन जे केना समयक संग अँटावेश करैत चैनसँ जीवन यात्रा करैत रही।

रमानन्दक बाबा सिंहेश्वर आ कृष्णानन्दक पिता मनोहर, दुनूक बीच दोस्ती छेलैन। ओना, रमानन्द सिंहेश्वरक तेसर पीढ़ीमे छैथ आ कृष्णानन्द मनोहरक दोसर पीढ़ीमे। दोस्तीक लेल सीमा निर्धारित नहियेँ अछि। एको उमेरक बीच दोस्ती होइए आ कमो-बेसीक बीच सेहो होइते अछि। मुदा से नहि, चारि-पाँच बर्खक अन्तर दुनू गोरेक बीच छेलैन। मनोहरसँ पाँच बरख जेठ सिंहेश्वर छला। मध्यवर्गीय जातिक दुनू गोरे रहैथ। जहिना मध्यवर्गीय जातिक, ओना वर्गक आधारपर बँटल जातिमे कर्मो बेवहारमे अन्तर अछिए, से अखन नहि। अखन एतबे जे एक गाम आ एक स्तरक जाति रहने दुनू परिवारक किरियो-कलाप एकरंगाहे छेलैन। ओना, पावनिक रूपमे दुनू परिवारक बीच किछु भिन्नतो छैन आ किछु अभिन्नतो छैन्हे। जेना घड़ी पाबैन सिंहेश्वरक परिवारमे होइ छैन आ चौरचन पाबैन नइ होइ छैन, तहिना मनोहरक परिवारमे घड़ी पाबैन नइ होइ छैन आ चौरचन होइ छैन, जइसँ दुनू परिवारमे पावनिक बेन-तिहार चलैत आबि रहल छैन। माने ई जे घड़ी पाबैनमे रमानन्द कृष्णानन्दकेँ बेन दइ छैथ आ चौरचनमे कृष्णानन्द रमानन्दकेँ। ओना, दुनू गोरेक परिवारक बीच एहनो काज अछिए जे दुनू गोरेक परिवारमे होइ छैन, जेना बिआह, श्राद्ध; मुदा तेकर जहिना समय निर्धारित नहि अछि तहिना अपनोसँ समय निर्धारित कएले जाइत अछि, जइसँ दुनू परिवारक बीच आबाजाही भइये जाइए। मुदा पावनिक हिसाब दोसर रंग अछि, किछु पाबैन सामुहिक उत्सवक रूपमे मनौल जाइए आ किछु पाबैन खण्डित रूपमे सेहो मनौले

जाइए। खाएर से अखन नहि, अखन बस एतबे जे सिंहेश्वर आ मनोहरक बीच एहेन दोस्तियारे बनले छैन जे पाबैनसँ लऽ कऽ बिआह-दान, लेन-देन तक, लेन-देनक माने भेल समय-कुसमय एक-दोसरकैं अनो-पानि आ रुपैओ-पाइ मदैत करब, करैत रहला अछि। कहब जे सिंहेश्वरक तेसर पीढ़ीक रमानन्द छैथ आ कृष्णानन्द मनोहरक दोसरे पीढ़ीमे छैथ, से केना भेलैन?

ओना, परिवार वा वंशमे पीढ़ीक बदलावक निसचित सीमा नहियेँ अछि, मुदा देखा-देखी बीस बरख लोक मानै छैथ। साए बर्खमे, माने एक शताब्दीमे पाँच पीढ़ी मानल जाइए। मुदा से मानल जाइए, पुरुखगत। जँ बेटा अगता भेल तँ वंशक वृद्धि अनुकूल रहल, नहि जँ पचता भेल तँ प्रतिकूल भेल। रमानन्द आ कृष्णानन्दक बीच एहेन जीवनक सम्बन्ध बनि गेल छैन जे ने कृष्णानन्द रमानन्दसँ कोनो बात वा काज छिपबै छैथ आ ने रमानन्द कृष्णानन्दसँ। मनसँ एहेन विचार रमानन्दकैं हेराइये गेलैन जे जहिया दुनू परिवारक बीच मित्रताक सूत्रपात भेल तहिया अपन बाबा छला आ कृष्णानन्दक पिता छेलखिन। दुनूक बीच दोस्तियारे भेलैन, तँए अपनासँ एक सीढ़ी कृष्णानन्द ऊपर भेला। ऐठाम राम कृष्ण नहि बुझब जे राम साइठ कलाक अधिकारी छला आ कृष्णमे चारि कला बेसी भेने चौंसैठ कलाक। ऐठाम बस एतबे बुझू जे हरिपुर गाममे रमानन्दो आ कृष्णानन्दोक बास छैन, एक समाजमे दुनू गोरे रहै छैथ। ओना, अहूमे कनी अन्तर बीचमे छैन्हे। अन्तर ई छैन जे जहिना गामक एक समाज बनैए, जेकरा गौंआँ गाम-समाज कहै छिऐ, तहिना गामक भीतर खण्डित समाज सेहो बनलो अछि आ बनितो तँ अछिए। जेना जातिक समाज वा टोलबैयाक समाज। बेवहारो रूपमे एहेन अछिए जे गाम समाजसँ हटि जातियोक समाज आ टोलबैयोक समाजक बीच किछु विचार वा काज एहेन होइते अछि जे गाम समाजसँ हटल रहिते अछि। ओना, रमानन्दो आ कृष्णानन्दोक बीच एहेन सम्बन्ध बनियेँ गेल छैन जेहेन कोला-कोली

खेत अपन आड़ि तोड़ि एक प्लॉट माने एकटा नमहर खण्ड भूमिक बनि जाइए। समाजमे किछु एहेन वृत्ति तँ अछिए जेकर जुड़ाव मन मायासँ अछि। तँए ओकरा झाँपि कऽ माने परदा दऽ कऽ राखबकेँ नीक बुझल जाइए। ओना, अधिकांश क्षेत्रमे एहेन विचारो आ काजो अछिए, मुदा से अखन नहि। अखन बस एतबे जे शरीरक आंगिक क्रिया, माने पुरुख-नारीक बीचक सम्बन्धकेँ झाँपि राखब माने परदामे राखब नीक मानल गेल अछि, मुदा तइसँ एते तँ नोकसान भइये गेल अछि जेकरा झाँपि कऽ रखने दुरकालक अवाहन होइत रहल। माने ई जे बहुतो एहेन आंगिक रोग अछि जे मरणवाण छी, मुदा ओकरा लोक-लाज मानि छिपा कऽ रखने नोकसान होइते अछि। दोसर बात ईहो अछि जे नारी-पुरुखक भेद केना अभेद बनत, ईहो प्रश्न तँ सोझामे अछिए। जँ एहेन सम्बन्धकेँ लोक-लाजसँ हटा दइ छिऐ तखन यएह ने हएत जे प्रतिबन्धित नहि रहि सार्वजनिक भऽ जाएत। जखन सार्वजनिक भऽ जाएत तँ अपराध नहि बेवहार बनि जाएत। केहेन बेवहार की बेवहार से अखन नहि।

परिवार बनि वैवाहिक सम्बन्ध जहिया शुरू भेल, तहिया औझुका मनुक्ख माने विकसित मनुक्ख नहि छला मुदा तैयो एहेन विचार तँ करबे केलैन जे एक पुरुखक सम्बन्ध एक नारीक संग रखलैन। एहेन उच्च कोटिक विचार जे स्वास्थो आ जीवनोक दृष्टिसँ उत्तम अछिए, तहूक संग उल्लंघन भेबे कएल अछि। तँए कहब जे विचार सोल्होअना अबेवहारिक भऽ गेल, सेहो बात नहि अछि। अखनो अपन समाज ओहन अछिए जे जीवनक गहराइसँ स्थापित अछि। जेकरा वैदिक पद्धति कहै छिऐ। ओना, आजुक परिवेश बहुआयामी भऽ गेल अछि जइ कारणेँ नीकसँ नीको आ अधलासँ अधलाह सेहो भइये रहल अछि। जीवनक बीच बैस जखन देखब तखन उच्छृंखलतो देखब आ मानवीयता सेहो देखबे करब, देखबे करब जे वैवाहिक सम्बन्धमे विघटनो भइये रहल अछि। मूल प्रश्न अछि जखन मनुक्ख-मनुक्खक बीच प्रेमसँ ससिनेह जीबैक लूरि नइ भेल

तखन मनुक्ख केहेन भेलौं।

अखन तकक जे मनुक्खक लाखो बर्खक इतिहास रहल अछि ओ दुनियाँ भरिमे पसरल मनुक्खक इतिहास रहल अछि किने, तँए क्षेत्र क्षेत्रक जलवायु इत्यादिकेँ नजैरमे राखि देखए पड़त। अपना ऐठामक जे इतिहास अछि, माने मनुक्खक इतिहास, ओकरा देखब अछि।

जहिना कोनो फूल वा फल आकि आने-आन वस्तु, जखन अपन आकार पकड़ैए माने फूले वा फलेक, तखनेसँ ओइ वस्तुकेँ माने फल-फूलकेँ देखि मनमे खुशीक खुशपन जगैए, मुदा ओकरा कोढ़ी कहबै कि फूल आकि फल? कोढ़ी भेल फूल वा फलक पहिल रूप। पछाइत ओ अपना जीवनकेँ आगू बढ़बैत अनेको रूपमे संचारित होइत असल रूप पबैए, माने पूर्ण विकसित रूप धड़ैए। जइसँ ओइ वस्तुसँ[11] पूर्ण आनन्दक संचार होइए। तहिना ने मनुक्खोक जीवन रहल अछि।

लाखो बरख पूर्व मनुक्खक रूपमे जीवक विकास भेल अछि। ओ जखन जंगली रूपमे छल माने जानवरक रूपमे, तखुनका मनुक्खकेँ समाज नहि समज मानि लिअ। जहिया मनुक्ख-मनुक्खक बीच मनुक्खपनक बोध जागल तहियासँ लिअ। केना जंगली रूपसँ पारिवारिक रूप पकैड़ किसानी जीवन शुरू भेल तहियासँ देखियौ।

ओना, जीव-जन्तुक जगतमे मनुक्ख सभसँ पैघ जहिना मदारी छैथ तहिना भदारी नइ छैथ, सेहो बात नहियेँ अछि। तँए कहब जे मदारी भदारीसँ पैघ वा छोट छैथ सेहो बात नहियेँ अछि। जहिना संगे-संग दुनू मनुक्खक मनराजमे जन्म लेलक तहिना संग-संग चलियो आबिये रहल अछि आ आगुओ चलिते रहत। मद+अरि= मदारी। भद+अरि= भदारी। खाएर जे जेतए अछि से तेतए रहअ। मनुक्खक जीवनक लेल जे मूल तत्त्वक प्रश्न अछि, तइ दृष्टिसँ देखब बेसी नीक हएत। ऐठाम एकटा बात

[11] **फूल-फलसँ**

आरो अछि, ओ अछि मानसिक उड़ान, जेकरा शाब्दिक उड़ानक सीमामे राखू आ दोसरकेँ बेवहारिक सीमामे। जंगली रूपमे मनुक्ख केहेन छला, केहेन जीवन छेलैन, पछाइत अपन श्रमसँ केहेन जीवन बनबैत आगू बढ़ला आ अखन तक केहेन जीवन अरजित केलैन अछि, नजैर तैपर दी।

आँखिक सोझमे अखनो मनुक्खक जीवनकेँ देखिये रहल छी। ओना, दुनियाँक आँट-पेट नमहर अछिए तँए जँ सभकेँ एकठाम राखि आँकब तँ कम-बेसी हेबे करत। मुदा से नहि; बस एतबे जे मनुक्खक जीवनक मूल पाँच तत्त्व जे मानल जा रहल अछि- भोजन, वस्त्र, आवास, स्वास्थ्य आ शिक्षा, अखन बस तहीपर नजैर दियौ। भोजनक रूपमे केहेन स्थिति अछि? समाजमे केते लोककेँ केहेन भोजन भेट रहल छैन? एकैसमी सदीक दुआरिपर ठाढ़ छी, मुदा की दसो प्रतिशत लोककेँ सन्तुलित आहार भेट रहल छैन? ओना दस प्रतिशतसँ बेसी लोक ओइ अनुकूल जरूर छैथ, मुदा छिड़ियाएल भोजन रहने स्थित एकरंगाहे अछि। तहिना वस्त्रक स्थिति अछि। ओना, वस्त्रक रूपमे जरूर आगू बढ़लौं हेन, मुदा आवासक तँ वएह स्थिति अछि जे केतेकेँ जखन अपन बास-भूमियो नहि छैन तखन घर बना केतए बनौता। तहिना स्वास्थ्यक क्षेत्रमे अखनो झाड़-फूक आ ओझाइ-भगताइसँ काज चलबए पड़िये रहल अछि।

1947 इस्वीसँ पूर्व गुलामीक जीवन छल तँए जीवनक समुचित विकास अवरूद्ध रहल। एकर माने ई नहि जे सभकेँ अवरूद्ध रहलैन। किछु परिवार एहेन छल जे नीक जकाँ फड़बे आ फुलेबे कएल, मुदा आम जन अखनो केहेन जीवन जीब रहला अछि से तँ सभक सोझेमे अछि। देखिते छिऐ जे विद्यालय-महाविद्यालयमे शिक्षक नहि छैथ, जइसँ पढ़ाइ-लिखाइ ठप भेल अछि, मुदा साले-साल परीक्षाक रिजल्टो नीके भऽ रहल अछि। देशमे विकासक ढिढोरा दिन-राति पीटले जा रहल अछि, मुदा कृषि प्रधान देश रहितो कृषकक जीवन केहेन छैन आ केहेन हेबा चाहिऐन, ई तँ प्रश्न सभक सोझामे अछिए।

विचारक हिलकोरमे रमानन्दक मन हिलोरित हुअ लगलैन, जइसँ मनमे उठलैन जे परिवार हुअ कि समाज, मनुक्ख तँ अपन शुभेक लेल स्थापित केने छैथ। एक तँ ओहुना कृष्णानन्दक परिवारसँ तीन पुस्तसँ सम्बन्ध अछि। ऐठाम सम्बन्धक माने ई नहि जे खाली गपे-सप्पक सम्बन्ध अछि, दुनूक बीच वैचारिक-सँ-बेवहारिक जीवन धरिक सम्बन्ध अछि। जहिना संयुक्त परिवारमे एकक जीवन दोसरसँ जुड़ल रहैए तहिना रमानन्द आ कृष्णानन्दक बीच छैन।

ओना, कृष्णानन्द उमेरोमे दू बरख आ पढ़ाइयो-लिखाइमे दू किलास रमानन्दसँ आगू छला। ओना, उमेरोक भेद आ पढ़ाइयो-लिखाइक भेद, सोल्होअना नहियेँ मेटाएल छेलैन मुदा कमि जरूर गेल छेलैन। जइसँ समरूपता छैन्हे। ओना, पाँचो दिनक दूरी, माने जन्मक जेठाइ-छोटाइ, रहने पुरुख भलेँ अपन दूरी मेटा एक कऽ लैथ, मुदा मिथिलाक नारी तँ जखन जौंओ सन्तानमे दूरी मानै छैथ तखन पाँच दिन तँ बहुत भेल। जौंआ सन्तान भलेँ एक्के पेटसँ एक्के दिनक किए ने हुअए मुदा आगू-पाछूक दूरी जेठ-छोट बनाइये दइए। जइसँ एते तँ हेबे करैए जे जेठक पत्नीक संग देओरक रूपमे तीत-मीठ सभ गप-सप्प कऽ सकै छी, मुदा छोटक पत्नीक संग ओ वर्जित अछिए। एकर माने ई नहि बुझब जे छोट भाइक पत्नीक संग जोर-जबरदस्ती नहि भेल अछि वा होइए, सेहो बात नहियेँ अछि। मुखौटी जे रहअ मुदा करौटी[12]मे अन्तर अछिए।

कृष्णानन्दक दरबज्जा खालीए रहैन। कृष्णानन्द घरक पछुऐतक बाड़ीमे काज करैत रहैथ। दरबज्जा खाली देखि रमानन्दक मनमे दू तरहक विचार जगलैन। पहिल ई जगलैन जे जँ कृष्णानन्द आँगनसँ दरबज्जापर आबि जेता तँ भने दुइये गोरे रहब, अपना जे मनमे अछि तइ बजैमे असोकर्ज नहि हएत। दोसर विचार ई जगलैन जे जँ कृष्णानन्द नहि भेँट

---

[12] **बेवहारमे**

हेता तँ मनक बात कहबैन किनका.?

असमंजसमे रमानन्दक मन घुरिया लगलैन। मुदा संयोग नीक रहल, कृष्णानन्दक पत्नी रमानन्दकेँ आँगनेसँ देखि बाड़ी जा पतिकेँ जानकारी दऽ देलखिन। जानकारी पबिते कृष्णानन्द बाड़ीसँ दरबज्जा दिस बढ़ला। रमानन्द चारू दिस चकोना होइते रहैथ कि कृष्णानन्दपर नजैर पड़लैन। नजैर पड़िते रमानन्द बजला-

"कृष्ण भाय, मृत्युक भय मेटा गेल।"

रमानन्दक विचार सुनि कृष्णानन्द असमंजसमे पड़ि गेला। मनमे उठलैन जे रमानन्दकेँ भरिसक पत्नीसँ कोनो काजे वा विचारे, कहा-कही भेलैन अछि, जइसँ खिसिया कऽ बाजि घरसँ निकलल हेता जे जखन हमर हकिमानी अही करै छी तखन अपन हकिमानी लिअ। हमरो कपारपर सँ भार उतरल किने। जखन दोसरक भार कपारपर नहि रहत तखन तँ अपन मनक मौज भेल किने जे दुनियाँमे रही वा नहि रही, भरिसक रमानन्दोकेँ एहने स्थिति भेलैन अछि तँए एहेन बात बजला हेन। मुदा लगले फेर कृष्णानन्दक अपने मनमे उठलैन जे रमानन्दक पत्नी तँ तेहेन नहि छथिन, ओ तँ सीतोसँ पवित्र छथिन, तखन सोनाक मृगाक लोभमे पड़ि पतिकेँ थोड़े किछु कहने हेथिन। अन्तो-अन्त कृष्णानन्दक भाँजपर नहियेँ चढ़लैन जे पत्नीक विचारसँ खीझकऽ रमानन्द खुशी-खुशी मरैले तैयार भऽ गेल छैथ। कृष्णानन्द बजला-

"ई तँ खुशीक बात भेल रमानन्द। मुदा किछु करैत मरी वा बैसले-बैसल मरी, ई प्रश्न तँ बीचमे अछिए किने।"

कृष्णानन्दक विचार सुनि रमानन्दक मन जहिना उधियाइत रहैन तहिना एक्केबेर शान्त भऽ गेलैन। मन शान्त होइते रमानन्द बजला-

"भाय, असत्यक ने काट होइए, मुदा सत्यक काट थोड़े होइए।"

कृष्णानन्द मुड़ी डोलबैत कहलखिन- "एकरा के काटत।"

ओना, रमानन्दक मनमे खुशीक एहेन लहैर लहराइते रहैन जे होनि, पेटक सभ विचार कृष्णानन्दक सोझामे उझैल दिऐन। मुदा छुच्छे विचारो उझलने तँ जीवनक शुभ-लाभ नहियेँ हएत। ऐठाम शुभ-लाभक माने कल्याणसँ अछि, नहि कि मेटाएबसँ। दुनू अर्थक चलैन माने शुभ-लाभक, लोकक बीच अछिए।

रमानन्दक पेट-सँ-मन धरिमे विचार दौड़-बरहा करिते रहैन जे करवन अपन विचार कृष्णानन्दकेँ कहिऐन।

अरवन तक रमानन्द मृत्युक भयसँ परिचित नहि छला। ओना, वैचारिक रूपमे सुनैत तँ सभ दिन रहला, मुदा तेकरा खाली सुनबेटा करैत रहला। मनमे यएह छेलैन जे आजुक कोन बात जे कहियो नहि ऐ दुनियाँकेँ छोड़ब, तँए नमहर दिनक जीवन अछि, जइले ओरियान-बात करि कऽ नहि राखब तँ खाएब की आ रहब केना। मुदा विचारक वनक बीचक विचरण करैत जखन विचार मृत्युक विचार लग पहुँचलैन तखन रमानन्दक मन मानि गेलैन जे जन्मे जकाँ मृत्यु सेहो अकाट्य सत्य अछि, केकरो रोकने नहि रोकल जा सकैए। मनुक्खक कोन बात जे देवियो-देवता नहि रोकि सकै छैथ। जँ से रोकि सकितैथ तँ अभिमन्युए अपन मृत्युकेँ ने रोकि लइतैथ। जिनका अर्जुन सन महाभारतक योद्धा पिता छेलैन आ कृष्ण सन सुदर्शनचक्रधारी मामा छेलखिन। तखन तँ भेल जे जे हाथ से साथ, जेहेन हाथमे लूरि रहत तेहेन संगी बनि संग जाएत। रमानन्द बजला-

"कृष्ण भाय, दुखे मुक्तिक कारण सेहो छी आ मुक्तिमार्ग सेहो तँ छीहे।"

रमानन्दक विचार सुनि कृष्णानन्द अपन आ रमानन्दक बीचक सम्बन्धकेँ पाछू उनैट अँकलैन। अखन तक रमानन्द श्रवण कुमार जकाँ अन्धभक्त कृष्णानन्दक बनल आबि रहल छला। कृष्णानन्द रमानन्दकेँ बीरान नहि बुझि अपन आत्मा मानि अपनत्व रूपमे संगी बनल रहल छैन,

तँए भरिसक रमानन्द मृत्युक भयसँ अपनाकेँ मुक्त बुझि रहला अछि जइसँ एहेन विचारो मुहसँ निकैल रहल छैन आ जीवनसँ तुष्टि सेहो भऽ रहल छैन। मुदा लगले फेर कृष्णानन्दक अपने मनमे जगलैन जे रमानन्द तँ दू बरख पाछू ऐ धरतीपर एला, माने उम्रमे दू बरख कम रहने, तखन हमर आशा केते करता? ओहुना देखै छी जे जँ अस्सी बर्खक जीवन मानि ली, तँ अपने दू बरख पहिने मरब आ रमानन्द दू बरख पछाइत मरता। बीचक जे दू बरख अछि, तइमे हम्मर आशा किए करता? तखन तँ भेल अपने आशे खुशीसँ मृत्युक वरण करब। ..कृष्णानन्द बजला-

"रमा भाय, जँ दुखे मुक्तिक कारण छी तँ लोक दुखसँ दुखी किए होइए?"

रमानन्दक मन अपने-आपमे खुशीसँ तेते मगन भऽ गेल रहैन जे दुनियाँ दिस देखबे बन्न भऽ गेलैन, जइसँ कृष्णानन्दक प्रश्नक उत्तर नहि दऽ, अप्पन मनक विचार उझलैत बजला-

"कृष्ण भाय, देखिते छी जे दश बर्खसँ बातरस रोगक शिकार भऽ रोगी बनि गेल छी। गीरह-गीरह दर्द सेहो होइए आ गतिहत सेहो भऽ गेल छी।"

बिच्चेमे कृष्णानन्द बजला-

"हँ, से तँ अपनो आँखिये देखिते छी।"

कृष्णानन्दक विचारक सह पबिते रमानन्द बजला-

"अहाँ किछु छी तँ निरोग छी। ओना, उमेरमे दू साल हमरासँ बेसी छी। तँए मन किए ने मानत जे पहिने अपने मरब। जखन से बात मनसँ मानियेँ रहल छी तखन ई किए ने मानब जे जीबैतसँ मृत्यु धरि, माने जीबैतमे बिमारीक इलाजक संग मृत्यु भेलापर लहासकेँ जराएब धरिक, लीलाक लीलाधारी अहाँ छीहे। तखन मृत्युक भय किए करब, जे अपने सत्य अछि ओ तँ अकाट अछिए।"

रमानन्दक विचार सुनि कृष्णानन्दक मन अहैल-अहैल आह्लादित हुअ लगलैन। आह्लादसँ बजला-

“मुइला पछाइत स्वर्ग-नर्कक की सोचै छी?”

रमानन्द बजला-

“से तँ गेला पछाइत सोचब। अखन अनेरे से किए सोचब। जहिना वर्तमानमे जीबैत एलौं, मुइला पछातियो तहिना वर्तमानेकेँ दृष्टिमे रखि सोचि लेब।”



शब्द संख्या : 2536, तिथि : 26 अप्रैल 2022

घरक बात

तीन माससँ सियाराम काकाकेँ राधाकृष्णसँ फुल्ला-फुल्ली चलैत आबि रहल छैन। ने सियाराम काका केकरो लग बजै छैथ आ ने राधाकृष्णे केतौ बजैए। दुनू बापुतक बीचक फुल्ला-फुल्ली जहिना जगिकऽ फुललैन तहिना अपने बहिकऽ वा झड़िकऽ सटैक जाएत। एक तँ ओहुना बिनु सुनने-बुझने कियो किए बुझता कि जनता। तखन तँ भेल जे किरिया-कलापकेँ परेखकऽ जानब आ बुझब। तइले लोककेँ एते छुट्टी छै जे अनकर-अनकर काजकेँ जड़ी-कड़ीसँ नाप-जोख करैत रहत।

ओना, सियाराम काका जहिना चौबिसो घन्टा, माने दिन-राति जकाँ काजक संग बुधि (विचार)केँ जोड़ि मगन भऽ चलैत रहै छैथ तहिना राधाकृष्णो चलैत रहैए। वएह दुनू बापूत किए चलता जे गामक सेहो सभ चलिते छैथ। समय करवनो केकरो बैसए थोड़े दिअ चाहैए। ओ तँ अपना गतिये धोतीक जँ कोंचा नहि तँ ढेको पकैड़ चलैबते रहैए। कियो समयकेँ पकैड़ चलैए आ केकरो समय ढेका पकैड़ चलबैए। अन्तर एतबे अछि।

माने भेल जे जे समयकेँ परेख अप्पन जीवन आ जीवनक संकल्पकेँ क्रियान्वित करैले, बीच केतबो विघ्न-बाधा किए ने आगूमे आबए मुदा समयक संगक ताल-मेल बैसबैत, क्रियाशील रहै छैथ, तिनकर जीवनक रूपक स्वरूप आ जे समयकेँ काल बुझि काटै छैथ, चाहे ओ गप-सप्प हुअए कि ताश-जुआ हुअए आकि बड़प्पनक गारि-गरौवलि हुअए, मुदा ओहो तँ समयकेँ काटिते छैथ तँए हुनको रूप-स्वरूप छैन्हे,

मुदा दुनूमे अन्तर अछि।

ओना, सियाराम काकासँ अपनो लाट-घाट अछिए, जइसँ सभ दिन एकठाम बैस एकाध घन्टा गप-सप्प करिते छी, मुदा से करै छी औझुका बीतल दिनक समय आ औझुका अबैबला समयक। एतबे गप-सप्प करैमे विचार-विमर्शक समय माने एकाध घन्टा, बीत जाइए। ने आन गप-सप्पक समय बँचैए आ ने आन-आन गपे-सप्प करै छी। एक तँ ओहुना जीवन-जाल छीहे, केतबो ओझरी छोड़ाएब तैयो ओझराएल रहिते अछि। हँ, ओकरा लेल जीवन जाल नइ छी जे जालकेँ ओरिया कऽ घरक पछुऐतमे बान्हिकऽ रखि दइए। जखने जलबाहि करब तखने ओझरियो लगबे करत आ सोझराबौ पड़बे करत।

संयोग बनल, दिन उगले सियाराम काकासँ भेँट करैक समय भेट गेल। विदा भेलौं। अपना मनमे रहिते अछि जे जँ कखनो काजसँ पलखैत भेटैए तँ सियारामे काका ऐठाम जा कऽ चाहो-पान खाइ-पीबै छी आ गपो-सप्प करिते छी। एते तँ गुण हुनकामे छैन्हे जे जहिना अपने कठिन-सँ-कठिन समयकेँ क्रियानुकूल बना क्रियवान रहै छैथ तहिना दोसरोकेँ क्रियाशील बनैक प्रेरणा सेहो दइते छैथ। सियाराम काका दरबज्जेपर छला। रस्तेपर सँ बजलौं-

“काका, गोड़ लगै छी।”

ओना, दरबज्जापर पहुँचते सियाराम कक्काक चेहरा देखि मन झुरझुरा गेल। झुरझुरा ई गेल जे भरिसक कक्काक मनमे कोनो चिन्ता पैसल छैन। ओना, मन ईहो चेतौनी दैत कहबे करै छल जे चिन्तासँ मन खसल छैन आकि चिन्तनसँ चिनमय छैन, से तँ भेटत गप-सप्पक पछातिये।

सियाराम काका बजला-

“दनदनाइत चलैत रहह।”

अनका जकाँ सियाराम काका नहि कहै छैथ जे भगवान सभ किछु देथुन। हाथीक संग हथिसार आ घोड़ाक पीठ सवार। ..बजलौं-

"काका, दनदनाइत केना चलब। तेहेन ने समय भऽ गेल अछि जे सभ दनदनी झड़ि गेल।"

अपना जनैत झाँपि-तोपिकऽ बजलौं, किए तँ दनदनी कि कोनो एक्केरंगक होइए। मुदा पारखी लोक सियाराम काका छथिए, ओ बुझि गेला जे भरिसक कोरोनाक हवामे देवशंकरक पावर ढील भऽ गेल अछि जइसँ दनदनीए कमि गेल अछि। सियाराम काका बजला-

"हवा-बिहाड़िमे लोक कहुना ने कहुना जान बँचाइये लइए किने। जखन जान बँचि जाएत तखन फेरसँ दनदनी सिरैजिये लेत।"

सियाराम कक्काक विचार नीक लागल, बजलौं-

"हँ, से तँ सिरैजिये सकैए।"

जहिना पैरमे गड़ल काँटकेँ कतबाहिसँ सूइयाक नोकसँ काँटक मुँह अलगा आँगुरसँ पकैड़ निकालि लइ छी तहिना अपनो सियाराम कक्काक पेटक बातकेँ विचारक भूमिका बान्हि निकालए चाहि रहल छेलौं, मुदा से ओहन सिरजैया जकाँ जे दुनियाँक भूमिका तँ बान्हि दइ छैथ मुदा अपन परिचय-पात देबे ने करै छैथ, तहिना भऽ रहल छल। मध्य युगक रचनाकारमे एहेन दृष्टिमान अछिए। ऐठाम प्रश्न अछि जे अपन वैचारिक भावक रूप आ अपन जीवनक रूप, जे जीवन ओहन वैचारिक भवन तैयार करैक प्रेरणा दइए, तइसँ नीक ने जे अपन बेवहारिक, माने जे ओहन शक्ति पेब सृजन केलैन, जीवनक चर्च करैत प्रेरित करितैथ। ओहने प्रेरणा ने प्रिय वा प्रेय होइए बाँकी तँ अप्रिय वा अप्रेय होइते अछि।

ऐठाम हम ई नहि कहए चाहै छी जे मध्य युग, राजा-रजबारक युग छल। राजतंत्रक बीच आमजनक जे जीवन होइए ओ ओहन कष्टकर

होइते अछि, जेकरा दूर करब बाल-बोधक खेल नहियेँ छी। खाएर जे छी तइसँ अपने कोन मतलब अछि आकि सियारामे काकाकेँ कोन मतलब छैन, मतलब छैन मात्र अपन पारिवारिक भारसँ। भलेँ पाँचे गोरेक परिवारक भार किए ने हुअए मुदा परिवार परिवार छी। जैठाम अस्सी बर्खक बुढ़-बुढ़ानुससँ लऽ कऽ जनमौटीक कोन बात जे जन्मोसँ पूर्वक पेटक बच्चाकेँ सेहो सेवा कएले जाइए।

एकाएक जेना बुझि पड़ल, माने सियाराम कक्काक चेहराक रूप देखि कऽ, जे मने-मन काका खुश भऽ रहला अछि। मुदा मनक असल विचार अपना भाँजपर चढ़िये ने रहल छल जे सियाराम काका कुम्हलाएल छैथ कि मन्हुआएल, ओना रही सियारामे कक्काक आगूमे बैसल मुदा तरे-तर मनमे महाभारत जकाँ युद्ध शुरू भऽ गेल। भाँजेपर ने चढ़ि रहल छल जे महाभारतक लड़ाइ भाव-युद्ध छल कि विचार-युद्ध। ऐठाम अहूँ अहीमे ने कहीं ओझरा जाइ जे लड़ाइ केना युद्ध भऽ जाइए आ युद्ध केना लड़ाइ बनि झगड़ा भऽ जाइए।

संयोग बनल राधाकृष्ण सेहो आबि कोण दबिकऽ चौकीपर बैसल। बाघ-बिलाइ जकाँ सियारामो काका राधाकृष्ण दिस देखलैन आ राधाकृष्णो सियाराम काकाकेँ देखलकैन। ओना, दुनू एक-दोसरपर गुम्हरला मुदा बजला दुनूमे सँ कियो किछु नहि।

एक परिवार रहितो माने पिता-पुत्र रहितो, जीवनक रूप ओहन बनितो अछि आ नहियोँ बनि सकैए, जे सइयो योजनसँ विचारमे दूर रहैए। एकर अनेको कारण अछि। समयानुकूल जीवन बनाएबे ने जीवनक गतिशीलता छी, मुदा ओकर बाधक तत्त्व नहि अछि सेहो बात नहियेँ अछि, सेहो अछिए। अपना ऐठाम उन्नैस साए अस्सीक दशकमे जखन बंगला देशक लड़ाइ भऽ गेल छल, माने पूर्वी पाकिस्तान बंगला देश बनि गेल छल, तेकर पछाइत किसानक बीच गहुमक खेतीक सूत्रपात मिथिलामे भेल। गहुम बाउग करैक समय एक नवम्बरसँ पनरह दिसम्बर

तक अछि। सालक फसलचक्र ऐ रूपेँ विशेषज्ञ बनौने छला जे एक खेतमे पहिने गरमा धान मइ-जूनमे लगा अक्टूबरमे समाप्त करैत खेत खाली भेलापर गहुमक खेती हएत, जे फगुआ लगाइत माने मार्चमे तैयार भऽ जाएत आ लगले पीठमे खेरही खेती हएत। समयक हिसाबसँ बिल्कुल अनुकूल छल। अखन खेतीक समस्याक चर्च नहि, जे पानिक बेवस्था केहेन छल। अखन एतबे जे वैज्ञानिक दृष्टिसँ, माने बेवहारिक दृष्टिसँ बिल्कुल अनुकूल फसलचक्र छेलैहे जे देशक पैदावारमे एकाएक दोबर-अढ़ाइबर उछाल अबैत, मुदा बीचमे बाधा उपस्थित भेबे कएल।

अपना ऐठाम माने मिथिलामे जे धानक खेती होइए ओ शीलकालीन फसल रूपमे, माने धान पूस-माघक पछाइतसँ लगाएब शुरू होइए आ सौन-भादो तक चलैए। खेती भलेँ कोनो मासमे भऽ सकैए। चौरीमे बगहा धान पूस-माघसँ शुरू होइए, माने फरबरी-मार्चसँ, आ सौन-भादो तक माने जुलाई-अगस्त तक होइए, मुदा ओ पकिकऽ तैयार होइए, बीतैत दिसम्बर-जनवरीमे आबिकऽ। जइसँ ऐगला खेतीक माने गहुमक खेतीक बीच बाधा बनि ठाढ़ भइये जाइए। समाजक बीच एहेन विचारधार बहिते अछि जे परम्परासँ अबैत आ नव सिरासँ शुरू होइक बीच विवाद होइते अछि।

दुनू बापूत, माने सियारामो काका आ राधाकृष्णो दुनू दिससँ दुनू गोरे बैसले छला, अनायासे मनमे उठि गेल जे अजीब लीला लोकक सोच-विचारमे चलि रहल अछि। देखिते छी जे बेक्त-बेक्त अपन नीके जीवनक पाछू, माने नीक जीवन जीबी, दिन-राति लगल रहै छैथ मुदा केहेन जीवन पेब जीब रहला अछि से देखबे ने करै छैथ। परिवारमे भाय-भैयारी हुअ कि पिता-पुत्र आकि माइये-बहिन, सभ परिवारे पाछू बेहाल रहै छैथ। सभक मनमे नीके परिवार बनबैक उद्देस रहै छैन, मुदा भाय-भैयारी हुअ कि पिता-पुत्र, वैचारिक-बेवहारिक सम्बन्ध केहेन अछि, सेहो

सभ देखिये रहल छी। ऐठाम एतबे नइ बुझब जे सभ परिवारमे भाय-भैयारीक बीच हुअ कि पिता-पुत्रक बीच, मन-मुटाव रहिते छैन। मन-मुटाबे टा नहि, भैंसा-भैंसीक कनारि सेहो रहैत अछि। तेकर विपरीत अखनो एहेन परिवार अछिए जइमे त्रेता युगक राम-लक्ष्मणक बीचक सिनेहसँ बेसी सिनेह भैयारीमे अछि। तहिना पिता-पुत्रक बीच सेहो श्रवणकुमार जकाँ अन्धभक्तपन नहि अछि, सेहो अछिए आ तहूसँ बेसी सिनेह पिता-पुत्रक बीच दृष्टिगत अछि। तहिना समाजक बीच सेहो देखिये सकै छी जे बजैक क्रममे सभ समाजक कल्याणेक विचार व्यक्त करै छैथ, अपनाकेँ समाजसेवक सेहो कहिते छैथ, मुदा समाज केना समाढ़ जकाँ जलियाएल अछि, से तँ मछवारेटा मछबारि करैकाल देखबो करै छैथ आ भोगितो तँ छथिए। खाएर जे अछि जेतए अछि से तेतुका भेल, ऐठाम सियाराम काका आ राधाकृष्णक बीचक सम्बन्धक बात अछि।

तीन मासक बीच जहिना सियाराम काका दिनो-दिन परिवारसँ खिन्न भेल जा रहल छैथ तहिना राधाकृष्ण सेहो खिन्न भेल जाइए। मुदा घरक बात मानि ने सियारामे काका अनका लग बजै छैथ आ ने राधाकृष्णे किछु बाजि रहल अछि। ओना, दुनूक हाव-भावसँ स्पष्ट रूपेँ आँकले जा सकैए जे दुनू बापूतक बीच मतान्तरे नहि मनानन्तर सेहो छैन, मुदा अपनो तँ परम्परावादी छीहे। जइसँ एहेन बेवहारो आ धारणो बनले अछि जे सभ परिवारकेँ अपन स्वतंत्र ढंगसँ निर्माणक दायित्व अछि, तैठाम अनेरे किए तेसर परिवारक बात बिनु पुछने बाजब। परिवार छी, एकक नीक जँ दोसरक अधिकारकेँ प्रभावित करैत होइ, तैठाम किए तेसर अपने फुरने किछु बजता। ओना, बिनु कहनौं नीक विचार देल जा सकैए मुदा नीको तँ अपन-अपन स्तरक होइए, जइसँ अधला हेबाक सम्भावना अछिए। जहिना अपने परम्पराक निमरजना करैत मुँह बन्न केने रही तहिना सियारामो काका आ राधाकृष्णो परिवारक मन-मुटावकेँ

बजैसँ मुँह बन्न केनहि छला।

एकाएक सियाराम कक्काक मनमे खुशी उपकलैन। खुशी उपकैक कारण भेलैन जे मनमे उठि गेलैन- परिवार हुअ कि समाज, मनुक्ख अपन कर्मोक आ फलोक भागी अपने होइए। कियो दोसरक नइ होइए। बुझल बात अछिए जे चोरबा अरजल सभ खाइए आ असगरे चोरबा फाँसी चढ़ैए। ओना, सियाराम कक्काक मन भीतरसँ सन्तुष्ट रहैन, किए तँ अपन मन उत्साह पूर्वक कहिते रहैन जे माता-पिताक निमरजना जेना अपने केलौं तेना समाजमे दसो-बीस प्रतिशत लोक कहाँ छैथ जे ओना केने हेता। तहिना समाजक बीच अखनो एहेन सम्बन्ध बनले अछि जे ने अधला करै छी आ ने कियो अधलाहा कहैए। तहिना परिवारक बीच सेहो अपन हिस्साक जे दायित्व अछि तइमे कोताही नहियेँ केलौं। अपन हिस्साक माने ई जे पत्नी तँ पति-पुत्रक बीच-सीमानपर ठाढ़ छैथ तँए सोलहन्नी हकदार अपने थोड़े भेलौं। आजुक परिवेश भलेँ मोड़ किए ने लेलक अछि, माने माता-पिताक अमलदारियोमे पत्नीए-टाकेँ अप्पन बुझि, माए-बापकेँ अवहेलना कएल जाइए। रहल ऐगला पीढ़ीक, माने बाल-बच्चाक, तैठाम तँ सौंसे जीवन, माने जन्म-सँ-मृत्यु धरिक, दायित्व अपना ऊपर आबियो नहियेँ सकैए। किए तँ जीवनक औरुदाक हिसाबे बीस-पचीस बर्खक अगाति-पछातिक सम्बन्ध पिता-पुत्रक बीच भइये जाइए। तैठाम तँ एते माता-पिताकेँ भार छैन्हे जे बेटा-बेटीक परिवार बसा, स्वतंत्र रूपसँ आगू बढ़ैत चलए। अपनो मने-मन तर्क-वितर्क कइये रहल छेलौं कि बिच्चेमे सियाराम काका बजला-

"देव शंकर।"

मनमे भेल जे काका आगूओ किछु बजता, मुदा बजला किछु नहि। चौंकैत पुछलयैन- "किदैन कहए लगलौं, काका?"

पुछला पछातियो सियाराम काका किछु ने बजला। पुन: दोहरा

कऽ बजलौं- “ओंगहाइ ने तँ छी, काका?”

मने-मन सियाराम काका अपनो ओकाइत माने शक्तिक क्षमता देखि रहल छला आ राधाकृष्णक सेहो देखि रहल छैथ। तँए मनमे जनु क्षोभ भऽ रहल छेलैन। मुदा सामंजस करैत सियाराम काका बजला-

“देव शंकर, जहिना परिवारमे पिता-पुत्र, पित्ती-भातीज, बाबा-पोता आ भाए-बहिन आदि सबहक बीच वंशगत सम्बन्ध अछि तहिना समाजोक बीच सभ तरहक सम्बन्ध अछिए। मानव तँ तखन ने मानव बनैए जखन अपन मानवोचित विचारधाराक अनुकूल होइत चलैत रहैए। वैचारिक रूपक जे मानवीय सम्बन्ध अछि ओ वंशगत सम्बन्धसँ केतौ आगुओ भऽ जाइए आ केतौ पाछुओ तँ रहिते अछि। एकर माने ईहो नहि जे वंशगत सम्बन्ध ओइसँ तगतगर नहि अछि, सेहो अछिए। ओना, दुनू एकरंगाहे अछि मुदा नजैरिक दोषसँ बहुरंगाह सेहो देखि पड़िते अछि।”

ओना, सियाराम कक्काक विचार सोल्होअना नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं, मुदा कालिदासक रूप वर्णनक भाषाक लयमे तेना बोहिया गेलौं जे अनायास मुहसँ खसि पड़ल-

“हँ, सेहो तँ अछिए ने।”

ध्वनिक लय जखन मनमे विलीन भेल आ जीवनक लगमे आबि ठाढ़ भेलौं तखन अपने मन धिरकारि-धिरकारि कहए लगल जे कानक चलैत अपने बोहिया गेलौं। मीठ दवाइ पेब जहिना बालो-बोध हलैस कऽ पीबए चाहैए तहिना अपनो भेल। मुदा डारिक चुकल बानर आ वाणक चुकल व्याधाक अपसोचे की। संयोग नीक बनल, सियाराम काका बजला-

“परिवारक की हाल-चाल छह, देव शंकर?”

अखन तक मन यएह मानि रहल छल जे समाज मात्र देखौआ छी। पाबैन-तिहारमे नीक-निकुत खा, नाच-तमाशा देखि पराते भनेसँ समाजक

जीवनकेँ बिसैर जाइए, मुदा समाजक तहमे एहनो समाज बसल अछि, जे समयानुकूल सभ तरहेँ सम्पन्न अछि जैठाम सभक मनोरथ पूर भऽ सकैए। तखन तँ ईहो सत्य अछिए जे समाजे बहबाँरि भऽ गेल अछि, तँए ठेकानैमे बाधा अछिए। माने ठेकान करैमे बाधा अछिए।

बहवाँरिक माने भेल जे देखिते छी एक दिस आधुनिक चिकित्सा मशीनक योगसँ सम्पन्न भऽ रहल अछि, मुदा ईहो तँ झूठ नहियेँ छी किने जे ठक-फुसियाहक झाड़-फूकक गहवर आ भगताक वृद्धि नहि भऽ रहल अछि। एक दिस गरीबी हटबै पाछू सभ लागल छी, तँ कि दोसर दिस नव रूपक भीखमंगा नहि बढ़ि रहल अछि। यएह तँ समाजक बीच बहवाँरिपना अछि। तेतबे किए, एक-एक शब्दक बोध बनबैमे विद्यालयक की महत्व अछि, तैठाम देखिये रहल छी जे या तँ विद्यालयमे शिक्षके नहि छैथ वा सालक साल बन्ने रहैए। मुदा फल तँ नीकोमे नीक भइये रहल अछि। किसान प्रधान देशमे किसानी जीवन केना सुदृढ़ भऽ आगू बढ़त, तेकर जिज्ञासा ने किसानक मनमे छैन आ ने समाजक मनमे अछि.! खाएर जे अछि से अछि, तइसँ अपने आकि सियारामे काकाकेँ कोन मतलब अछि।

बजलौं-

"काका, की कहब हाल-चाल.! साल भरिसँ जे तबाही जीवनमे आबि गेल अछि, तइमे जँ जीविते छी सएह बहुत भेल।"

हमर बात सुनि सियाराम काका चौंकला नहि, चाँकि जगौलैन तँ देखि पड़लैन जे समाजमे तहलका तँ मचले अछि। गाम-गामक रस्ता बन्न अछि, परिवार-परिवारक रस्ता बन्न अछि, तेतबे किए, बेकती-बेकतीक बीचक रस्ता सेहो बन्न भइये रहल अछि, तैठाम जँ लोक जीविये रहल अछि तँ सएह ने बहुत भेल। दोसर दिस ईहो देखि रहल छैथ जे समाजमे ओहनो लोक तँ छथिए जे एक्कैस पीढ़ी तक जँ ऐश-मौजक जीवन बना

जीबए चाहता तेतेक जमा-जिगिर परिवारमे कऽ लेने छैथ। मुदा आजुक जे जीवन बनि गेल अछि, ओ एको दिन स्वस्थ-प्रसन्न भऽ समयक संग चलए नहि दइ छैन। खाएर जे अछि, तइ बिच्चेमे अपन पाशा बदैल सियाराम काका एकाएक बजला- "देवशंकर, की कहबह.! अपनो गलती परिवारमे भेल अछि।"

सियाराम कक्काक बात सुनि मन मानैसँ पहिने चेतौनी दैत कहलक, अनेरे अप्पन परिवारक विचार किए बीचमे लऽ अनलैन। मुदा से नहि बाजि, बजलौं- "से की काका?"

ओना, परिवारक नाओं सुनि राधाकृष्ण सेहो कान ठाढ़ केलक, मुदा पिताक ऐगला विचार सुनैले, माने सियाराम काका की बजै छैथ तइले मुँह बन्ने रखलक। जहिना नैतिक जीवन जीनिहार लोकक मुँह सभठाम खुजल रहैए तहिना सियाराम काका आगू बजला-

"देवशंकर, तीन माससँ अपनो घरमे दुनू बापूतमे मुँह फुलौवलि चलि रहल अछि।"

सियाराम कक्काक बात सुनि राधाकृष्ण दिस तकलौं तँ बुझि पड़ल जे बीचमे अपने नहि रहितौं तँ राधाकृष्ण सियाराम काकाकेँ फगुआक भाँग जकाँ एक्के घोंटे उठा कऽ पीब लइतैन। चेहराक एहेन भाव सियाराम काका सेहो कनडेरिये आँखिये देखि लेलैन, मुदा मुस्की दैत हमरापर नजैर देलैन। कक्काक नजैरसँ देखि अपना बुझि पड़ल जे भरिसक किछु बजबए चाहै छैथ। बुझल अपना किछु ने अछि आ बजबाबए चाहै छैथ, की बाजू? वामा भाग पाछू उनैट तकलौं तँ केतौ किछु देखिये ने रहल छेलौं। मुदा एते तँ महाभारतक अनुसारे बुझले अछि जँ मन बौला (बउला माने बालु जकाँ माटि) लगए तँ जहिना कृष्ण गुरुद्वार दुर्वासा बाबाक आश्रम छैन तहिना आनो सभले सेहो अछिए। एक दिन एकटा बारह बर्खक मतिसून ढेरबा आश्रममे पहुँच दुर्वासा बाबाकेँ कहलकैन- 'बाबा, भरिदिन

अहाँ अप्पन परसाद बँटिते रहै छी, जहिना भगवती कालिदासकेँ भरिये रातिमे महारचैता बना देलकैन तहिना हमरो बना दिअ।'

बारह बर्खक ओइ ढेरबाकेँ देखि माने मतिसूनकेँ, दुर्वासा बाबाक सिनेहक समुद्र ओइ मतिसूनक प्रति उमैड़ पड़लैन मुदा किछु बुझौल-सुझौल केना जाए, प्रश्न तँ सोझामे रहबे करैन। जे कहबै से बुझत केना? समाज दिस आँखि उठा दुर्वासा बाबा कहलखिन- 'बौआ, आब तोरो एक अवस्था माने बालपन, बीत गेलह। एकटा बात सदिकाल सीताराम मंत्र जकाँ मोन रखिहह।'

मतिसून अपन एक अवस्था टपब सुनि मनमे उत्साह जगौलक। उत्साह जगिते उत्साहित होइत पुछलकैन- 'से की बाबा?'

दुर्वासा बाबा हलैस कऽ कहलखिन- 'जे जेहेन करत से तेहेन पौत। तँए अखनेसँ अपने अपन जीवनमे लगि जा।'

संसार आ समसार मनुक्खक बीच यएह रहस्य अछि जे संसारक बीच अपन की अस्तित्व अछि आ एकरा केना जोड़ि सकब।

संयोग बनल, जहिना सियाराम काका बजबए चाहै छला तहिना राधाकृष्ण सेहो बाजल-

"भाय साहैब, बीचमे अपने बैसल छिऐ, जे कहब से मानि लेब।"

विचित्र स्थितिमे पड़ि गेलौं। सामंजस करैत बजलौं-

"राधाकृष्ण, ने तोरा आन बुझै छिअ आ ने काकाकेँ आन बुझै छिऐन, अपन बीचक विचार छी। तँए दुनूक बीच पारिवारिक जीवन छहे, दुनू गोरे परिवारकेँ नीके स्थिति बनबए चाहै छह से तँ दुनू बापूत मिलिकऽ विचारैक संग जखन करबो करबह तखने ने नीकक फल भेटतह।"

राधाकृष्णक मनक तापमे जेना किछु कमी आएल जे चेहराक रूप

देखि बुझि पड़ए लगल। सियाराम काका सेहो मने-मन आँकि लेलैन, मुदा किछु बाजि नहि रहल छला। अपना बुझि पड़ल जे सियाराम काका भरिसक ओइ ताककेँ ताकि रहल छैथ, जैठाम कोनो जमीनी सच्चाइ होइ, तखने ने विचार करब। ऐठाम तँ मात्र परिवेशक प्रभावसँ दुनू बापूतक बीच फुला-फुली अछि जे एक दिस देखा-देखी परम्पराकेँ छोड़ए नहि चाहै छी, आ दोसर दिस ईहो विचार नहि करै छी जे सभकेँ छोड़लो नहि जा सकैए आ सभकेँ रखनहु नहि चलि सकैए, तैठाम नव मनुक्खक संग नवयुगीन समाजक कल्पना केना कएल जा सकैए।

सियाराम काका बजला-

"घरक बात घरेक लोककेँ ने बुझौ पड़त आ करबो तँ करै पड़त।"



शब्द संख्या : 2686, तिथि : 01 मई (मजदूर दिवस) 2022

अप्पन दलान

अक्तूबेरक समय। अस्सी बर्खक खुशीलाल भाय अपन नैष्ठिक[13] नैतिक बीतल जीवन मने-मन विचरण करैत देखि रहल छला। देखि रहल छला पिताक बनौल माटिक भीतक देवाल जोड़लपर टीनक चदरा चढ़ल दलान। पचास-साइठ बर्खक भीत आ पनरह बरख पहिलुका चढ़ौल टीनक चदरा, नजैरिक सोझमे अबिते मन कहलकैन, 'चाहे जेहेन दलानक घर अछि मुदा ओहन घर तँ छीहे जे कानैत-भूखल लोकक छाहैर बनल रहल अछि।' मनमे खुशीक हिलोर खुशीलाल भायकेँ उठलैन। मनक हिलकोरमे दलानपर राखल जोड़ भरि लकड़ीक कुरसी आ बगलमे सजौल चौकी हिलोरित भेलैन। पिताक बनौल कुरसियो आ चौकियो छिऐन। खुशीलाल भायकेँ खूब मोन छैन जे जहिया बीस-पचीस बर्खक रही तहिये अपन गाछीक बड़बरिया आमक गाछ काटि चौकियो आ कुरसियो बनबौने रहैथ। अपने ओकरा बदलैक खगते ने भेल, तँए दोसर नइ बनेलौं। बदलै आ नइ बदलैक अनेको कारण अछि से अखन नहि। अखुनका लोक जकाँ भंग-बताह वा भंग-तराह नइ ने छी, जे आधा घर कपड़े लत्तासँ आधा बीते-बरतनसँ आ चौकिये-कुरसियेसँ भरि लेब। पचास बर्खसँ ऊपरक चौकी अखनो अपन सेवा ओहिना दऽ रहल अछि जेना पचास बरख पूर्व देब शुरू केलक। आ तहिना कुरसियो अछिए। ओना, चौकी अपन रूपमे ओहिना अछि, मिसियो भरि ढील-ढाल नहि

[13] **निष्ठावान**

भेल, मुदा कुरसीक पौआ थोड़ेक ढील-ढाल जरूर भऽ गेल अछि।

ऐठाम नव पीढ़ीक लोककेँ कहए चाहै छिऐन जे जे मिथिलाक भूमि दर्जनो धारसँ आइये नहि, सभ दिनसँ घेराएल रहल अछि, तैठाम जनमानस भीतक (माटिक) देवालपर खढ़-बाँसक आलमसँ घर बना खुशीलाल भाय दिवस गुदस करैत एला अछि.! ऐठाम एकटा बात मनमे उठि सकैए, ओ अछि जखन कोसी-कमलाक बाढ़ि गाम-गामक भीत घरकेँ मेटा देलक तखन खुशीलाल भाइक केना बँचल रहलैन? माने, जखन कोसी आ कमला, दुनू धारक बाढ़ि अबिते छल तखन भीत घर केना ठाढ़ रहल? हँ, अहूँक अनुमान ठीके अछि। मुदा सत्य ई अछि जे पहिने धारक बाढ़ि छिड़ियाइत चलै छल, जइसँ नीचे-नीचे, नीचरस जमीन होइत बाढ़िक पानि आगू मुहेँ बढ़ैत जाइ छल। केहनो पैघ बाढ़ि अबैत रहै तँ अढ़ाइ दिनक पछाइत जरूर निच्चाँ मुहेँ भऽ जाइ छल। तँए पहिलुका लोकक कहब छैन जे बाढ़िक चढ़न्त मात्र अढ़ाइ दिन होइए। खाएर जे होइए कि होइ छल, मुदा साए-सवा-साए बर्खक भीतघर तँ होइते छल।

दलानपर बैसल खुशीलाल भायकेँ अपन आवास (रहैक ठौर) देखि मने-मन तृप्तिक आश लागिये रहल छेलैन। अप्पन अन्तिम दिनक बीचक समय, जे आवाससँ परिपूर्ण देखि रहल छला जइसँ खुशीलाल भाइक मनमे तृप्ति भऽ रहल छेलैन। अखनो ओहन घर (दलानक घर) मनो-मन आ आँखियोसँ देखिये रहल छी जे अहुना बनल रहत तँ पनरह-बीस बरख आरो सेवा दइ-जोकर रहबे करत। मनुक्खक बासक माने भेल, घर केहनो सुन्दर-सँ-सुन्दर मजगूत-सँ-मजगूत किए ने हुअए मुदा जँ ओइमे मनुक्खक मनुक्खपन नहि रहत तँ ओ मरनासन्न भइये जाइए।

मने-मन खुशीलाल भाय गाम दिस नजैर दौड़ा अपनाकेँ अंकलैन तँ बुझि पड़लैन जे अपनासँ बीस उमेरक गाम-समाजमे तीन गोरे बँचल छैथ। चारिम अपने छी, माने जे तीन गोरे अपनासँ जेठ छैथ तइमे एक

गोरे तीन मासक, दोसर पाँच मासक आ तेसरक संग उमेरक फड़िछौठ नहि भेल अछि जे ओ जेठ छेथ कि अपने जेठ छी। मुदा हारि मानी झगड़ा फरिआए। खुशीलाल भाय अपना पत्नीकेँ दुरागमनक पछातिये कहि देने छेलखिन जे मोतीलाल भैंसुर हेता। ओना, मोतीलालक पत्नी सेहो खुशीलाल भायकेँ भैंसुरक लाज-धाक करिते छथिन, से करै छथिन पाकल केश आ दाँत टुटल मुँह देख। खाएर जे करैत होथि से ओ जानैथ। मुदा धखाइ नहि छैथ सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।

जीवनक आवश्यकताक पूर्ति देखि खुशीलाल भाय जुड़-शीतल पाबैन-दिन जकाँ विचारक पोखैरमे उमकए लगला। अपन उमकीकेँ पत्नीक संग उमकब नीक बुझि पत्नीकेँ हाक दैत बजला-

“कनी दलानपर आएब।”

दलानक बगलेमे सुनितिया भौजी छेली, पतिक हाकक हकवाहि नीक जकाँ सुनली। उमेरमे खुशीलाल भाय जेठ छैथ आकि सुनितिया भौजी छथिन, से फड़िछौठ दुनू परानीमे अखनो तक पछुआएले छैन। ओना, कहब जे जखन जीवन छी तखन अप्पन फड़िछौठ नहि करैत चलब तँ जवानीक केलहा काजक केस[14] तीस बर्खक पछाइत कोर्टमे खुजत आ बुढ़ाड़ीमे सजा पाबि जहलेमे मरब। मुदा से नहि, खुशीलाल भाय दुनू परानीक बिआह बच्चेमे भेल छेलैन। खरहीक नापसँ दुनू गोरे नापल गेला तइमे सुनितिया डेढ़ आंगुर छोट आ खुशीलाल भाय डेढ़ आँगुर नमहर रहथिन, तँए बरतुहार सभ हरे-हरे कऽ उपयुक्त मानि वैवाहिक यज्ञ सम्पन्न केलैन।

बारह बर्खक पछाइत जखन दुनूक दुरागमन भेलैन तखन तँ शरीरक कद महत्वहीन आ उमेर[15]क प्रमुखता भऽ गेलैन। सुनितिया

[14] **मुकदमा**

[15] **आयु**

भौजी कम बढ़नमा, तँए कद छोटे रहलैन मुदा खुशीलाल भाय बच्चेसँ छरहर, तँए कदमे एक बीत नमहर अखनो छथिए। मुदा उमेरक विषय सेहो अछि जइमे खुशीलाल भाय जेठ छैथ आकि सुनितिया भौजी जेठ छैथ से फड़िछौठ बाँकीए अछि।

दुरागमनक पछाइत जखन दुनू गोरेक बीच बिआहक चर्च भेलैन तखन खुशीलाल भाय पुछलखिन-

"जइ दिन दुनू गोरेक बिआह भेल, तइ दिन अहाँ केते दिनक रही? छअ बरख छअ मास छअ दिनक हम रही।"

मने-मन सुनितिया भौजी गुनि लेलैन जे ऐ हिसाबे अपने बेसी उमेरक रही, किए तँ सात बरख सात मास सात दिनक अपने रही। मुदा से केना बाजब। आ जँ नइ बाजब तखन तँ नामेमे माने 'सुनितिया'पर भादोक चौठक चान जकाँ कलंक लागत। बेसी उमेरक रहितो सुनितिया भौजी बजली-

"अहाँ केना अप्पन उमेर बुझै छी?"

खुशीलाल भाय मोन पाड़िकऽ बजला-

"माए कहने छेली।"

ऐठाम ई नहि बुझब जे नेत गुणे नीति बनैए, ऐठाम एतबे बुझू जे महिला अपनाकेँ हीन, ओही दिनसँ मानि रहली अछि जहियासँ दलानपर बैसैक अधिकारी पुरुख भेला आ आँगनक महिला। चौघारा हुअ कि तीनघारा वा दूघारा, दलानक महत्व सभसँ ऊपर अछिए। महत्वक एहेन विचार खाली वैचारिके नहि बेवहारिक सेहो अछि। दलान दस दुआरी छी, जे परिवारसँ लऽ कऽ समाज धरिक आवासो आ विचारो-विमर्श करैक जगह रहल अछि।

ओना, एकर दोसरो पक्ष अछिए। ओ अछि आवासक अभाव। पैछला पुरुखाकेँ आवासक समस्या केहेन छेलैन, सेहो तँ देखए पड़त।

जैठाम अभावक जिनगी छल तैठाम भावक पूर्ति करब बाल-बोधक खेल नहियेँ छी।

दलानक कतवाहियेमे सुनितिया भौजी छेली, पतिक हाक सुनि दलानपर आबि बजली-

“की कहै छी?”

एक तँ खुशीलाल भायकेँ जीवनक एक मूल समस्याक समाधान सोझामे देखि मन उमकल छेलैन, तैसंग अस्सी बर्खक ओहन पत्नीक आस अखनो भेटिये रहल छैन जे जीवनक अन्तिम छोरपर पहुँच, सेवा दइले तैयार छैन। खुशीलाल भाय बजला-

“की कहब?”

जहिना भनसिया तम्मामे चाउरक मुड़ी छोपि सिदहा बनबै छैथ तहिना खुशीलाल भाइक विचार सुनितिया भौजीकेँ बुझि पड़लैन। मुदा अप्पन प्रौढ़पन उमेरक विचार करैत सुनितिया भौजी बजली-

“काज करै छेलौं, तेकरा छोड़ि कऽ एलौं हेन आ अहाँ किछु बाजिये ने रहल छी।”

सुनितिया भौजी जइ हिसाबे बजली, से हिसाबे खुशीलाल भाइक मनसँ मेटा गेलैन। तँए असमंजसमे पड़ि गेल छला। पतिक मुहसँ आगू किछु नहि निकलैत देखि सुनितिया भौजी दोहरा कऽ बजली-

“आगूक बात बिसैर गेलौं आकि सोझामे नहि बाजए चाहै छी?”

खुशीलाल भाइक मन तरे-तर तेना गदगद होइत रहैन जे वाण रूपमे धनुषपर चढ़िये ने रहल छेलैन। ओना, नजैर उठा पत्नीपर नइ दैत रहैथ सेहो बात नहियेँ अछि मुदा जहिना अयोग्य छात्रकेँ माने कम अध्ययनशील विद्यार्थीकेँ परीक्षामे नीक रिजल्ट भेटने उचितसँ अधिक खुशी होइए तहिना नीक अध्ययनशील विद्यार्थीकेँ दब रिजल्ट भेटने दुख

सेहो होइते अछि। तखन तँ भेल जे वएह ने हर्ष-विषमयक माने खुशी-दुखीक बीच रहला, जिनकर अध्ययन आ परिणाम समगम रहलैन, माने अध्ययनक अनुकूल रिजल्ट भेटलैन। खुशीलाल भाइकेँ तहिना अप्पन जीवनक रिजल्ट भेटने भऽ रहल छेलैन।

सुख-दुखक बीच अस्सी बर्खक खुशीलाल भायकेँ आइ एकाएक मोन पड़लैन अप्पन सामाजिक जीवन। जखन कौलेजसँ निकैल, नोकरीसँ धियान हटा अपन पूर्वजक देल सम्पैतकेँ जीवनाधार बना जीवनकेँ संकल्पित करैत समाजक बीच अपनाकेँ स्थापित करए लगला, तखन समाजमे ओहन लांछना नहि लगौल गेलैन जे सोल्होअना असत्य छल। अखन सुधांशु शेखर भाइक परमाक चर्च नहि कऽ रहल छी, अखन खुशीलाल भाइक चर्च कऽ रहल छी। जहिना अखन समाजमे लूट-खसोट चलि रहल अछि तहिना अपना समयमे, माने पचास-साइठ बरख पूर्व नहि चलै छल सेहो बात नहियेँ छल, चलिते छल। नीतिपूर्ण इमानदारीक प्रशंसा शब्दवाणमे तहियो होइ छल, अखनो होइए, मुदा ओ बेवहारसँ केते सटल छल वा अछि आकि हटल छल आकि अछि, ओ अखनो सोझामे अछिए। देखतो छी आ सुनितो तँ छीहे जे ओइ समयमे माने पचास-साइठ बरख पूर्व केहेन दशा-दिशा छल आ अखन की अछि.! खुशीलाल भाइक आगूमे ठाढ़ भेल सुनितिया भौजीकेँ नहि रहल गेलैन, बजली-

“जखन मुँहमे बोले नइ अछि तखन अनेरे हाक किए पाड़लौं?”

एहेन बात तँ सभकेँ बुझले अछि जे आनठाम जे तीन-तेरह हुअए मुदा घरमे माने परिवारमे, पत्नी लग तँ पतिक रूपमे भरण-पोषण करए पड़ैए। भलेँ ओ झूठक खजाना हुअए आकि सत्यक। खुशीलाल भाय बजला-

“अहीं मनक बात तँ अपनो मनमे नाचिये रहल अछि जे जहिया दुनू गोरेक बिआह भेल तहिया अपना दुनू गोरेकेँ बेसी खुशी भेल आकि

माए-बापूकेँ बेसी खुशी भेल रहैन?”

समाजक लोक तँ भोजखौका छियाहे, साढ़े तीन-तीन-चारि-चारि घन्टा बैस कऽ बीत भरिक पेट ले मर्यादक भोज, वैवाहिक अवसरपर खेलैन आ खाइतो तँ छथिए, मुदा संग पुरैकाल बिसैर जाइ छैथ। लोरिकोकेँ यएह ने मनमे रहैन जे ‘जे लोरिकक भात खाएत तेकरा बरियाती पूरए पड़तै।’ समाजक संग बेकती चलए वा बेकतीक संग समाज, एहेन प्रश्न तँ तहियो छल आ अखनो अछिए।

एकसंग अनेको विचार खुशीलाल भाय बाजि गेला, जे थोड़-थाड़ सुनितिया भौजी बुझबो केली आ नहियोँ बुझली। दस साल पर्व ब्रह्मस्थानमे भागवतक कथामे व्यासजीक मुहेँ सुनने छेली जे महाभारतमे निनानबेअम श्लोकक पछाइत साएम श्लोक दृष्टिकूट छी, जे जीवनक चौराहा सेहो छीहे..। तैपर जहिना सुनितिया भौजीक नजैर तँ दौड़ल छेलैन मुदा नीक जकाँ बुझि नहि पेने छेली, तहिना आइ पतिक विचार बुझिमे नहि एलैन। बजली-

“एना जे तीन आ तेरहकेँ एकठाम मिला कऽ बजलौं, तइसँ नीक ने जे किछु बजबे ने करितौं।”

पत्नीक मुँहक बात सुनि खुशीलाल भाय सोल्होअना पतिया गेला। मन कहलकैन, जनु अपने बजैमे केतौ पतिपन भेल अछि। पियासल चिड़ै जकाँ निछोह उड़ैत खुशीलाल भाइक मन पत्नीक ओइ हृद-स्थल लग पहुँच गेलैन जैठाम मनक भवित भाव बुझए चाहै छैथ। ..खुशीलाल भाय बजला-

“दुनू परानीमे जाबे खटसमाद नहि करब ताबे दुनियाँक संग की कऽ सकब।”

पतिक विचार सुनि सुनितिया भौजीक मनमे उठलैन जे जहिना बालो-बोध पैघ-सँ-पैघ माने गम्भीर-सँ-गम्भीर विषयक चर्च माता-पिता

वा सरे-समाजक मुहसँ सुनैत एहनो पश्न तँ विचारसँ निकालिते अछि, जे नइ बुझला पछाइत विषयक हृदयस्थलीकेँ छेद दइए। भलेँ ओ किए ने जीवनक पहिल दिनक प्रथमे विचार होउ। सुनितिया भौजीक मनमे पतिक विचार घर केलकैन। जइसँ नव-नव विचार मनमे जागए लगलैन। लूंगी मिरचाइक घौंदा जकाँ एक्केठाम अनेको फूल-फड़ फुलए-फड़ए लगलैन। चतुर्मुखी खुशीक बीच अनेको विचार सुनितिया भौजीकेँ मोन पड़ि गेलैन। मुदा संयोग बनल, दुनियाँ-दारी दिससँ नजैर समेट सुनितिया भौजी बजली-

"सदिकाल अहाँ उटपटाङ्गे बात बजै छी तँए नीक नइ लगैए।"

ओना, सुनितिया भौजीक विचार सुनि खुशीलाल भायकेँ मनमे मिसियो भरि कुवाथ नहि भेलैन, जे एहेन बात पत्नी किए बजली। अपने मन अप्पन विचारक छोड़ पकैड़ सुझौलकैन जे असत बजनिहार सत्य बातकेँ उटपटांग जहिना बुझैए तहिना ने सत्य बजनिहार असत्य बातकेँ सेहो उटपटांग कहिते अछि। मुदा कोन उटपटांग भेल आ कोन सुटपटांग भेल से फड़िछौठ केना हएत। तइले ते बीचमे काजेक[16] तराजू बनबए पड़त किने। जे स्वत: नीक भेने नीक फल आ अधला भेने अधला फल दइते अछि। विचारक समुद्रमे भँसियाइत खुशीलाल भाय आह्लादित होइत बजला-

"की उटपटांग बजै छी, लगमे रहितो अहूँ आइ अस्सी बरख बितला पछातियो कहियो बजलौं। जँ शुरूहेसँ बजैत रहितौं तँ अखन उटपटांग लगैत?"

अपना जनैत खुशीलाल भाय ओइ विचारकेँ दाबि कऽ बाजल छला, जे विचार मनमे विचरण करैत रहैन जे जँ जीवनक शुरूआतीए अवस्थामे अन्तिम लक्ष्य बना तर्क-वितर्क करैत सुदृढ़ जीवन बना

---

[16] **कर्मेक**

सकितौं, मुदा से चूक तँ भेबे कएल।

तैबीच सुनितिया भौजीक मन कहलकैन, जँ दुनू परानी मुँह खोलि परिवारक दशा-दिशाक विचार नहि करैत चलब तँ परिवार दिशाहीन भऽ जाएत। ओना, मनमे पैछला विचार सेहो घुरियाइते रहैन, मुदा तइयो बजली-

“अहाँ जे कहलिऐ जे अपना दुनू गोरेक बिआह भेल तइमे अपना दुनू गोरेकेँ बेसी खुशी भेल आकि माए-बाबूकेँ बेसी खुशी भेलैन, से एहेन विचार उटपटांग नइ भेल?”

पत्नीक विचार सुनि खुशीलाल भाइक अपने मन मनाही केलकैन जे देखो-देखीसँ सीखा-सीखी होइते अछि। परिवेश एहेन बनियेँ गेल अछि जे माता-पिताक बिनु राय विचार नेनहि बेटा-बेटी खुशी-खुशी अपन बिआह कइये रहल अछि, तैठाम माए-बाबूकेँ खुशी हेतैन आकि दुख हेतैन, ईहो कोनो प्रश्न भेल। हर मनुक्खक मनमे रहै छैन जे मनुक्खक जीवनक धार, जे लाखो बर्खसँ चलैत आबि रहल अछि, ओ केना सम्वेदित रूपमे समयक संग आगूओ चलैत रहए, मुदा से भेटैए जीवनानुभवसँ। खाएर जे जेना भेटए, मुदा खुशीलाल भाइक मनमे पूर्वजक अप्पन छाप छैन्हे जे छपितो नहियेँ अछि। सभ जनिते छैथ जे अपना सभक जे पूर्वज छला, हुनका सभक जीवन आजुक जे जीवन अछि, तइ अनुकूल नहि छेलैन। पछुआएल बेसी छेलैन। तँए माता-पिता अपन जीवनक कर्ममे बेटा-बेटीक बिआह-दान करा परिवारक सृजनक संकल्पकेँ पुरबै दुआरे बिआहकेँ यज्ञ रूपमे श्रेष्ठ बुझलैन, जेकरा जीवनक अनिवार्य काज मानि अपना आँखिक सोझमे करैत आबि रहल छैथ। मुदा जीवनो तँ क्षणभंगुर छीहे। ओना, क्षणभंगुर रहितो मनुक्ख अपन बुधि-विवेकक कर्म-धर्मसँ क्षणभंगुरपनकेँ कम करबे केलैन अछि, मुदा पूर्वमे से नहि छल, तँए माए-बाप अपना आँखिक सोझमे अपन हाथसँ

अपन काज केलाक पछाइत मृत्युक मुँहमे जाइक विचार स्वीकार केलैन। एहेन बिआह माता-पिताक खुशीक विषय भेलैन कि नहि। अपना जनैत पत्नीकेँ बुझाएबसँ सन्तुष्ट होइत खुशीलाल भाय पूर्ण तृप्तिक अनुभव केलैन। जइसँ मनमे अनेको जीवनानुभव नाचि उठलैन। वर्तमानक सुख-दुख मनमे दबि गेलैन आ अतीतीय जीवनक खुशी ठोरपर पहुँच गेलैन, जइसँ ठोर विहुसलैन जरूर मुदा फुटलैन कनियोँ नहि।

पतिक विहुसपन देखि सुनितिया भौजीक ठोर सेहो ओहिना विहुसि गेलैन जेना पतिक जीवनकेँ पत्नी आ पत्नीक जीवनकेँ पति अपन जीवन बुझि हर्षसँ हर्षित होइ छैथ। ..सुनितिया भौजी बजली- “हँ, से तँ होइते छैथ।”

जहिना एक विचारक धारक नदीमे पति-पत्नी विचरण करैत जिनगीक नहान नहाइ छैथ, जइसँ समरूप जीवन दर्शन भेटैए तहिना खुशीलाल भायकेँ भेलैन। अपन विचार उठबैत बजला-

“अहीं कहू जे एहेन के मनुक्ख अछि जे अपनाकेँ धर्मनिष्ठ कर्मक धारमे नहाए नहि चाहैत हुअए?”

पतिक बात सुनि सुनितिया भौजी कने धकमकेली। धार तँ धारे छी, चाहे ओ गंगा हुअए कि यमुना, सरस्वती हुअए कि कावेरी, सभ तँ जलधारे छी। तैठाम केकरो नीक आ केकरो अधला कहैले तँ ओकर जल परीक्षण करए पड़त.! जहिना कियो काजक प्रक्रियाक ओझरौठ देखि हड्डाक कोढ़िया बरद जकाँ कन्हा झाकैक विचार करैए तहिना सुनितिया भौजी कन्हा झँकैत बजली-

“हँ, से तँ सभ चाहिते छैथ।”

केतौ जेबाकाल जहिना बालो-बोध आ चेतनो चिन्तक संग मिलि डोरियाइत विदा होइ छैथ तहिना खुशीलाल भाय अपन जीवनाधारक चर्च करैत बजला- “जइ समयमे अपने कौलेजसँ निकैल, अपन जीवनकेँ

अपन पूर्वजक देल सम्पैतियो आ बेवहारोकेँ पकैड़ समाजक बीच रहैक, माने गाममे रहैक विचार मनमे रोपि, डेग बढ़ेलौं तखन समाजक लोक की सभ कहलैन, से सभकेँ मोने हेतैन।"

अपन बीतल दिनक संकल्पक जड़िमे जल-ढार करैत खुशीलाल भाय दोहरा कऽ बजला-

"जखन अपने सत्य बजैक संकल्प मनमे रोपि दोसरोकेँ सत्य बजैक संकल्प रोपैले कहलिऐ, तखन झूठ बजनिहारक जमात केतेक प्रवल छल, से भलेँ अहाँ बुझैत होइ वा नहि, मुदा अपने तँ धुनिया जकाँ रूइयाकेँ धुनैत अनुभव करबे केने छी।"

खुशीलाल भाइक विचार सुनितिया भौजी नीक जकाँ नहि बुझि पेली, तँए जहिना चिड़ैक गेल्ह चहरा खातिर मुँह उठबैए तहिना मुँह उठा कऽ बजली-

"से की?"

पत्नीक जिज्ञासाकेँ खुशीलाल भाय आँकि लेलाह जे गंगोत्रीसँ निकैल गंगा यमुनाधार पकैड़ गंगासागर तकक प्रवाहमे पत्नी नहाए चाहै छैथ, मुदा से धड़फड़मे केना हएत? एकटा उत्तरांचलक पहाड़सँ निकलैए आ दोसर समुद्रक मुँहक मिलानी अछि, तैठाम धड़फड़मे नहाएब केना सम्भव हएत? मुदा तैयो सामंजस करैत खुशीलाल भाय बजला-

"खटसमादक आइ पहिल दिन छी, तँए मात्र एकेटा विचारणीय बात कहब।"

सुनितिया भौजीक मन जेना ठेहिया गेल छेलैन तहिना बजली-

"जएह कहब, जेतबे कहब सएह कहू।"

विस्मित होइत खुशीलाल भाय बजला-

"पिताजीक बनौल ई दलान छिऐन, जइमे अखन अपना दुनू गोरे

छी। जहिना दलानपर आएल अतिथि-अभ्यागतक सेवा पिताजी केलैन तहिना अपनो अरवन तक निमाहि रहल छी, तैठाम जँ कियो कहता जे ई झूठ छी, तँ झूठ बजनिहार ने झुट्ठा भेल आकि अपने झुट्ठा भेलौं?"

एक तँ शब्दक लय सुनितिया भौजीकेँ नीक लगलैन, तैसंग भाव रूपमे भावनाकेँ नहि बुझने विलयमे प्रलय सेहो रहबे केलैन, तँए खाली मुड़ी डोलबैत रहली मुदा मुहसँ किछु नहि निकललैन।



शब्द संख्या : 2480, तिथि : 06 मई 2022

कंजूसपन

सरसठ बर्खक अवस्थामे गोपीकान्त बाबूकेँ आइ भान भेलैन जे अपन कंजूसपनक चलैत अपने सफल नहि भऽ रहल छी। कंजूसपनक विचार मनमे उठिते गोपीकान्त बाबूक अपने मन प्रतिवाद केलकैन जे कौलेजेमे सभसँ बेसी खरचिला शिक्षको सभ बुझै छला आ अपनो मन मानियेँ रहल छल जे ने अनका जकाँ तीनिमंजिला मकाने बना सकलौं आ ने बाल-बच्चाकेँ खर्चक अभावमे सम्हारिये सकलौं जे अपना पछाइत ओहो सभ ऐठाम तक पहुँच माने प्रोफेसर वा तइ समतुल्य जीवन बना परिवारक धारकेँ आगू बढ़बैत।

सरसठ बर्खक प्रौढ़ विचारक गोपीकान्त बाबूक मनमे समुचित विचार जगबे ने करैन जे एहेन कोन कारण जीवनमे भेल जे मनक मुराद पूरा नइ कऽ सकलौं.!

गोपीकान्त बाबूक मनमे एहेन विचार उठबे ने करैन जे हर मनुक्खक अपन-अपन जीवन होइए, आ ओइ जीवनानुकूल अपनाकेँ बना यापन करैए। एहेन विचार गोपीकान्त बाबूक मनमे उठबे किए करितैन। अपन जीवनक निर्माण ओहन परिस्थितिमे भेलैन जखन पिताजी पनरह बीघा खेतक जोतक किसान रहैन। बाढ़ि-रौदीसँ सुरक्षित गाम सोनपुर अछिए। माने भेल जे सोनपुर ओहन जगहपर बसल अछि, जैठाम ने कोसी-कमला बाढ़िक प्रकोप अछि आ ने खेतले पटौनी-पाइनिक अभाव। गाममे पोखरियोक संख्या अधिक अछि आ एकटा

धारो ओहन अछि जइमे बारहो मास चलाइमान पानि रहिते अछि। तैसंग गामक किसान सेहो जागल छथिए। जागल परिवार रहने कृष्णकान्त[17] अपन खेतकेँ चकबन्दी कइये नेने छला। तैसंग बोरिंग सेहो करौने छला जइसँ रौदीक बचाउ सेहो छेलैन्हे।

कृष्णकान्तक एकलौता बेटा गोपीकान्त। ओना, तीनटा बेटी सेहो छेलैन, तँए सोल्होअना अपन जीवनानुदेश्य बेटाक पढ़ाइमे लगा देलैन। ऐठाम ई नहि कहए चाहै छी जे, जे किसान परिवार समुचित ढंगसँ चलि रहल अछि तइ परिवारमे किसानी जीवनसँ जुड़ल शिक्षा अधिक उपयोगी हएत। ई दीगर जे टुटैत किसानी जीवन किसानक विचारकेँ तेना तोड़ि-मरोड़ि देने अछि जे सबहक जीवनक आशापर पानि फेराइये गेल अछि, जइसँ अपन परिवारक स्वावलम्बनक आधारे चरमरा गेल अछि।

एम.ए. केलाक पछाइत गोपीकान्त बाबू कौलेजक शिक्षक बनला। औझुका जकाँ तँ कौलेजक प्रोफेसरकेँ दरमाहा नहियेँ छेलैन, मुदा समाजमे ओहन मान-प्रतिष्ठा बनियेँ गेलैन, जेहेन कौलेजक प्रोफेसरकेँ होइ छैन। आजुक परिवेश ठीक ओकर विपरीत भऽ गेल अछि। ओना, मान-प्रतिष्ठामे दबैक कारण जहिना देनिहारमे घटल अछि तहिना पौनिहारोमे घटबे कएल अछि। खाएर जे अछि। प्रोफेसर लोकैन कौलेजमे पढ़बैसँ मुँह मोड़ि, ट्यूशन दिस बेसी बढ़ि गेला अछि। खाएर जे बढ़ला अछि, समाजक तँ नीक पढ़ल-लिखल कोटिमे छथिए। शुरूमे गोपीकान्त बाबू सेहो परिवेशक अनुकूल आचरण बनौनहि छला जे धीरे-धीरे बदलैत-बदलैत आजुक परिवेशक अनुकूल भइये गेलैन अछि।

गोपीकान्तकेँ आठ बरख नौकरी केलाक पछाइत कृष्णकान्त मरि गेलखिन। पिताक मुइला पछाइत अपन सभ खेत गोपीकान्त बाबू बटाइ लगा लेलैन।

---

[17] **गोपीकान्तक पिता**

अखन तक समाजमे बटाइ खेतक वएह पद्धति चलि रहल छल जइमे आधा-आधी उपजक बँटवारा होइत अछि। गाममे कम्मे किसान ओहन छला जिनका अपना बेसी खेत छेलैन। बहुसंख्य किसान ओहन छैथ जिनका या तँ खेत छेलैन्हे नहि जे बटाइ खेती करैत बटाइदार किसान कहबै छला, वा थोड़-थाड़ अपनो खेत छेलैन आ थोड़-थाड़ बटाइ सेहो करै छला। गामक अधिकांश जमीन या तँ जमीन्दारक छेलैन वा मास मालिकक, जे अपन हर-बरद राखि अपनो खेती करै छला आ बटाइयो लगबै छला।

समय बदलल, खेतक उपजमे बटाइदारक हिस्सा बढ़ल। जइसँ परम्परासँ अबैत बटाइदारीक हिस्सामे विवाद शुरू भेल। किसान आधासँ बेसी हिस्सा बटेदारकेँ दइले तैयार नहि भेला आ बटेदार अपन हिस्सा छोड़ैले तैयार नहि भेला, जइसँ केतेको बटेदार खेती छोड़ि देलैन। ओना, सोल्होअना ने बटेदार खेती छोड़लैन आ ने सोल्होअना किसाने बटाइदारी हिस्सा दइले तैयार भेला। किछु किसान एहेन भेबे केलाह जे कानून मानि बटाइदारी हिस्सा दइले तैयारो भेला आ दियौ लगला।

गामसँ तीस किलोमीटरपर गोपीकान्त बाबूक कौलेज रहैन तँए अपन पत्नी आ बाल-बच्चाक संग बाहरे रहै छला आ माए गाममे रहै छेलखिन। जाबे तक पिता जीबैत रहलैन ताबे तक अपने खेती करैत रहलखिन, मुदा हुनका मुइला पछाइत परिवारमे कियो दोसर समांग नहि छेलैन तँए बटाइ लगबैक नौवत गोपीकान्तकेँ आबि गेलैन। ओना, गामक आनो-आन किसान सभ अपने खेती करै छला। हुनको सभक संग अनेको समस्या उपस्थित भइये गेल रहैन। समस्या ई उपस्थित भेलैन जे अखन तकक जे खेतिहर मजदूर, माने खेतमे काज करैबला श्रमिक छला आ हुनकर जे मजदूरी छेलैन, तइमे बढ़ोत्तरी मात्र कानूनी रूपमे भेल। किएक तँ कानून बनि गेल मुदा किसान ओकर विरोध केलैन। विरोध ई

केलैन जे पूर्वसँ अबैत मजदूरी नहि बढ़ौलैन। ओना, किछु गाम एहेन भइये गेल जइमे मजूदर अपन विरोधक तेवरकेँ मजगूतीसँ पकैड़, खेती-बाड़ीक काजकेँ विरोध केलैन, जइसँ मजदूरक बढ़ल मजदूरी लागू भेल आ किछु गामक किसान अपन शक्तिसँ ओकरा दबौने रहला, जइसँ मजदूरीक बढ़ौत्तरी नहि भेल।

कृष्णकान्त बाबूकेँ मुइला पछाइत गोपीकान्त अपन सभ खेत ओहन बटेदारकेँ देलैन जिनकर सम्बन्ध परिवारसँ रहल छेलैन। जइसँ ने बटाइदारीक बँटवाराक विवाद कहियो उठलैन आ ने खेतीमे कोनो बाधा उपस्थित भेलैन। तइमे गोपीकान्त एकटा बुधियारी आरो केलैन जे सभ खेतकेँ सालक हिसाबसँ मनखप लगा देलैन। मनखप भेल सालक उपज निर्धारित करब।

कृष्णकान्त बाबूक पत्नी माने गोपीकान्तक माए 'सुमित्रा' गाममे रहै छेलखिन, जे अपन खेनाइ-पीनाइ बनबै धरि अपनाकेँ सीमित रखने छेली। पति खेती-बाड़ीक काज सम्हारैथ आ सुमित्रा भानस-भात सम्हारैत घर-अँगनाक काज करैथ।

बत्तीस बरख नोकरी केलाक पछाइत गोपीकान्त बाबू गाम आबि खेती करैक विचार केलैन। एक तँ ओहुना परिवारक खेती देखल रहबे करैन आ दोसर, नोकरी समाप्त भेने किछु काजो तँ चाही। ओना, नोकरीक समय तक गोपीकान्त बाबूक मनमे कहियो ई नहि उठल छेलैन जे सेवा-निवृत्तिक पछाइत खेती करब। एक तँ ओहुना नोकरिहाराक मनसँ मेटाइये जाइए जे सेवा-निवृत्तिक पछाइत दोसर जीवन धारण करए पड़त।

गाम आबि जखन गोपीकान्त विचार केलाह जे खेती अपने करब तखन एकटा समस्या आगूमे एबे केलैन जे, जे खेत मनखप बटाइ लगा देने छी ओ खेत अपना हाथ केना औत? जँ बटाइदार छोड़ैले तैयार नहि

होथि तखन की करब? मुदा समस्या रहितो गोपीकान्त बाबूकेँ कोनो तरहक बाधा नहि भेलैन। बाधा नइ होइक कारण भेलैन जे, जे सभ बटेदार छेलखिन तिनका सभक बेटा, माने समांग, गाम छोड़ि दिल्ली-कोलकाता चलि गेला। ओना, गोपीकान्त बाबूक बटेदारेक बेटाटा गाम नहि छोड़लैन, सोनपुरे नहि आनो-आन गामक युवा शक्ति गाम छोड़ि शहर पकड़ियो रहला अछि आ पकड़बो केनहि छैथ। जइसँ गामक श्रम-शक्ति कमजोर भेबे कएल अछि। जखन गाममे काज करैबलाक लोकक अभाव भऽ जाएत तखन गामक क्रिया-कलापमे कमी हेबे करत। गोपीकान्त बाबूक खेतक जे बटेदार रहैन, समांग सभकेँ बाहर गेने खेती जानपर आबिये गेल छेलैन, मुदा जेना-तेना तइयो खेतीकेँ पकड़नहि रहला। जखन अपन उमेर माने बॅंटेदारक उमेर, काज करैबला छेलैन तखन खेतक उपज नीक होइ छेलैन आ जखन उमेरक हिसाबसँ अपन शरीरक शक्ति कमलैन तखन खेती जानक जपाल भइये गेलैन, जइसँ खेतबलाक खेत वापस करैक विचार मनमे आबिये गेल छेलैन।

जहिना गोपीकान्त बाबू बटेदार सभकेँ खेत छोड़ैले कहलैन तहिना बटेदारो सभ हरे-हरे-क खेत घुमा देलकैन। खेत तँ बटेदार घुमा देलकैन मुदा तैयो एकसंग अनेको समस्या गोपीकान्त बाबूक सोझमे छेलैन्हे। पहिल, खेतक जोतक बेवस्था करब, जइले बरद पोसब वा ट्रेक्टर कीनब जरूरी अछि। ओना, गाममे दू-तीन गोरे ट्रेक्टर कीनने छैथ जे अपन खेत जोतक संग भाड़ामे सेहो काज करिते छैथ। अपन आँट-पेट देखैत गोपीकान्त बाबू भाड़ेक गाड़ीसँ खेती करैक विचार केलाह। अखन तक नोकरीक सुखद जिनगीक भोग भोगल गोपीकान्त बाबूक छेलैन्हे, तँए दूध-दहीक खगता सेहो महसूस भेबे केलैन। ओना, अपन खेत रहने गाए पोसब असाध नहियेँ बुझि पड़लैन, मुदा खेतीक संग एकटा काजक बढ़ोत्तरी देखि मन आगू-पाछू करबे केलकैन। तैसंग माछ-मांस खाइक आदत सेहो लागिये गेल छेलैन, ओना, एकटा दस कट्ठाक पोखैर अपनो

छैन मुदा ओकर उपयोग नहि भेने मरनासन्न भेल छैन। पोखैरमे तेतेक ने केचली आ हाराघास भऽ गेल अछि जे ओकरा उपयोगमे अनैले पुन: उड़ाही करए पड़तैन। दोसर समस्या गोपीकान्त बाबूकेँ ईहो भेलैन जे पिताक गरौल जे बोरिंग छेलैन सेहो नष्ट भऽ गेलैन। पुरान भेने नष्ट होइते अछि। पुरान भेने दमकल सेहो काजक नहि रहलैन। एक संग अनेको समस्याक बीच गोपीकान्त घेरा गेला।

अखन तक गोपीकान्त बाबू खेत रहितो खेती करैसँ दूर रहला, जइसँ खेती करैक तरी-घटी बुझबे ने करै छैथ। अपना मनमे सेहो एहेन विचार कहियो जगबे ने केलैन जे नोकरीक पछातियो जीबाक अछि, तइले जीवनानुभव सेहो बनबए पड़त। रणभूमिमे जहिना कोनो वीर चारूकात दुश्मनसँ घेरा जाइए, जइसँ मृत्यु छोड़ि दोसर कोनो रास्ता नहि देखि पबैए, तहिना गोपीकान्त बाबूकेँ सेहो भेलैन। एकाएक मनमे उठलैन जे जखन अपने कोनो रास्ता, जीवनक रास्ता, नहि देखि पेब रहल छी तखन किए ने गाम-समाजमे दोसरो-तेसरोसँ पुछि लिऐन। ओना, समाजक सम्बन्धक बीचमे एहेन धारणा बनले अछि आ समाजोक लोको ओहन छथिए जे हेराएल-भोथियाएल लोककेँ आरो हेरैबते-भोथिऐबते छैथ, जइसँ समुचित रास्ता भेटब कठिन भाइए जाइए।

एकाएक गोपीकान्त बाबूक अपने मनक वेग जोर दैत कहलकैन जे एते तँ हेबे करत, माने पुछला पछाइत, जे जेते गोरेसँ पुछबैन तेते रंगक विचार आगूमे औत। भलेँ ओ विपरीते दिशाक विचार किए ने हुअए। विपरीतो दिशामे एहेनो तँ होइते अछि जे जहिना पृथ्वीक बीचमे विषुवत रेखा अछि जे पूबो-पच्छिमे आ उत्तरो-दच्छिन, दुनू दिशामे शुन्य-सँ-नब्बे डिग्री अक्षांस रेखा तक अछिए, जइसँ सूर्यक प्रकाशक दूरीक हिसाबसँ दुनू दिसक मौसममे एकरूपता सेहो आबिये जाइए, जइसँ उपजो-बाड़ी आ समयक गुण-दोष सेहो एकरंग भऽ जाइए। भलेँ ओ एक-दोसरक विपरीते समयमे किए ने हुअए।

गोपीकान्त बाबूक मन मानि गेलैन जे, जे काज अपने नहि बुझि रहल छी ओ दोसरो-तेसरोसँ किए ने बुझि ली। बुझैकाल एते तँ हेबे करत किने जे जैठाम बुझैमे कोनो तरहक असुविधा हएत तैठाम प्रश्न उठा दोहरा-तेहरा कऽ पुछि, नीक जकाँ बुझि सकै छी.! ऐठाम अबैत-अबैत, माने विचारमे तर्क-वितर्क करैत-करैत गोपीकान्त बाबूक विचार मनकेँ सहमति दऽ देलकैन जे दोसर-तेसरसँ राय-विचार करब जीवनक लेल कल्याणप्रद हेबे करत। मोन पड़लैन, रामलखन भाय, बच्चेसँ संगी छैथ। अपने एम.ए. पास कऽ कौलेजक प्रोफेसर बनलौं आ ओ बी.ए. पास केलाक पछाइत हाइ स्कूलक शिक्षक बनला। जहिना अपना पनरह बीघा खेत अछि तहिना हुनको दस बीघाक लगभग खेत छैन्हे। मुदा ओ किसान बनि अपनाकेँ स्थापित कऽ लेलैन।

ओना, रामलखन बाबू गोपीकान्तसँ छअ मासक जेठ छैथ, एक गाम-समाजमे रहने सेहो आ एक स्कूल-कौलेजमे पढ़ने सेहो, दुनूक बीच सम्बन्ध बनले छेलैन, मुदा नोकरियोक दौड़मे आ शिक्षोक दौड़मे अगुआ-पछुआ गेले छला, जइसँ दुनू गोरेक बीच मानसिक रूपमे दूरी बनियेँ गेल छैन। मुदा जीवनो तँ जीवन छी, तहूमे सामाजिक जीवन। आब ने ओ देवी रहली आ ने ओ कराह रहल, जइसँ डिग्रियो आ नोकरीक पदो सुखा जकाँ गेबे कएल अछि। ओना, नव जीवनक लेल नव कलशो आ नव मुड़ीक खगता सेहो अछिए। जाबे से नहि हएत, ताबे नव रूपक जीवनमे अपनाकेँ पीरो केना सकै छी.! रामलखन बाबूक सेवा-निवृत्तिक पछातिक जीवन गोपीकान्त बाबू देखि रहल छला जे केना सफल किसानक रूप बना ओ जीब रहल छैथ।

गोपीकान्त बाबूक अपने मन धिरकारि-धिरकारि कहए लगलैन जे अखन तकक, माने नोकरी तकक जे अपन जीवन रहल ओ बीतल दिनक भेल, मुदा अखन जे वर्तमान समस्या अछि तइमे अपने पछुआ रहल छी,

तँए किए ने रामलखन भाय ऐठाम जा ऐगला जीवनक रूप-रेखा तैयार करी, जइसँ रामलखने बाबू जकाँ अपनो सफल हएब। रामलखन बाबू ऐठाम गोपीकान्त बाबू विदा भेला।

ओना, रामलखन बाबूकेँ दूटा बेटा आ एकटा बेटी छैन। बेटी सासुर बसै छैन आ दुनू बेटा नोकरी करै छैन। जइसँ परिवारमे मात्र दुइये परानी रहै छैथ। नोकरीक दौड़मे गोपीकान्त बाबू घरसँ बाहर रहि नोकरी केलैन, मुदा रामलखन बाबू घरेपर रहि नोकरी करैत रहला। माने ई जे गामसँ पाँच किलोमीटरपर विद्यालय रहने, साइकिलसँ सभ दिन अबैत-जाइत रहला। रामलखन बाबूकेँ अपन पूर्वजक खुनौल पोखैर तँ नहि छैन मुदा माछक खगता देखि कट्ठा चारियेक पोखैर खुना माछ सेहो पोसै छैथ। सालो भरि, जखन इच्छा होइ छैन वा कोनो पाहुने-परक आबि जाइ छैन, तखने बंशीसँ माछ मारि लइ छैथ। ओही पोखैरमे रामलखन बाबू बंशी पाथि महारपर बैसल छला कि गोपीकान्त बाबू पहुँचलैन।

दुनू गोरेक, माने गोपीकान्त बाबूक आ रामलखन बाबूक बीचक जे सम्बन्ध रहलैन, माने नोकरीक बीचक, ओ अनोन-विसनोन सन रहबे केलैन। गोपीकान्त बाबूकेँ देखि रामलखन बाबू बजला-

“किमहर-किमहर गोपीकान्त सवारी चलल छह?”

हारल सिपाही जकाँ गोपीकान्त बाबू बजला-

“भाय, अहींसँ किछु विचार-विमर्श करए एलौं अछि।”

‘विचार-विमर्श’ सुनिते बीतल दिनक सम्बन्ध, रामलखन बाबूक मनमे जागि गेलैन तँए विस्मित होइत बजला-

“हम कोन जोकर छी गोपीकान्त, जे राय-विचार दऽ सकबह।”

ओना, गोपीकान्त बाबूक मनमे ईहो उठलैन जे कहिऐन ‘झुटकोसँ घैल फुटैए, मुदा अपने मन रोकैत विचार देलकैन जे अखन किछु ज्ञान उपार्जन करैले, माने किछु सीखैले एलौं अछि, तँए एहेन विचार समुचित

नहियेँ हएत। गोपीकान्त बाबू बजला-

"भाय, किछु छी तँ अपने छह मास जेठ छीहे किने, तेकरा कियो थोड़े मेटा वा बदैल सकैए।"

विचारक प्रवाहमे रामलखन बाबू बजला-

"हँ, से तँ नहियेँ मेटा आकि बदैल सकैए, मुदा मेटबै नइए, सेहो केना नइ कहल जाए।"

रामलखन बाबूक विचार गोपीकान्त बाबूक मनमे ठहकलैन, मुदा तेकरा दबैत बजला-

"दुनियाँ तँ दुनियाँ छी भाय, अजाएब घरक अजवपन जकाँ मनुक्खो तँ अछिए किने। अजाएब घरमे जहिना केकरो मुँह नमहर रहैए तँ कियो मुँहविहीन सेहो रहिते अछि, तहिना केकरो हाथ नमहर तँ कियो हाथविहीन सेहो रहिते अछि। तैठाम तँ लोक अप्पन ने देखत जे अपने की अछि।"

रामलखन बाबूकेँ गोपीकान्तक विचार जँचलैन, जँचिते बजला-

"गोपी, अखन तँ माछ मारैक काजमे लगले छेलौं मुदा जखन अपना काजे तूँ आबि गेलह तखन बंशी समेट लइ छी। दरबज्जेपर चलै छी। चलह, ओहीठाम असथिरसँ गप-सप्प करब।"

ओना, गोपीकान्तक विचार बुझैले रामलखन बाबूक मन तेतेक उताहुल भऽ गेलैन जे पोखैर-महारसँ लऽ कऽ दरबज्जा धरिक रूप, जेना मनसँ मेटा गेलैन। गोपीकान्त बाबू बजला-

"दरबज्जा आ महारमे अनतरे की अछि, अहूठाम तँ विचार-विमर्श कइये सकै छी।"

अपन सहमत जतबैत रामलखन बाबू कहलकैन-

"हँ, से तँ अन्तर कोनो नहियेँ अछि, मुदा जखने दू दिसक काजमे

लागब तखने मन दुनू दिस बँटा जाएत, जइसँ किछु-ने-किछु बेवधान हेबे करत किने।”

रामलखन बाबू बाजियो रहल छला आ बंशियो समेट रहल छला। बंशी समेट दुनू गोरे दरबज्जा दिस विदा भेला।

दरबज्जापर दुनू गोरेकेँ बैसते सतभामा माने रामलखन बाबूक पत्नी, सचरगर गृहिणी जकाँ लोटा-गिलासमे पानि नेने दरबज्जापर रखि चाह बनबए आँगन गेली। सतभामाक बेवहार देखि गोपीकान्त बाबूक मनमे उठलैन जे पत्नी तँ अपनो छैथ, मुदा एहेन कला हुनकामे कहाँ छैन। अपना ऐठाम जँ रहितौं तँ पत्नीकेँ कहए पड़ैत जे चाह बनाउ। तैसंग ईहो होइत जे चाहो आ पानियोँ एक्के बेर लऽ कऽ अबितैथ। तइ बीच रामलखन बाबू बजला-

“जाबे चाह अबैए ताबे अपना सभ किए ने विचार-विमर्श शुरू करी।”

गोपीकान्त बाबू बजला-

“भाय, जहिना अहाँ सेवा-निवृत्ति भेला पछाइत अपनाकेँ स्थापित किसान बनि गेलौं तहिना अपनो मनमे छल, मुदा से भइये ने रहल अछि।”

गोपीकान्त बाबूक विचार सुनि रामलखन बाबूक मनमे एकसंग अनेको प्रश्न उठि गेलैन, मुदा तेकरा मनेमे दाबि बजला-

“की मनमे छह आ की भऽ रहलह अछि?”

गोपीकान्त बाबू बजला-

“चारि साल पहिने जखन सेवा-निवृत्त भेलौं, तखन मनमे उठल जे पुस-पुस्तानिसँ गामक समाजमे किसान परिवार बनल आबि रहल अछि। आब अपने ऐ उमेरमे गाम छोड़ि बेटा लग जा कऽ बाहर रहब से मन नहि मानि रहल अछि। अपनो खेत-पथार अछिए, तखन किए ने गाममे रहि

जहिना पूर्वज सभ जीवन गुदस केलैन तहिना अपनो जीवन गुदस करैत अन्तिम साँस ली।”

गोपीकान्त बाबूक विचार सुनि रामलखन बाबूक मनमे उठलैन जे अपनो तँ गाम छोड़ि बाहरेमे नोकरीक जीवन बितौलैन मुदा तेकरा झाँपिकऽ गोपीकान्त किए बाजि रहल छैथ? मुदा लगले मनमे फेर उपकलैन जे अनेरे घावपर नोन छिटब नीक नहि। बजला-

“बढ़ियाँ विचार छह।”

तइ बीचमे सतभामा चाह नेने पहुँच गेली। दुनू गोरेक हाथमे चाहक कप पकड़बैत सतभामा बजली-

“गोपी बाउ, हमरा हाथक चाह थोड़े अहाँकेँ नीक लागत, तखन तँ अप्पन जे मान-मरदाजाक कर्तव्य अछि से पुरेलौं अछि।”

सतभामाक विचारमे व्यंग्य छेलैन। व्यंग्य ई छेलैन जे आजुक एहेन परिवेश बनि गेल अछि, जे वस्तुक गुणनशील गुण वस्तुमे नहि बुझि लोक पाइमे बुझि रहल अछि। जे वस्तु जेतेक महग, से वस्तु तेतेक नीक। अधिक वेतनबलाक वस्तु, कम वेतनबलाक वस्तुसँ नीक बनिते अछि। ओना, रामलखन बाबू विचारक ऐ ताकमे छेलाहे जे गोपीकान्त की बजैए, मुदा ओ किछु ने बजला। गोपीकान्त बाबूकेँ चुप देखि रामलखन बाबू पुछलखिन-

“मनमे की इच्छा छह आ की नइ भऽ रहल छह, से तँ अपने मुँह खोलि ने खोलबह?”

गोपीकान्त बाबू बजला-

“बच्चेसँ अपने किसान परिवारमे जीवन गुदस करैत एलौं अछि, तँए ऐगलो जीवन ओहिना गुदस करी से मनमे अछि। मुदा से भइये ने रहल अछि। नोकरीक ने अन्त भेल, मुदा जीवनक अन्त तँ नहि भेल

अछि, तँए अहीं जकाँ अपनो शेष जीवन जीबी, सएह मनमे इच्छा अछि।”

सइयो प्रश्नक बीच पड़ल रामलखन बाबू सभटा कैं समेट एक्के शब्दमे बजला-

“गोपीकान्त! पिताक समयमे जे छल, माने आइसँ पचीस-तीस बरख पूर्व, ओ आब नहि रहल। तँए आजुक जे समय माने विज्ञानक प्रगति भेने, बनि गेल अछि, तइ अनुकूल जँ अपनाकेँ गढ़ि ली तँ जीवन सफले-सफल भऽ जाएत।”

रामलखन बाबूक विचार सुनि गोपीकान्त बाबूक मन जेना एक्केबेर धधैक उठलैन तहिना सन्तपित मन तपित हुअ लगलैन, बजला-

“भाय, अखन जाइ छी, काल्हि फेर आबि निचेनसँ आगूक विचार-विमर्श करब।”

रामलखन बाबू बजला-

“बड़बढ़ियाँ।”



शब्द संख्या : 2589, तिथि : 11 मई 2022

Notes